सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 189, नई दिल्ली, मंगलवार 16 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ एक ही पासवर्ड है "भरोसा"

03 एसीएस अकादमी सेवक पार्क विद्यार्थी ने अंतर्राष्ट्रीय एबैकस ओलंपियाड 2025....
06 श्राद्ध में कौओं का महत्व - पितरों तक भोजन पहुँचाना
08 हाइड्रोजन इंजन एवं इलेक्ट्रानिक ट्रक निर्माण कार्य प्रगति की टाटा मोटर्स ने मुख्यमंत्री को दी

अगर इस देश में धार्मिक हिंसा भड़काने के लिए कोई जिम्मेदार है, तो वह सुप्रीम कोर्ट और उसके जज हैं! : भाजपा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे

परिवहन विशेष न्यूज

कुछ दिन पहले भाजपा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे ने सुप्रीम कोर्ट में गंभीर आरोप लगाते हुए कहा :-

"अगर इस देश में धार्मिक हिंसा भड़काने के लिए कोई जिम्मेदार है, तो वह सुप्रीम कोर्ट और उसके जज हैं!"

उनके इस बयान से बड़ा विवाद खड़ा हो गया और विपक्षी दलों ने उनकी कड़ी आलोचना की। हालांकि, जाने-माने वैज्ञानिक, लेखक और वक्ता आनंद रंगनाथन ने दुबे का पूरा समर्थन करते हुए एक वीडियो बयान जारी किया।

धाराप्रवाह अंग्रेजी में रंगनाथन ने सुप्रीम कोर्ट से 9 शक्तिशाली सवाल पूछे। ये सवाल बहुत महत्वपूर्ण हैं।इसका नीचे एक संक्षिप्त सारांश दिया गया है :-

आनंद रंगनाथन के सुप्रीम कोर्ट से 9 सवाल:

1. 'कश्मीर मुद्दे पर दोहरे मापदंडः' सुप्रीम कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को हटाने के खिलाफ विपक्षी दलों की याचिकाओं पर तुरंत विचार किया। लेकिन जब 1990 के दशक में कश्मीरी हिंदुओं के खिलाफ़ अत्याचारों के बारे में याचिकाएँ दायर की गईं - जैसे जबरन विस्थापन, घरों पर कब्ज़ा, मंदिरों को तोड़ना, हत्याएँ, बलात्कार और सामूहिक पलायन - तो उन्हें कोर्ट ने यह कहते हुए खारिज कर दिया कि, ₹यह बहुत पहले हुआ था।₹

क्या यह दोहरा मापदंड नहीं है ?

क्या इससे हिंदुओं में गुस्सा नहीं पैदा होता?

क्या यह धार्मिक संघर्ष का कारण नहीं बनता ?*

2. 'वक्फ बोर्ड के दुरुपयोग पर चुप्पीः` सुप्रीम कोर्ट अब वक्फ बोर्ड के सुधारों को

लेकर चिंतित है। लेकिन पिछले 30 वर्षों में, वक्फ बोर्ड ने अवैध रूप से संपत्ति जब्त की, करों taxes से परहेज किया और एक समानांतर न्यायिक प्रणाली संचालित की - फिर भी कोर्ट चुप रहा। यदि सुधारों को इस्लाम के लिए खतरा माना जाता है, तो हिंदू भूमि पर मस्जिद और दरगाह बनाना कैसे स्वीकार्य था?

वक्फ बोर्ड ने 2 मिलियन से अधिक हिंदुओं की संपत्ति जब्त की। सुप्रीम कोर्ट चुप रहा। अगर यह धार्मिक पक्षपात नहीं है, तो क्या है ?

3. मंदिरों का धन कहीं और खर्च किया जाता है, हिंदुओं पर प्रतिबंधः हिंदू मंदिरों पर सरकार का नियंत्रण है। उनकी आय का उपयोग मदरसों, हज यात्राओं, वक्फ बोर्ड, इफ्तार दावतों और ऋणों के लिए किया जाता है। लेकिन हिंदू धार्मिक गतिविधियों पर प्रतिबंध हैं। हिंदू अधिकारों से संबंधित याचिकाएँ अक्सर खारिज कर दी जाती हैं। अल्पसंख्यकों को हमेशा विशेष प्राथमिकता दी जाती है।

क्या यह उचित है ? या यह हिंदुओं के गुस्से को भड़काने का एक तरीका है ?

4. हिंदुओं के खिलाफ शिक्षा में भेदभावः शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत, हिंदू स्कूलों को अल्पसंख्यकों के लिए 25% सीटें आरक्षित करनी पड़ती है । लेकिन मुस्लिम और ईसाई संस्थानों को इस नियम से छूट दी गई है। हजारों हिंदू स्कूलों को बंद करना पड़ा, और हिंदू बच्चे अब गैर-हिंदू संस्थानों में पढ़ते हैं।

क्या यह धर्म परिवर्तन को बढ़ावा नहीं दे रहा है ?

सुप्रीम कोर्ट इस एकतरफा नियम को क्यों नहीं देखता ?

5. स्वतंत्र भाषण का पाखंडः जब हिंदू बोलते हैं, तो इसे "घृणास्पद भाषण" कहा जाता है। जब दूसरे बोलते हैं, तो इसे ₹अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता₹ कहा जाता है। नुपुर शर्मा ने केवल हदीस से उद्धरण दिया, और न्यायालय ने इसे घृणास्पद भाषण कहा। लेकिन जब स्टालिन और अन्य नेताओं ने सनातन धर्म को "बीमारी" कहा, तो न्यायालय चुप रहा।

क्या यह न्याय है ?

6. हिंदू परंपराओं पर पक्षपातपूर्ण प्रतिबंधः सर्वोच्च न्यायालय ने दशहरा पशु बलि जैसी हिंदू प्रथाओं पर प्रतिबंध लगा दिया। लेकिन ईद के दौरान सामूहिक हलाल पशु वध के बारे में कोई सवाल नहीं उठाया गया। जन्माष्टमी के दौरान, दही हांडी समारोह में ऊंचाई प्रतिबंध का सामना करना पड़ता है। लेकिन मुहर्रम से संबंधित हिंसा के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाती है। दिवाली के पटाखों को पर्यावरण के लिए हानिकारक कहा जाता है, लेकिन क्रिसमस की आतिशबाजी की कोई आलोचना नहीं होती।

क्या यह भेदभाव नहीं है?

7. पूजा स्थल अधिनियम हिंदू पुनर्स्थापना को रोकता हैः 1991 के पूजा स्थल अधिनियम में यह अनिवार्य किया गया है कि 15 अगस्त, 1947 तक के स्थानों के धार्मिक चरित्र को नहीं बदला जाना चाहिए। यह कानून हिंदुओं को उन प्राचीन मंदिरों को पुनः प्राप्त करने से रोकता है जिन्हें मुस्लिम शासकों ने नष्ट कर दिया था या परिवर्तित कर दिया था। राम मंदिर के लिए कई दशकों तक लड़ाई लड़नी पड़ी। कई अन्य मंदिरों पर अतिक्रमण जारी है।

क्या यह ऐतिहासिक अन्याय नहीं है?

8. केवल हिंदू परंपराओं को निशाना बनानाः सबरीमाला मामले में, न्यायालय ने हिंदू भावनाओं को ठेस पहुँचाई। कुछ हिंदू मंदिरों में केवल पुरुषों या केवल महिलाओं के रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है। लेकिन न्यायालय ने केवल हिंदू परंपराओं पर सवाल उठाया। इस्लाम में, महिलाएँ मस्जिदों में प्रवेश नहीं कर सकती हैं या कुछ खास परिस्थितियों में कुरान नहीं पढ़ सकती हैं। ईसाई धर्म में, महिलाएँ पुजारी नहीं बन सकती हैं।

न्यायालय ने उन धर्मों पर सवाल क्यों नहीं उठाया?

9. सीएए विरोधी प्रदर्शनों के दौरान निष्क्रियताः शाहीन बाग़ विरोध और सीएए विरोधी दंगों के दौरान, सुप्रीम कोर्ट ने कोई ठोस कार्रवाई नहीं की। प्रदर्शनकारियों ने सार्वजनिक सड़कें जाम कर दीं, लेकिन न्यायालय ने इसे नहीं रोका।

क्या यह कानून का मज़ाक नहीं है? क्या इससे भी हिंदुओं का गुस्सा नहीं बढ़ा ?

यह शक्तिशाली संदेश सभी तक पहुँचना चाहिए।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत की और से आंख की देखभाल / जांच

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट

@आंख की देखभाल

बारह वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों के लिए नेत्र परीक्षण निःशुल्क है, पूर्व नियुक्ति पर, यदि मोतियाबिंद (मोतियाबिंद) पाया जाता है, तो लेंस (भारत में निर्मित) के साथ सर्जरी निःशुल्क की जाएगी।

बुनियादी आवश्यकताएं :- आधार कार्ड, मोबाइल, आभा कार्ड और यदि उपलब्ध हो, (बीपीएल कार्ड या कम आय प्रमाण पत्र) अन्यथा चलेगा,

अस्पताल सेंटर फॉर साइट (Centre for Sight, Dwarka Sector 9) द्वारका सेक्टर नौ

अपॉइंटमेंट श्रीमती पिंकी कुंडू (7053533169) और जय भगवान अग्रवाल (9268545640) की देखरेख में होगा, काउंटर पर किसी के द्वारा निःशुल्क कूपन की व्यवस्था की जाएगी।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

मानव अधिकार — काम करने का अधिकार

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट,
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (यूडीएचआर, अनुच्छेद 23) और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकार संधि (आईसीईएससीआर, अनुच्छेद 6) के अनुसार हर व्यक्ति को काम करने का अधिकार है – ऐसा काम जो वह स्वतंत्र रूप से चुने, और जिसमें उचित वेतन व सम्मानजनक परिस्थितियाँ मिलें।

भारत में:

1. भारतीय संविधान के नीतिनिर्देशक तत्व (अनुच्छेद 41) में राज्य को नागरिकों को काम का अधिकार, शिक्षा और सहायता देने का निर्देश है।

2. मनरेगा (MGNREGA, 2005) कानून ग्रामीण गरीबों को 100 दिन का रोजगार गारंटी देता है लेकिन यह अधिकार मौलिक अधिकार नहीं है, इसलिए इसे न्यायालय से लागू नहीं कराया जा सकता।

भारत की वास्तविकता और विवादः

1. करोड़ों लोग आज भी बेरोज़गार या अधूरा रोज़गार (underemployment) झेल रहे हैं।

2. 80% से अधिक मजदूर असंगठित क्षेत्र में हैं, जहाँ न तो सुरक्षा है और न ही पेंशन जैसी सुविधाएँ।

3. महिलाएँ, युवा और हाशिए पर खड़े समुदाय सबसे अधिक प्रभावित हैं।

4. कानून और योजनाएँ होने के बावजूद, बेरोज़गारी दर और असमानता बढ़ रही है।

पड़ोसी देशों की स्थितिः

नेपालः संविधान (अनुच्छेद 33) रोजगार का अधिकार देता है, लेकिन नौकरी की कमी से लाखों युवा विदेश पलायन कर रहे हैं।

बांग्लादेशः वस्त्र उद्योग रोजगार देता है, मगर श्रमिक अधिकारों का उल्लंघन आम है।

पाकिस्तानः संविधान (अनुच्छेद 37) आजीविका की बात करता है, लेकिन बेरोज़गारी और बाल मज़दूरी बड़ी समस्या है।

श्रीलंकाः सिद्धांत रूप में काम का अधिकार मान्यता प्राप्त है, लेकिन आर्थिक संकट ने रोज़गार संकट और बढ़ा दिया।

सच्चाईः कानून में वादा है कि हर इंसान को सम्मानजनक और सुरक्षित काम मिलेगा, लेकिन ज़मीनी स्तर पर भारत और उसके पड़ोसी देशों में बेरोज़गारी, असुरक्षित नौकरियाँ और शोषण व्यापक हैं। इस अंतर को पाटने के लिए ज़रूरी है कि काम करने के अधिकार को मौलिक और लागू करने योग्य अधिकार बनाया जाए, साथ ही मज़बूत श्रम सुधार और कौशल विकास योजनाएँ लागू हों।

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com

प्रदूषण का गढ़ - ओ एस पी सी बी कागजी खानापूर्ति तक सिमित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली -सुंदरगढ़ जिला ओडिशा का औद्योगिक हृदय कहा जाता है। यहां लौह अयस्क खनन, स्टील, स्पंज आयरन, सीमेंट, और कोयला उद्योग प्रमुख हैं।

परंतु औद्योगिक विस्तार का यह मॉडल पर्यावरणीय असंतुलन और जन-स्वास्थ्य संकट लेकर आया है।

प्रमुख औद्योगिक इकाइयाँ व प्रदूषण स्रोत

कंपनी	स्थान	गतिविधि	मुख्य प्रदूषण
श्री महावीर फेर्रो एलॉयज लिमिटेड	कलुंगा	पेलेट प्लांट, फेर्रो एलॉयज	धूल, PM2.5, PM10
डालमिया भारत सीमेंट लिमिटेड	राजगंगपुर	सीमेंट उत्पादन	SO_2, डस्ट, CO
ओआईएसएल स्पंज	राजगंगपुर	स्पंज आयरन	PM10, SO_2
जय बालाजी ज्योति स्टील्स	टाईनसर	स्टील उत्पादन	धूल, CO_2
गीता रानी माइंस	टेंसा	लौह अयस्क खनन	धूल, PM10
गणेश मेटलिक्स लिमिटेड	कुआंरमुंडा	स्टील निर्माण उत्सर्जन	गैसें MCL (महानदी कोलफील्ड्स) हेमगिर व आसपास कोयला खनन व परिवहन	कोयला धूल, सड़क प्रदूषण
NTPC सुंदरगढ़	ऐश पॉन्ड	फ्लाई ऐश, जल प्रदूषण	

*प्रदूषण स्तर और AQI

15 सितंबर 2025 को औसत स्तरः

AQIः 76 – 100

पीएम2.5: 23–56 $\mu g/m^3$ (WHO सीमाः 25 $\mu g/m^3$)

पीएम10: 62–159 $\mu g/m^3$ (WHO सीमाः 50 $\mu g/m^3$)

SO_2: 16 $\mu g/m^3$

COः 1280 $\mu g/m^3$

इसका सीधा असर सांस की बीमारियाँ, त्वचा रोग, और दुर्घटनाओं की वृद्धि के रूप में देखा जा रहा है।

घटनाक्रम (Chronology of Events)

(क) प्रारंभिक दौर (2000 से पहले)

1980–90 के दशक में राउरकेला स्टील प्लांट और आसपास की खदानों से प्रदूषण की शिकायतें लगातार दर्ज हुईं।

स्थानीय आदिवासी समुदायों ने पहली बार प्रदूषण और भूमि अधिग्रहण के खिलाफ आवाज उठाई।

(ख) 2000–2010

2005 – राजगंगपुर सीमेंट प्लांट्स के खिलाफ गांववालों ने सड़क जाम किया।

2007–08 – हेमगिर ब्लॉकः कोयला धूल से परेशान ग्रामीणों ने MCL के खिलाफ धरना दिया।

2009 – NTPC ऐश पॉन्ड के रिसाव से खेत और जलस्रोत प्रभावित हुए।

(ग) 2011–2020

2012 – राजगंगपुर में सीमेंट कंपनियों के ट्रकों से धूल प्रदूषण पर आंदोलन।

2015 – CPCB ने सुंदरगढ़ के AQI को 'Unhealthy' श्रेणी में दर्ज किया।

2017 – टेंसा माइंस क्षेत्र में जन विरोध प्रदर्शन।

2019 – कुआंरमुंडा क्षेत्र में स्पंज आयरन प्लांट्स से प्रदूषण पर ग्रामीण शिकायतें।

(घ) 2021–2025

2021 स्कूली बच्चों ने कोयला ट्रक प्रदूषण के खिलाफ मार्च निकाला।

ओडिशा मानवाधिकार आयोग (OHRC) ने हस्तक्षेप कर ट्रकों की आवाजाही सीमित की।

2022 – CPCB और OSPCB ने सुंदरगढ़ की कई औद्योगिक इकाइयों को कारण बताओ नोटिस जारी किया।

2023 –NGT ने लौह व स्टील उद्योगों पर नियम उल्लंघन पाया।

रिपोर्ट में सुंदरगढ़ और क्योंझर को 'High Pollution Zone' घोषित किया गया।

2024 MCL द्वारा 19 मिलियन टन कोयला परिवहन से सड़क धूल और दुर्घटनाओं में वृद्धि।

टपारिया व रतनपुर गांवों में प्रदूषण से फसल क्षति की शिकायतें।

जनवरी 2025 –डालमिया सीमेंट प्लांट में कोयला हॉपर गिरने से 3 मजदूरों की मौत।

अप्रैल 2025 – NTPC ऐश पॉन्ड प्रदूषण के खिलाफ ग्रामीणों का आंदोलन।

जून 2025 – टेंसा क्षेत्र में खनन प्रदूषण से ग्रामीणों ने जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा।

सितंबर 2025 – AQI अस्वास्थ्यकर स्तर तक पहुँच गया; ट्रांसपोर्टरों और ग्रामीणों का विरोध तेज।

*प्रभाव का विश्लेषण :-

(क) स्वास्थ्य

ग्रामीणों में अस्थमा, ब्रॉन्काइटिस, टीबी, त्वचा रोग तेजी से बढ़े।

स्कूल बच्चों पर सबसे गंभीर असर।

ट्रक ड्राइवर और मजदूरों में श्वसन रोग और दुर्घटनाओं में वृद्धि।

(ख) सामाजिक-आर्थिक असर

प्रदूषण से खेती की उत्पादकता घटी।

पानी के स्रोत दूषित हुए।

स्थानीय रोजगार में कमी, स्वास्थ्य खर्च बढ़ा।

(ग) पर्यावरण

जंगलों और नदियों में प्रदूषण से जैव विविधता खतरे में।

फ्लाई ऐश से खेत बंजर।

PM10 और PM2.5 से वायु गुणवत्ता लगातार बिगड़ती रही।

नियामक हस्तक्षेप व खामियाँ :-

CPCB और OSPCB की मॉनिटरिंग सीमित और कागजी।

NGT और OHRC के आदेश लागू करने में उद्योग व प्रशासन ढीले।

कंपनियों की CSR रिपोर्ट और वास्तविक प्रदूषण नियंत्रण में बड़ा अंतर।

*राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा की मांगें :-

1. प्रत्येक औद्योगिक इकाई का स्वतंत्र पर्यावरणीय ऑडिट।

2. AQI मॉनिटरिंग स्टेशनों की संख्या दोगुनी हो।

3. प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों की अनिवार्य स्थापना।

4. प्रभावित ग्रामीणों के लिए स्वास्थ्य बीमा व मुआवजा पैकेज।

5. ट्रांसपोर्ट ड्राइवरों के लिए मेडिकल कैंप और सुरक्षा गियर।

6. नियम तोड़ने वाली कंपनियों पर जुर्माना व लाइसेंस निलंबन।

निष्कर्ष-सुंदरगढ़ जिला औद्योगिक विकास के साथ-साथ प्रदूषण की त्रासदी का केंद्र बन गया है।

यदि प्रशासन, उद्योग और समुदाय मिलकर ठोस कार्रवाई नहीं करते, तो यह संकट जनस्वास्थ्य और पर्यावरणीय आपदा में बदल सकता है।

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) इस मुद्दे को लेकर न केवल आवाज उठा रहा है, बल्कि समाधान की दिशा में भी प्रतिबद्ध है।

- डॉ राजकुमार यादव (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

दिल्ली परिवहन निगम द्वारा भेजे गए 101 चालकों का ओखला डिपो की स्विच मोबिलिटी कंपनी द्वारा शोषण

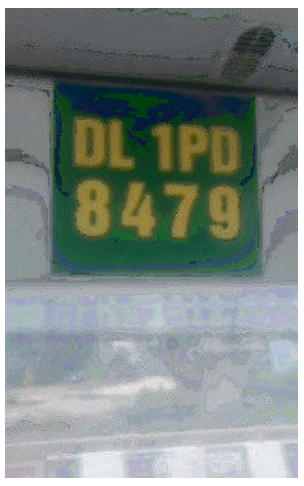

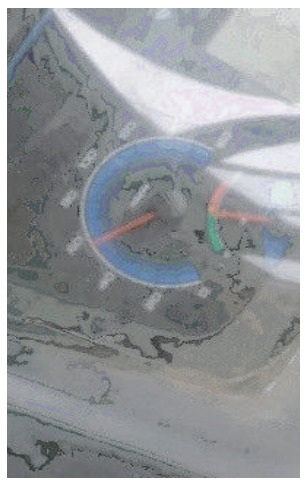

परिवहन विशेष न्यूज

1. दिल्ली परिवहन निगम द्वारा भेजे गए 101 चालकों को ओखला डिपो के स्विच मोबिलिटी कंपनी द्वारा जबरदस्ती ओके ड्यूटी करने का दबाव बनाया गया

2. कर्मचारी की ड्यूटी के दौरान स्विच कंपनी के मैनेजर की वीडियो बनाने पर कार्यवाही करने की चेतावनी

3. स्विच मोबिलिटी ओखला डिपो की लगभग सभी गाड़ियों की स्पीड 70 से ऊपर पहुंच रही है जो कि दिल्ली सरकार द्वारा दी गई गाइडलाइंस के खिलाफ है

4. ड्यूटी के दौरान सुबह समय से पहुंचने पर लगभग 1 से 2 घंटे के पश्चात उन्हें बस पर भेजा जाता है और ओके ड्यूटी करने का दावा बनाया जाता है जिस कारण रोड पर हादसे हो जाते हैं

5. सभी कर्मचारी सरकार के अनुसार 8:30 घंटे ड्यूटी देने को तैयार परंतु स्विच मोबिलिटी के मालिक उनसे 9 से 10 घंटे कार्य करा रहे हैं, जिसका उनको कोई भी अतिरिक्त मेहनताना नहीं दिया जाता जो सरासर कर्मचारियों पर शोषण कर रहा है

6. सबूत के रूप में आपको वीडियो संलग्न कर रहा हूं।

"17 सितम्बर को राष्ट्रीय चालक दिवस घोषित करने की माँग – RCSS ड्राइवर सेवा एसोसिएशन मध्यप्रदेश"

"प्रदेश अध्यक्ष रामकुमार मालिक ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखा, पदाधिकारियों ने भी दिया समर्थन"

परिवहन विशेष न्यूज

विदिशा। RCSS ड्राइवर सेवा एसोसिएशन मध्यप्रदेश ने राज्य सरकार से 17 सितम्बर को राष्ट्रीय चालक दिवस (National Driver's Day) घोषित करने की माँग की है। इस संबंध में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष श्री रामकुमार मालिक ने मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल यादव जी को एक विस्तृत पत्र भेजा है।

प्रदेश अध्यक्ष रामकुमार मालिक ने अपने पत्र में कहा है कि चालक समाज देश की अर्थव्यवस्था, परिवहन व्यवस्था और सामाजिक संरचना में रीढ़ की हड्डी का कार्य करता है। उनके अथक परिश्रम और योगदान के बावजूद अब तक उन्हें वह सम्मान नहीं मिल पाया है, जिसके वे हकदार हैं।

ज्ञात हो कि वर्ष 2014 से 17 सितम्बर को चालक दिवस मनाने की परंपरा शुरू हुई थी। उस समय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस पहल को समर्थन

दिया था। इसके बाद वर्ष 2017 में ग्रामीण विकास मंत्रालय के तत्कालीन राज्य मंत्री श्री रामकृपाल यादव जी ने भी लिखित संदेश देकर इस दिवस का अनुमोदन किया था।

RCSS ड्राइवर सेवा एसोसिएशन मध्यप्रदेश ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया है कि इस दिवस को औपचारिक मान्यता दी जाए और इसे राज्य का वार्षिक सरकारी कार्यक्रम घोषित किया जाए। प्रदेश अध्यक्ष रामकुमार मालिक ने यह भी बताया कि इस वर्ष 17 सितम्बर को विदिशा में भव्य स्तर पर राष्ट्रीय चालक दिवस मनाया जाएगा। यदि सरकार इसे पूरे प्रदेश में मनाने की घोषणा करती है, तो हजारों चालकों को सम्मान और प्रेरणा का अवसर मिलेगा।

अंत में संगठन के मुख्य पदाधिकारियों—लालजी लोधी, संतकुमार बंजारा, रामसिंह बंजारा, रघुवंश प्रसाद विश्वकर्मा, नेपाल राठौर, जुगराज सिंह ठाकुर, तोमर साहब आदि ने भी इस माँग का समर्थन किया और कहा कि यह कदम चालक समाज को सामाजिक-आर्थिक न्याय दिलाने की दिशा में ऐतिहासिक साबित होगा।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

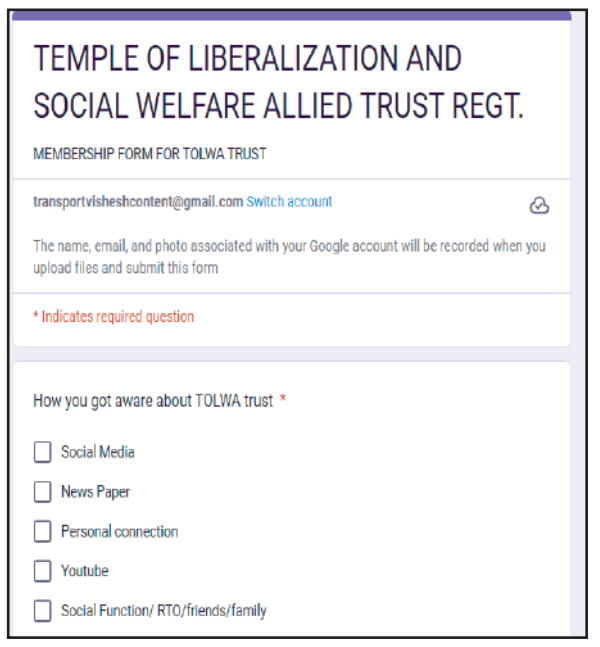

माँ पार्वती और माँ गंगा के बीच विवाद :

देवाधिदेव महादेव को जगतपिता भी कहा जाता है, क्योंकि उनका विवाह इस संसार की शक्ति, मां पार्वती से हुआ था। शिव और शक्ति के संयोजन से ही हमारी यह प्रकृति चल रही है। वे दोनों, एक दूसरे के अर्धांग हैं और एक दूसरे के बिना अपूर्ण भी हैं। जहां, एक तरफ भगवान शिव, अनादि के सृजनकर्ता हैं, वहीं, माता पार्वती, प्रकृति का मूल स्वरूप हैं।

माता पार्वती, राजा हिमावन की पुत्री हैं, जिसके अनुसार, उन्हें, शैलपुत्री भी कहा जाता है। सनातन धर्म के अनुसार, देवी गंगा का अवतरण भी हिमालय से हुआ था, जिसके अनुसार, वे, माता पार्वती की बहन लगती हैं। एक कथा के अनुसार, एक बार, इन दोनों बहनों में शिव जी को लेकर विवाद हो गया, जो संभाले नहीं संभल रहा था। आइए जानतें हैं माता पार्वती और गंगा जी के विवाद की रोचक कथा के बारे में...

एक बार, शिव जी, अपने परम निवास, कैलाश पर्वत पर ध्यानस्थ बैठे थे, जहां उनके

साथ में ही माता पार्वती भी ध्यान में मग्न थीं। शिव और शक्ति का यह सुदंर स्वरूप, एक साथ बहुत ही मनमोहक लग रहा था। ध्यानमग्न, माता पार्वती और अपने प्रभु शिव जी की शोभा को उनके परम भक्त नंदी जी निहार रहे थे। दोनों का यह सुंदर स्वरूप देख, नंदी जी के नेत्रों से खुशी के आंसू बहने लगे। अपने भक्त की आंखों से बहते अश्रुओं का भान जैसे ही महादेव को हुआ, उन्होंने अपने नेत्र खोले। महादेव के समक्ष, साक्षात थीं गंगा जी।

महादेव ने जैसे ही भक्त की चिंता में नेत्र खोले, उन्होंने देखा, सामने गंगा जी हाथ जोड़े खड़ी थीं। गंगा जी को देख, महादेव हैरान होते हुए बोले, "देवी गंगे, आप?!" तो उत्तर में मां गंगा बोलीं, "हे आदिपुरुष! आपके इस रूप को देखकर, मैं आप पर मोहित हो गई हूं। कृपा कर, मुझे पत्नी रूप में स्वीकार करें।"

मां पार्वती का क्रोध :

जैसे ही मां गंगा के स्वर, माता पार्वती के कानों में पड़े, वे हैरान हो गईं। मां गंगा की यह बात सुनकर उनके नेत्र लाल हो गए और क्रोधवश, वे बोल पड़ीं, "देवी गंगा, सीमा ना लांघिए! मत भूलिए महादेव हमारे पति हैं!" यह सुनकर ठिठोली करते हुए मां गंगा बोलीं, "अरे बहन, क्या फर्क पड़ता है? वैसे भी भले ही तुम महादेव की पत्नी हो फिर भी देवाधिदेव महादेव, अपने शीश पर तो मुझे ही धारण करते हैं। जहां महादेव के साथ तुम नहीं जा सकतीं, मैं तो वहां भी पहुंच ही जाती हूं!"

गंगा की यह बात सुनते ही माता पार्वती के क्रोध का ठिकाना ना रहा, उनका क्रोध से मुख भयंकर हो गया।

मां पार्वती का गंगा को श्राप :

मां गंगा के वचन सुनकर, मां पार्वती, उन्हें श्राप देते हुए बोलीं, "गंगे! तुमने मेरी बहन होने की सीमा लांघ दी है। मैं तुम्हे श्राप देती हूं कि तुम में मृत देह बहेंगी! जग जन के पाप धोते-धोते, तुम मैली हो जाओगी! तुम्हारा यह अहम टूटेगा और तुम्हारा रंग भी काला पड़ जाएगा!"

गंगा की याचना :

मां गंगा, यह सुनते ही महादेव और मां पार्वती के चरणों में गिर गईं। वे, अपनी भूल का पश्चाताप कर, मां पार्वती और महादेव से क्षमा याचना करने लगीं। तब महादेव ने उनसे कहा कि "हे गंगे! यह श्राप तो अब फलित होकर रहेगा परन्तु आपके पश्चाताप से प्रसन्न होकर हम आपको इस श्राप से मुक्ति देते हैं।

हे गंगे! आप जन मानस के पापों से दूषित होंगी परन्तु संत जन के स्नान से आपकी शुद्धि, आपको वापस प्राप्त होगी।" इस प्रकार, भगवान शिव ने मां गंगा को प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। इसके बाद से ही गंगा में स्नान से पाप धुलने लगे। तब से ही लोग, गंगा में स्नान करने के लिए दूर-दूर से आते हैं और भूल-चूक में हुए पापों से मुक्ति पाते हैं। और जब जब कुंभ होता है तब तब सभी संत जनों के पवित्र स्नान से मां गंगे पूर्णतः शुद्ध भी हो जाती हैं।

एफिल टावर का गुणगान करने वालो ने शायद इस मंदिर को नही देखा।

245 फीट ऊंचा महान मुरूडेश्वर मंदिर का जिक्र रामायण काल से है, इसकी प्राचीनता का कोई अनुमान नही की यह वास्तव में कितने वर्ष प्राचीन है, शायद हजारो वर्ष या इससे भी प्राचीन...

यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है... मुरुदेश्वर (दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में उत्तर कन्नड जिले के भटकल तहसील स्थित एक कस्बा)। 'मुरुदेश्वर' भगवान शिव का एक नाम है। यहाँ भगवान शंकर की विश्व की दूसरी सबसे ऊँची मूर्ति स्थित है। यह कस्बा अरब सागर के तट पर स्थित है और मंगलुरु से १६५ किलोमीटर दूर अरब सागर के किनारे बहुत ही सुन्दर एवं शांत स्थान पर बना हुआ है। मुरुदेश्वर सागरतट, कर्णाटक के सब से सुन्दर तटों में से एक है। पर्यटकों के लिए यहाँ आना दोगुना लाभप्रद रहता है, जहां एक ओर इस धार्मिक स्थल के दर्शन होते हैं, वहीं दूसरी तरफ प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द भी मिलता है। मुरुदेश्वर मंगलुरु मुम्बई रेलपथ पर स्थित एक रेलवे स्टेशन भी है। मुरुदेश्वर मन्दिर परिसर के पीछे एक दुर्ग है जो विजयनगर साम्राज्य के काल का है।

काशी में मणिकर्णिका घाट पर चिता जब शांत हो जाती है तब मुखाग्नि देने वाला व्यक्ति चिता भस्म पर 94 लिखता है, जाने क्यों ?

यह सभी को नहीं मालूम है। खांटी बनारसी लोग या अगल बगल के लोग ही इस परम्परा को जानते हैं। बाहर से आये शवदाहक जन इस बात को नहीं जानते।

जीवन के शतपथ होते हैं। 100 शुभ कर्मों को करने वाला व्यक्ति मरने के बाद उसी के आधार पर अगला जीवन शुभ या अशुभ प्राप्त करता है। 94 कर्म मनुष्य के अधीन हैं। वह इन्हें करने में समर्थ है पर 6 कर्म का परिणाम ब्रह्मा जी के अधीन होता है। हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश- अपयश ये 6 कर्म विधि के नियंत्रण में होते हैं। अतः आज चिता के साथ ही तुम्हारे 94 कर्म भस्म हो गये। आगे के 6 कर्म अब तुम्हारे लिए नया जीवन सृजित करेंगे।

अतः 100 - 6 = 94 लिखा जाता है।

गीता में भी प्रतिपादित है कि मृत्यु के बाद मन अपने साथ 5 ज्ञानेन्द्रियों को लेकर जाता है। यह संख्या 6 होती है मन और पांच ज्ञान इन्द्रियाँ।

अगला जन्म किस देश में कहाँ और किन लोगों के बीच होगा यह प्रकृति के अतिरिक्त किसी को ज्ञात नहीं होता है। अतः 94 कर्म भस्म हुए 6 साथ जा रहे हैं।

विदा यात्री। तुम्हारे 6 कर्म तुम्हारे साथ हैं।

आपके लिए इन 100 शुभ कर्मों का विस्तृत विवरण दिया जा रहा है जो जीवन को धर्म और सत्कर्म की ओर ले जाते हैं एवं यह सूची आपके जीवन को सत्कर्म करने की प्रेरणा देगी।

100 शुभ कर्मों की गणना

धर्म.और.नैतिकता.के.कर्म.il

1.सत्य बोलना
2.अहिंसा का पालन
3.चोरी न करना
4.लोभ से बचना
5.क्रोध पर नियंत्रण
6.क्षमा करना
7.दया भाव रखना
8.दूसरों की सहायता करना
9.दान देना (अन्न, वस्त्र, धन)
10.गुरु की सेवा
11.माता-पिता का सम्मान
12.अतिथि सत्कार
13.धर्मग्रंथों का अध्ययन
14.वेदों और शास्त्रों का पाठ
15.तीर्थ यात्रा करना
16.यज्ञ और हवन करना
17.मंदिर में पूजा-अर्चना
18.पवित्र नदियों में स्नान
19.संयम और ब्रह्मचर्य का पालन
20.नियमित ध्यान और योग

सामाजिक.और.पारिवारिक.कर्म.il

21.परिवार का पालन-पोषण
22.बच्चों को अच्छी शिक्षा देना
23.गरीबों को भोजन देना
24.रोगियों की सेवा
25.अनाथों की सहायता
26.वृद्धों का सम्मान
27.समाज में शांति स्थापना
28.झूठे वाद-विवाद से बचना
29.दूसरों की निंदा न करना
30.सत्य और न्याय का समर्थन
31.परोपकार करना
32.सामाजिक कार्यों में भाग लेना
33.पर्यावरण की रक्षा
34.वृक्षारोपण करना
35.जल संरक्षण
36.पशु-पक्षियों की रक्षा
37.सामाजिक एकता को बढ़ावा देना
38.दूसरों को प्रेरित करना
39.समाज में कमजोर वर्गों का उत्थान
40.धर्म के प्रचार में सहयोग

आध्यात्मिक.और.व्यक्तिगत.कर्म.il

41.नियमित जप करना
42.भगवान का स्मरण
43.प्राणायाम करना
44.आत्मचिंतन
45.मन की शुद्धि
46.इंद्रियों पर नियंत्रण
47.लालच से मुक्ति
48.मोह-माया से दूरी
49.सादा जीवन जीना
50.स्वाध्याय (आत्म-अध्ययन)
51.संतों का सान्निध्य
52.सत्संग में भाग लेना
53.भक्ति में लीन होना
54.कर्मफल भगवान को समर्पित करना
55.तृष्णा का त्याग
56.ईर्ष्या से बचना
57.शांति का प्रसार
58.आत्मविश्वास बनाए रखना
59.दूसरों के प्रति उदारता
60.सकारात्मक सोच रखना

सेवा.और.दान.के.कर्म.il

61.भूखों को भोजन देना
62.नग्न को वस्त्र देना
63.बेघर को आश्रय देना
64.शिक्षा के लिए दान
65.चिकित्सा के लिए सहायता
66.धार्मिक स्थानों का निर्माण
67.गौ सेवा
68.पशुओं को चारा देना
69.जलाशयों की सफाई
70.रास्तों का निर्माण
71.यात्री निवास बनवाना
72.स्कूलों को सहायता
73.पुस्तकालय स्थापना
74.धार्मिक उत्सवों में सहयोग
75.गरीबों के लिए निःशुल्क भोजन
76.वस्त्रदान
77.औषधि दान
78.विद्या दान
79.कन्या दान
80.भूमि दान

नैतिक.और.मानवीय.कर्म.il

81.विश्वासघात न करना
82.वचन का पालन
83.कर्तव्यनिष्ठा
84.समय की प्रतिबद्धता
85.धैर्य रखना
86.दूसरों की भावनाओं का सम्मान
87.सत्य के लिए संघर्ष
88.अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना
89.दुखियों के आँसू पोंछना
90.बच्चों को नैतिक शिक्षा
91.प्रकृति के प्रति कृतज्ञता
92.दूसरों को प्रोत्साहन
93.मन, वचन, कर्म से शुद्धता
94.जीवन में संतुलन बनाए रखना

विधि.के.अधीन.6.कर्म.il

95.हानि
96.लाभ
97.जीवन
98.मरण
99.यश
100.अपयश

94 कर्म मनुष्य के नियंत्रण में

उपरोक्त सूची में 1 से 94 तक के कर्म वे हैं, जो मनुष्य अपने विवेक, इच्छाशक्ति, और प्रयास से कर सकता है। ये कर्म धर्म, सत्य, और नैतिकता पर आधारित हैं, जो जीवन को सार्थक बनाते हैं।

6.कर्म.विधि.के.अधीनः.il

अंतिम 6 कर्म (हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश) मनुष्य के नियंत्रण से बाहर हैं। इन्हें भाग्य, प्रकृति, या ईश्वर की इच्छा के अधीन माना जाता है।

देवी या देवताओं की पूजा में गलती हो जाए तो क्या करें?

सावन में 30 दिन तक शिव पूजा, नवरात्रि में 9 दिन की दुर्गा पूजा, गणेश उत्सव में 10 दिन की गणेश पूजा के साथ ही अन्य व्रत एवं पूजा के दौरान यदि गलती हो जाए तो क्या करना चाहिए? किस तरह गलती का प्रायश्चित करें और व्रत एवं पूजा का पूरा फल पा सकते हैं? इस संबंध में क्या कहता है शास्त्र नियम?

क्षमा मांगे:- पूजा में दीपक बूझ जाए, तेल ढुल जाए, पूजा सामग्री में कोई कमी रह जाए, पूजा में कोई कमी रह जाए या फिर अन्य किसी प्रकार की गलती हो जाए तो घबराएं या डरे नहीं। अपने कुल देव, ईष्ट देव और जिसकी पूजा कर रहे हैं उनसे क्षमा याचना करें और क्षमा मंत्र बोलें। पूजा में क्षमा मांगने का संदेश ये है कि दैनिक जीवन में हमसे जब भी कोई गलती हो जाए तो हमें तुरंत ही क्षमा मांग लेनी चाहिए। क्षमा के इस भाव से अहंकार खत्म होता है और हमारे रिश्तों में प्रेम बना रहता है।

पूजा में क्षमा मांगने के लिए बोला जाता है ये मंत्र-

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम।
पूजां श्चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरं।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्मतु।।

•अर्थातः- हे प्रभु। न मैं आपको बुलाना जानता हूं और न विदा करना। पूजा करना भी नहीं जानता। कृपा करके मुझे क्षमा करें। मुझे न मंत्र याद है और न ही क्रिया। मैं भक्ति करना भी नहीं जानता। यथासंभव पूजा कर रहा हूं, कृपया मेरी भूलों को क्षमा कर इस पूजा को पूर्णता प्रदान करें।

इस परंपरा का आशय यह है कि भगवान हर जगह है, उन्हें न आमंत्रित करना होता है और न विदा करना। यह जरूरी नहीं कि पूजा पूरी तरह से शास्त्रों में बताए गए नियमों के अनुसार ही हो, मंत्र और क्रिया दोनों में चूक हो सकती है। इसके बावजूद चूंकि मैं भक्त हूं और पूजा करना चाहता हूं, मुझसे चूक हो सकती है, लेकिन भगवान मुझे क्षमा करें।

भगवान शिव और भगवान सदाशिव में एक महत्वपूर्ण अंतर है, जाने।

सदाशिव, शिव का सर्वोच्च रूप है, जो निराकार, निर्गुण और शाश्वत है, जबकि भगवान शिव सदाशिव के विभिन्न रूपों में से एक हैं, जिन्हें रुद्र, शंकर, पशुपति आदि नामों से भी जाना जाता है.

विस्तार में:

सदाशिव:

यह शिव का सर्वोच्च और अंतिम रूप है, जो हमेशा विद्यमान है और जिसका कोई आरंभ या अंत नहीं है। इसे शिव का निराकार, निर्गुण और शाश्वत स्वरूप माना जाता है.

भगवान शिव:

भगवान शिव, सदाशिव के विभिन्न रूपों में से एक हैं। उन्हें रुद्र, शंकर, पशुपति आदि नामों से भी जाना जाता है। शिव को सृष्टि के संहारक के रूप में भी जाना जाता है.

एकता:

हालांकि सदाशिव और शिव को अलग-अलग रूप में पूजा जाता है, लेकिन वे एक ही हैं.

सदाशिव का कार्य:

सदाशिव, शिव का सर्वोच्च रूप है, जो सभी ब्रह्मांडों का आधार है। वे सभी जीवों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं.

शिव का कार्य:

भगवान शिव, सृष्टि के संहारक, विनाश और परिवर्तन के देवता हैं। वे बुराई का नाश करते हैं और धर्म की रक्षा करते हैं.

संक्षेप में, सदाशिव शिव का सर्वोच्च और शाश्वत रूप है, जबकि भगवान शिव सदाशिव के विभिन्न रूपों में से एक हैं।

अपने/स्वयं से परिचय का नाम ही ध्यान है। आत्म-परिचय की प्रक्रिया ध्यान है

जिसने ध्यान की शिला पर अपने मंदिर को बनाया है, उसके मंदिर के शिखर आकाश में उठेंगे; बादलों को छुएंगे; चांद-तारों का अमृत उन पर बरसेगा; सूरज की रोशनी में चमकेंगे। केवल उसके जीवन में गरिमा होगी। अस्तित्व बहुत बड़ा है, जीवन का भी विस्तार बहुत बड़ा है। हम कभी इस सराय, कभी उस सराय, कभी इस देह, कभी उस देह, कभी इस योनि, कभी उस योनि में भटक रहें हैं यही अस्तित्व का विस्तार है। हम एक सराय से चुकते हैं, दूसरी सराय में उलझ जाते हैं। अपना घर कब तलाशेंगे? अपनी खोज कब करेंगे? धन खोजा, पद खोजा, प्रतिष्ठा खोजी, अपने को कब खोजेंगे? कब तक औरों की ही खोज में लगे रहेंगे? और जो अपने से अपरिचित है, वह कैसे दूसरे से परिचित हो सकता है? जो अपने से ही परिचित नहीं, उसे परिचय की कला ही नहीं आती। वह तो दूसरों से भी अपरिचित ही रहेगा। उसका सब ज्ञान मिथ्या है, थोथा है। जो अपने से परिचित है, केवल उसने ठीक बुनियाद रखी है ज्ञान की। जिसने जीवन को मंदिर बना लिया, उसके मंदिर में एक दिन परमात्मा की प्रतिष्ठा होती है। अभी हम भीतर व्यर्थ से भरे हैं। हम यदि भीतर मंदिर बनायें, तो परमात्मा अपने से आ जाता है। वह तो कब से प्रतीक्षा ही कर रहा है कि कब हम मंदिर बनायें और वह आये? हम बिना अपनी तैयारी किये ही, उसे पुकार रहें हैं। ठहरायेंगे कहां? अभी हम स्वयं ही सराय में ठहरे हैं, उस मालिकों के मालिक को सराय में तो नहीं ठहरा सकते? और सराय में वह आएगा भी नहीं। उसके योग्य हमें उचित व्यवस्था/स्थान/मंदिर/घर बनाना ही होगा।

वीरान पड़ी है जिंदगी...!

जब सब कुछ था तुम्हारे आस-पास,
तब किसी को भी न डालते थे घास।
यूँ तुम्हें कोई भी आता नहीं था रास,
सभी को समझते थे बहुत बकवास।

यूं तो निकले थे खून-पसीना बहाकर,
तपिश तुमने झेली हैं धूप में नहाकर।
देखा आज वो 'ठेला-किराना दुकान',
पाई सरकारी नौकरी खड़ा हैं मकान।

आज वीरान पड़ी है ख़ुद की जिंदगी,
अहम के टकराव से तार-तार बंदगी।
सब कुछ लुटा दिया होश है खामोश,
देखते हैं खड़े किस-किसको दें दोष।

संजय एम तराणेकर

हिंदी भाषा पर हम गर्व करते हैं, क्या है इसका कारण जाने

अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ए ऐ ओ औ अं अः
क ख ग घ ङ०
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व श ष
स ह क्ष त्र ज्ञ

हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, और कोई भी अक्षर वैसा क्यूँ है उसके पीछे कुछ कारण है, अंग्रेजी भाषा में ये बात देखने में नहीं आती।

क, ख, ग, घ, ङ-

कंठव्य कहे गए हैं, क्योंकि इनके उच्चारण के समय ध्वनि कंठ से निकलती है। एक बार बोल कर देखिये।

च, छ, ज, झ, ञ-

तालव्य कहे गए हैं, क्योंकि इनके उच्चारण के समय जीभ तालू से लगती है। एक बार बोल कर देखिये।

ट, ठ, ड, ढ, ण-

मूर्धन्य कहे गए हैं, क्योंकि इनका उच्चारण जीभ के मूर्धा से लगने पर ही सम्भव है। एक बार बोल कर देखिये।

त, थ, द, ध, न-

दंतीय कहे गए हैं, क्योंकि इनके उच्चारण के समय जीभ दांतों से लगती है। एक बार बोल कर देखिये।

प, फ, ब, भ, म,-

ओष्ठ्य कहे गए हैं, क्योंकि इनका उच्चारण ओठों के मिलने पर ही होता है। एक बार बोल कर देखिये।

हम अपनी भाषा पर गर्व करते हैं, सही है परन्तु क्या है इसका कारण जाने

इतनी वैज्ञानिक भाषा दुनिया की कोई भी नही है।

अंग्रेज़ी के तो अक्षर भी साइलेंट हो जाते है, हिंदी की बिंदी भी बोलती है।

हिंदी सिर्फ़ एक भाषा नही,
हिंदी से हिंदुस्तान है।

अश्वगंधा पाक

अश्वगंधा के बारे में लगभग सभी लोग जानते है और इससे मिलने वाले कुछ एक लाभों के बारे में भी आप लोग परिचित होंगे लेकिन अश्वगंधा के जितने गुण आप जानते है या इसके लाभों की आप जो कल्पना करते है अश्वगंधा के फायदे इससे कहीं अधिक है अश्वगंधा को आयुर्वेद में रसायन की संज्ञा दी गई है यानी एक ऐसा रसायन जो ना केवल शरीर की बहुत सी व्याधियों में कारगर है बल्कि यह शरीर में ओज के साथ पड़ने वाले प्रभावों को रोकने में बहुत ही शक्तिशाली रसायन है अलग अलग रोगों में इसके विभिन्न द्रव्यों के बने हुए योग शरीर को एक अलग ही अनुभव प्रदान करते है।

अश्वगंधा बलय शक्तिवर्धक और शरीर की धातुओं को पुष्टि करने वाला उत्तम रसायन है वात पित प्रधान रोगों प्रमेह मूत्र विकार धातु रोग कमजोरी आदि में अश्वगंधा का प्रयोग श्लेशा से किया जाता रहा है आयुर्वेद के सैकड़ो योगों में इसका प्रयोग प्रधान औषधि या सहायक औषधि में किया जाता है। अश्वगंधा पाक बनाने के बारे में जिसका सेवन बलवर्धक पुष्टिवर्धक होता है दिमागी कार्य करने वाले लोगो और बच्चो के लिए यह बहुत उपयोगी रसायन है। जो लोग श्लेशा थके थके से रहते है आलस्य जिनका पीछा ना छोड़ रहा हो। शरीर में हल्का साधारण दर्द रहता हो उनके लिए अश्वगंधा पाक खास उपयोगी है।

महिलाए जिनका काम करने में मन ना लगता हो स्वभाव बदलता रहता हो गुस्सा चिड़चिड़ा स्वभाव हो उन्हे सुपारी पाक और अश्वगंधा पाक दोनो के सेवन से लाभ होता है। अश्वगंधा पाक धातुओं की पुष्टि करता है वीर्य विकार आदि में खास उपयोगी है।

लेकिन इसे केवल इन्हीं विकारों की जड़ी बूटी या दावा मानना अश्वगंधा के पूरे गुणों को छुपाने जैसा है अश्वगंधा बहुत सारी समस्याओं को दूर करने वाली जड़ी बूटी है इसको सम्पूर्ण जानकारी जनमानस तक पहुंचाने से ही लोग सही तरीके से इसके लाभ ले सकते है।

अश्वगंधा पाक बनाने के लिए आवश्यक घटक द्रव्य.

उत्तम नागौरी अश्वगंधा का पाउडर 250 ग्राम
देशी गाय का दूध 4 लिटर
देशी गाय का घृत 500 ग्राम
मिश्री देशी खांड 1 किलो
सोंठ 100 ग्राम
छोटी पीपल 50 ग्राम
तेजपत्ता, दालचीनी, नागकेशर, काली मिर्च, असली वंशलोचन, इलायची, जायफल, मोचरस, जटामांशी, लौंग, पीपलामुल, गोखरू, तगर, आंवला सुखा, चित्रक छाल, शातावर, कंकोल, खैरसार, जावित्री, सफेद चंदन प्रत्येक 4 ग्राम
कश्मीरी केसर 1 ग्राम

सबसे पहले देशी गाय के दूध को कड़ाही में डालकर अग्नि पर चढ़ाए और दूध आधा रहने पर उसमे नागौरी अश्वगंधा सोंठ पीपल और काली मिर्च का पाउडर और केशर डालकर गाढ़ा मावा तैयार कर ले और फिर गाय के घी में मावे को सुनहरी होने तक भून लें। इतनी प्रक्रिया के पश्चात भुना हुआ मावा एक प्लेट में निकालकर मिश्री या खांड की चाशनी एक तार की बना ले और मावे और अन्य बची हुई जड़ी बूटियों का पाउडर डालकर अच्छी तरह मिक्स करके एक जान कर ले और फिर सूखे हुए से माल को ठंडा होने पर हाथ से रगड़कर छलनी में से निकाल ले और सुरक्षा लें जिससे उत्तम क्वालिटी का दानेदार अश्वगंधा पाक तैयार हो जाएगा।

मात्रा लगभग दस दस ग्राम सुबह शाम गौदुग्ध के साथ प्रयोग करे और छोटे बच्चो के लिए मात्रा आधी कर दे।

अश्वगंधा पाक के लाभ आपकी संक्षेप में ऊपर बता दिए थे फिर भी कुछ समस्याओं में सिंगल या सहायक औषधी रूप में प्रयोग कर सकते है उनका एक लाइन में लाभ और बता देता हू।

वात संबंधी समस्याओं जैसे कमर दर्द, घुटनो के दर्द मांसपेशियों की कमजोरी बार बार नस पर नस चढ़ना आदि में अश्वगंधा पाक का प्रयोग बेहतरीन लाभ प्रदान करता है।

इसके अलावा मानसिक समस्या अवसाद तनाव से पीड़ित लोगो अनिद्रा की समस्या से पीड़ित लोगो या मानसिक श्रम करने वाले लोगो के लिए या जिनकी स्मरण शक्ति कमजोर है उनके लिए अश्वगंधा पाक उत्तम टॉनिक का कार्य करता है।

इसके अलावा जिन लोगो में धातु की कमजोरी हो वाजीकरण के तौर पर यह अच्छा लाभ देता है।

एसीएस अकादमी सेवक पार्क विद्यार्थी ने अंतर्राष्ट्रीय एबैकस ओलंपियाड 2025 के लिए प्राप्त की अर्हता

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट,
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

नई दिल्ली। एसीएस अकादमी, सेवक पार्क छात्र ने 2025 एबैकस ओलंपियाड टूर्नामेंट का हिस्सा बनने के लिए अर्हता प्राप्त कर ली है जिसका आयोजन 1 एबैकस एसोसिएशन प्रीतम पुरा द्वारा किया गया।

मैं चांदनी एसीएस अकादमी सेवक पार्क, एबेकस ओलंपिक एसोसिएशन की चैम्पियनशिप, प्रतियोगिता और टूर्नामेंट के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ!

यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम हमारे विद्यार्थियों को अपनी कड़ी मेहनत और उत्कृष्टता का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करता है, जिससे उन्हें योग्य ट्रॉफी और पदक प्राप्त होते हैं।

एबेकस ओलंपिक एसोसिएशन भारत, अमेरिका और कनाडा में स्थित विश्व की अग्रणी संस्था है।

अबैकस ओलंपियाड एक मौलिक आयोजन है जो भारत के सभी भागों तथा अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, मोरक्को, यू.के., नीदरलैंड, फिलिस्तीन, ईरान, कजाकिस्तान, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका जैसे अन्य देशों के छात्रों के लिए एक मंच रहा है।

एसीएस अकादमी सेवक पार्क छात्र ने इस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और इस प्रतियोगिता को अपनी यात्रा में एक मील का पत्थर बना दिया। यह एक ऐसा दिन था जिसने उनके आत्मविश्वास और आत्म-विश्वास को बढ़ाया।

स्वाति वर्मा द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त निम्न बच्चों ने अबैकस ओलंपियाड में स्थान प्राप्त किया

E-1
अनाया - A+ 6yrs
अहम - A+ 12yrs
विराज- B 10yrs

E-2
भाव्या - A+10yrs
अनायका - A+ 7yrs
आराध्या - B+ 11yrs

R-3
परी - A+ 10yrs
अहान - A 12yrs
आर्यन - B+ 9yrs

'यात्री सेवा दिवस' के अंतर्गत 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत वृक्षारोपण

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में कुल्लू-मनाली एयरपोर्ट पर 'यात्री सेवा दिवस' के अवसर पर विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत किया गया, जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति संवर्धन है।

इस अवसर पर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री श्री अजय टम्टा जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ भारतीय जनता युवा मोर्चा, दिल्ली प्रदेश के उपाध्यक्ष रौशन कुमार जी भी मौजूद रहे।

वृक्षारोपण के दौरान रौशन कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा:

"माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान एक जन-आंदोलन का स्वरूप ले चुका है। यह केवल वृक्षारोपण का कार्यक्रम नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और हरित पर्यावरण देने का संकल्प है। हम सबको इसमें सक्रिय योगदान देना चाहिए।"

श्री अजय टम्टा जी ने भी प्रधानमंत्री मोदी जी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि प्रकृति की रक्षा और संवर्धन के लिए

वक्फ कानून के सम्बन्ध में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर आज नई दिल्ली में पत्रकारों से पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी की बातचीत के मुख्य अंश:

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने आज यहाँ कहा कि वक्फ कानून आस्था के संरक्षण की गारंटी और वक्फ के प्रशासनिक व्यवस्था के ऐतिहासिक सुधार से सम्बंधित है।

वक्फ कानून के सम्बन्ध में सर्वोच्च

न्यायालय के फैसले पर आज नई दिल्ली में पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवाल के जवाब में नकवी ने कहा कि यह संसद की जेपीसी और दोनों सदनों में चर्चा के बाद पारित हुआ। संवैधानिक सुधार पर सांप्रदायिक वार करने वाली लूट की लंपट लाबी लूट पर छूट के लीगल लाइसेंस की बहाली चाहती है, वक्फ़ सुधार वक्त और वक्फ़ दोनों की ज़रूरत है। इस कानून पर चल रहे मंथन से अमृत ज़रूर निकलेगा। नकवी ने कहा कि कुछ लोग जमीन के कानून को आसमानी किताब बता कर लूट की लम्पट छूट का लीगल लाइसेंस चाहते हैं, वक्फ सुधार से इनकी नाकेबंदी हुई है। इस लूट लॉबी ने वक्फ को "टच मी नॉट" बना रखा था। उन्होंने कहा कि वक्फ संशोधन क़ानून, मुल्क का कानून है किसी मज़हब का नहीं। संसद का एक्ट है संसद ने ही करेक्ट किया। यह सुधार धार्मिक आस्था के संरक्षण, प्रशासनिक व्यवस्था के सुधार का है, इस समावेशी सुधार पर सांप्रदायिक प्रहार करने वाले ना मुल्क के हितैषी हैं न किसी मजहब के।

भाजपा ने अपना भ्रष्टाचार छिपाने के लिए किया एमसीडी के शिक्षा निदेशक का तबादला- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने एमसीडी के शिक्षा विभाग के निदेशक का अचानक तबादला करने को लेकर भाजपा पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने अपना भ्रष्टाचार छिपाने के लिए शिक्षा निदेशक का तबादला किया है। भाजपा शासित एमसीडी के शिक्षा विभाग में सीनियरिटी लिस्ट, प्रिंसिपल प्रमोशन लिस्ट और शिक्षकों की ट्रांसफर प्रक्रिया में हो रही लगातार धांधलियों को आम आदमी पार्टी ने हमेशा उठाता है। ''आप'' द्वारा लगातार शिक्षा विभाग के उठाए गए मुद्दों को संज्ञान में लेते हुए भाजपा ने एमसीडी के शिक्षा निदेशक पद से संजय सिंह को हटा दिया गया। अब निगम आयुक्त सीनियरिटी लिस्ट और प्रिंसिपल प्रमोशन लिस्ट में हुई इन धांधलियों की जांच कराए और दोषियों पर कार्रवाई कर जेल भेजे।

एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने कहा कि शिक्षा विभाग के निदेशक का तबादला तुरंत प्रभाव से हो गया। "आप" ने लगातार शिक्षा विभाग और भाजपा की मिलीभगत से हो रहे भ्रष्टाचार को उजागर किया था। हमने 30 जून, 2025 को यह उजागर किया था कि शिक्षा विभाग की वरिष्ठता सूची और स्थानांतरण नीति में गड़बड़ी है। जबकि उस समय महापौर ने कहा था कि इसमें कोई गड़बड़ी नहीं है और पदोन्नति व स्थानांतरण बिल्कुल ठीक हो रहा है।

अंकुश नारंग ने कहा कि हमने मुद्दे उठाया था कि 1995 से 2002 तक की बन रही वरिष्ठता सूची गलत है। दिल्ली सबऑर्डिनेट सर्विस सिलेक्शन बोर्ड (डीएसएसबी) ने 2001 में पहली भर्ती की थी, तो शिक्षा विभाग ने बिना मापदंड लिए मेरिट कैसे बना दी? जब प्रमोशन सूची ली गई तो मार्क खाली छोड़ दिए गए और लिख दिया कि 30 जून, 2025 को सेवानिवृत्ति। इन्होंने अनुसूचित जाति के शिक्षकों को साफ दरकिनार करते हुए वरिष्ठता सूची और प्रमोशन सूची बनाई।

उन्होंने कहा कि जब वरिष्ठता सूची सही नहीं थी, तो प्रमोशन सूची कैसे सही हुई? इन दोनों मुद्दों को "आप" ने प्रेस वार्ता करके लगातार उजागर किया। साथ ही, सबूत दिखाए कि स्थानांतरण नीति में कैसे भाजपा और शिक्षा विभाग पैसे लेकर पर्ची बनाकर अपने हिसाब से काम करते हैं। जब 50 शिक्षकों का स्थानांतरण किया गया, तो उनमें से 25 लोग अपना स्थानांतरण चाहते थे, जबकि 25 लोग तबादला नहीं चाहते थे। फिर भी उन्हें जबरदस्ती स्थानांतरित कर दिया गया। इनमें एक स्टेज चार कैंसर रोगी और एक ऑस्टियो आर्थराइटिस मरीज भी शामिल थे। एक शिक्षक का दो साल पहले स्थानांतरण हो चुका था, फिर भी दोबारा स्थानांतरण किया गया। स्थानांतरण रोकने के लिखित आवेदन के बावजूद उनकी सुनवाई नहीं हुई। इससे साफ दिख रहा था कि भाजपा और शिक्षा विभाग मिलकर भ्रष्टाचार कर रहे हैं।

'शीश महल' पर बर्बादी का हिसाब लेगी सरकार: सीएम गुप्ता

केजरीवाल के बंगले पर लुटाए करोड़ों, अब जनता का पैसा लौटाने की तैयारी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा फ्लैगस्टाफ रोड स्थित बंगले पर बर्बाद किया गया हर एक रुपया, ब्याज सहित दिल्ली के खजाने में वापस लाया जाएगा।

सीएम रेखा गुप्ता रविवार को पांचजन्य द्वारा आयोजित 'आधार इंफ्रा कॉन्फ्लुएंस 2025' कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सिविल लाइंस स्थित 6, फ्लैगस्टाफ रोड पर केजरीवाल का बंगला 'शीश महल' बन गया था — एक ऐसा 'महल' जिसे बनाने में दिल्ली की जनता की गाढ़ी कमाई पानी की तरह बहाई गई।

इस बंगले पर अब तक 33.86 करोड़ रुपये खर्च होने की पुष्टि कैग (CAG) की रिपोर्ट में की गई है। लेकिन भाजपा नेताओं का दावा है कि असली खर्च 75 से 80 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है।

सीएम गुप्ता ने कहा "यह बंगला अब सरकार के लिए एक सफेद हाथी बन चुका है। सोच रहे हैं कि इसका क्या किया जाए। लेकिन एक बात तय है — इसका हिसाब जरूर लिया जाएगा।"

2015 में आप सरकार के गठन के बाद यह बंगला केजरीवाल का आधिकारिक निवास बना। 2024 में इस्तीफे तक यहीं रहे। इस दौरान इसके पुनर्निर्माण, इंटीरियर और घरेलू साज-सज्जा पर जबरदस्त खर्च किया गया, जिसे लेकर विपक्ष लगातार हमलावर रहा। भाजपा ने इसे शुरुआत से ही 'शीश महल' की संज्ञा दी थी और इसे 'आम आदमी' के नाम पर बने विशेष आदमी के ऐश्वर्य' का प्रतीक बताया था।

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
● दशहरे के दूसरे दिन
● दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
● स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड
स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से
गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
● पुराने कपड़े
● पुराने कंबल
● पुराने जूते-चप्पल
● बच्चों के लिए बैग
● किताबें
आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है
स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली
इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

कोकीन के साथ महरौली छतरपुर में दो अफ्रीकी गिरफ्तार

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। 10.09.2025 को, दो अफ्रीकी नागरिक बेंजामिन इज़ुचुक्वु (नाइजीरिया, 43 वर्ष) और कुलिबाली मरियम (कोट डी आइवर, 29 वर्ष) को महरौली के छतरपुर क्षेत्र से 355 ग्राम कोकीन के साथ गिरफ्तार किया गया।

दस्तावेजों की जांच के दौरान उनके वीजा फर्जी पाए गए, जबकि पासपोर्ट पर वैध वीजा की तरह दिखने वाले स्टाम्प थे। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वीजा फर्जी हैं और उन्हें नवाचुक्वु बेंजामिन नामक एक अफ्रीकी नागरिक ने तैयार किया है, जो बुराड़ी–संत नगर क्षेत्र में सक्रिय है।

तकनीकी निगरानी और सर्विलांस के माध्यम से आरोपियों की लोकेशन चिन्हित की गई और बुराड़ी से चार और अफ्रीकी नागरिकों को गिरफ्तार किया गया।पूछताछ में रैकेट के पीछे की कड़ियां उजागर हुईं। फॉरवर्ड व बैकवर्ड लिंकेज की जांच जारी है ताकि फर्जी डॉक्युमेंट्स तैयार करने वालों, ड्रग तस्करों व अन्य लाभार्थियों का पता लगाया जा सके।नवाचुक्वु बेंजामिन वर्ष 2017 में 'डंकी रूट' से भारत आया और यहां वीजा की जालसाजी का रैकेट शुरू किया।

वह पासपोर्ट स्कैन करके डिजिटल रूप से नकली वीजा पेज बनाता और उन्हें पासपोर्ट में चिपका देता। वह प्रति वीजा 2,000–3,000 वसूलता था।इसके अलावा, वह नकली यूरोपीय सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाकर भारतीय नागरिकों से ठगी करता था। 'कस्टम में अटके पार्सल' की झूठी कहानियों के जरिए भारतीयों को फंसाकर पैसे मंगवाता था।

भारतीय जाटव समाज द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन कि मुख्य अतिथि राज्य मंत्री असीम अरुण ने आयोजकों की सराहना की

अधिवेशन की सफलता के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र सिंह को धन्यवाद एवं आभार प्रेषित किया

आगरा,संजय साग़र सिंह। भारतीय जाटव समाज द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन ₹समानता और समृद्धि₹ विषय पर 7 सितंबर को आगरा में भव्य रूप से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में देशभर से समाज के गणमान्य प्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित मुख्य अतिथि समाज कल्याण उत्तर प्रदेश सरकार (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री असीम अरुण (पूर्व आईपीएस अधिकारी) ने अधिवेशन की सफलता के लिए समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र सिंह को धन्यवाद एवं आभार प्रेषित किया।

अपने औपचारिक संदेश में राज्य मंत्री असीम अरुण ने कहाः "आपके स्नेह और मेहनत से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सका। इस आयोजन ने हमें बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के विचारों, सामाजिक समानता और राष्ट्र की समग्र प्रगति के संकल्प को और अधिक दृढ़ करने की प्रेरणा दी है।"

उन्होंने कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी अतिथियों, अन्य राज्यों से आए सहयोगियों एवं कार्यकर्ताओं के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि समाज की एकजुटता ही सशक्त राष्ट्र निर्माण का आधार है।

अधिवेशन के दौरान सामाजिक समरसता, शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण तथा युवाओं की भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। विभिन्न वक्ताओं ने सामाजिक उत्थान के लिए ठोस रणनीति बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

वरिष्ठ नेता उपेंद्र सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, ने भी इस अवसर पर सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए समाज के संगठित प्रयासों से एक बेहतर और समानतापूर्ण भारत के निर्माण की प्रतिबद्धता दोहराई। अधिवेशन का सफल समापन सामूहिक संकल्प और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

अभी तक स्पष्ट नहीं कानपुर के सपा विधायक के हॉस्टल में छात्रा द्वारा आत्महत्या की वजह

सुनील बाजपेई

कानपुर। इस महानगर में युवाओं द्वारा आत्महत्या की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं ,जिसके क्रम में समाजवादी पार्टी के विधायक अमिताभ बाजपेई के काका देव थाना क्षेत्र में बने गर्ल्स हॉस्पिटल में एक छात्रा ने भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना से उसके परिवार में कोहराम मचा हुआ है। जहां तक इस घटना की सही वजह का सवाल है। इस बारे में अभी तक वजह स्पष्ट नहीं हो पाई है। वहीं कुछ अन्य सूत्रों ने घटना के प्रेम प्रसंग से भी जुड़े होने का दावा किया है। पुलिस के मुताबिक मामले की जांच जारी है।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के मुताबिक फर्रुखाबाद के थाना कमालगंज के गांव रजीपुर निवासी अरधेंदु कुमार धर की 18 साल की बेटी पलक धर एक वर्ष पहले काकादेव के रानीगंज स्थित एवी गर्ल्स हॉस्टल आई थी। वह सीएसजेएमयू में रेडियोलॉजिस्ट प्रथम वर्ष की छात्रा थी। इस घटना की जानकारी तब हुई जब उसकी सहेली रूम पार्टनर आराध्या मिश्रा ने अंदर से बंद कमरे को कई बार खटखटाया और नहीं खुलने पर उसकी जानकारी वार्डन को दी ,जिसके बाद घटना की सूचना पुलिस को दी गई।

मौके पर पहुंची पुलिस व फॉरेंसिक टीम ने दरवाजा तोड़ा तो पंखे से दुपट्टे के सहारे पलक का शव लटक रहा था। पूछताछ में पता चला है कि छात्रा को अवसाद और एंजाइटी की समस्या थी। जबकि हॉस्टल से जुड़े कुछ अन्य सूत्रों के मुताबिक मामला प्रेम प्रसंग से भी जुदा हो सकता है। पुलिस के मुताबिक लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज कर घटना की छानबीन की जा रही है।

समाजसेवीयों की सरकार से अपील - उभरते कलाकारों के लिए संरक्षणात्मक नीतियाँ बनाई जाएं, ताकि वे अपने क्षेत्रीय स्तर से राष्ट्रीय मंच तक पहुंच सकें

स्थानीय प्रतिभाओं को महत्वपूर्ण मंच देने का सावन चौहान का सराहनीय प्रयास, समाजसेवीयों ने की प्रशंसा यूपी-80 : ए क्राइम स्टोरी – आगरा की ज़मीन से उठी आवाज़, सिनेमा बना समाज का आईना

लखनऊ, संजय सागर सिंह। ब्रजभूमि की सांस्कृतिक और सामाजिक परतों को सिनेमा के माध्यम से राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाने का एक अनूठा प्रयास फिल्म यूपी-80: ए क्राइम स्टोरी के रूप में सामने आया है। आगरा में इस फिल्म के पोस्टर लॉन्च के बाद वरिष्ठ समाजसेवीयों ने फिल्म निर्माता सावन चौहान की सराहना करते हुए कहा, फ़िल्म निर्माता सावन चौहान के नेतृत्व में बनी यह फिल्म एक सराहनीय प्रयास है - समाज को सिनेमा के माध्यम से न केवल मनोरंजन देना, बल्कि सोच और चेतना भी देना। यूपी-80: ए क्राइम स्टोरी एक फिल्म नहीं, एक आंदोलन है, जो आगरा की ज़मीन से उठकर समाज के हर स्तर को झकझोरने की क्षमता रखती है। सावन चौहान ने ब्रजभूमि और आगरा के स्थानीय कलाकारों को महत्वपूर्ण मंच देकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। स्थानीय प्रतिभाओं को महत्वपूर्ण मंच देने का सावन चौहान का प्रयास सराहनीय हैं, उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाएं कम हैं।

स्थानीय कलाकारों को मिला राष्ट्रीय मंच - वरिष्ठ समाजसेवी ठाकुर संजीव कुमार सिंह एडवोकेट

वरिष्ठ समाजसेवी ठाकुर संजीव कुमार सिंह एडवोकेट (सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इंडिया) ने स्पष्ट किया कि यह सिर्फ एक फिल्म नहीं, समाज की एक ज़मीनी सच्चाई है। यह फिल्म न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि एक सामाजिक दर्पण भी है। उन्होंने कहा, ₹आगरा और उत्तर प्रदेश में अपार प्रतिभा है, जिन्हें उचित मंच और सरकारी संरक्षण की आवश्यकता है। सावन चौहान ने स्थानीय कलाकारों को मंच देकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। फिल्म में जतिन सूर्यवंशी, श्वेता सिंह, सोनाली पांडे, उमाशंकर मिश्रा, दीपक ठाकुर, अंकुश चौहान सहित अनेक स्थानीय कलाकारों ने प्रभावशाली अभिनय किया है। वहीं निर्देशन, छायांकन और संगीत जैसे तकनीकी पक्षों में भी अंकित गोला, सुनील राज, दीपक नायक सहित अनुभवी तकनीशियनों का योगदान रहा है, जिन्होंने इस फिल्म को गुणवत्ता की दृष्टि से समृद्ध बनाया।

सिनेमा को मिले सामाजिक दायित्व का मंच - समाजसेवी अरविन्द पुष्कर एडवोकेट

समाजसेवी अरविन्द पुष्कर एडवोकेट ने अपने वक्तव्य में कहा कि सिनेमा अगर सामाजिक चेतना के साथ जोड़ा जाए, तो वह समाज को नई दिशा दे सकता है। ₹फिल्में केवल कहानी नहीं होतीं, वे समाज की तस्वीर होती हैं, और 'यूपी-80' इस कथन की एक सशक्त मिसाल है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहना यूपी-80: ए क्राइम स्टोरी को ग्लोबल ताज इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में 'बेस्ट फिल्म' और खजुराहो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में 'बेस्ट एक्टर' का पुरस्कार मिल चुका है, जो इस फिल्म की गुणवत्ता और सामाजिक प्रभाव को प्रमाणित करता है।

सरकार बनाए संरक्षणात्मक नीतियाँ - समाजसेवी पंकज जैन

समाजसेवी पंकज जैन ने सरकार से अपील की कि उभरते कलाकारों के लिए संरक्षणात्मक नीतियाँ बनाई जाएं, ताकि वे अपने क्षेत्रीय स्तर से राष्ट्रीय मंच तक पहुंच सकें। आगरा और उत्तर प्रदेश में ऐसे कई कलाकार हैं जिन्होंने टेलीविजन, बॉलीवुड और अन्य फिल्म इंडस्ट्रीज़ में अपनी पहचान बनाई है। उन्हें संस्थागत सहयोग की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि यह फिल्म जल्द ही एक प्रमुख ओटीटी प्लेटफॉर्म पर प्रसारित की जाएगी, जिससे देशभर के दर्शक इस सशक्त कथानक से रूबरू हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह फिल्म प्रत्येक जागरूक नागरिक को देखनी चाहिए, जो कला के माध्यम से सच्चाई को समझना चाहता है।

अर्जुन छाल हृदय रोग,कोलेस्ट्रोल एवं हाई ब्लड प्रेशर रामबाण अन्य रोगो मे भी क्या काम करती जाने

अर्जुन छाल के औषधीय गुण.

अर्जुन की तासीर ठंडी होती है अर्थात यह शीत वीर्य होती है। गुणों में लघू होती है। यह हृदय विकारों में फायदेमंद एवं पित एवं कफ का शमन करने वाली होती है। रक्तविकार एवं प्रमेह में भी इसके औषधीय गुण लाभदायी होते है।

अर्जुन को सिर्फ हृदय के विकारों में ही लाभदायक नहीं माना जाता बल्कि अलग – अलग औषध योगों के साथ इसका उपयोग करने से बहुत से विकारों में फायदेमंद साबित होता है।

जाने विभिन्न रोगों में अर्जुन छाल के फायदे*

निम्न रोगों में अर्जुन का उपयोग किया जाता है।यहाँ हमने विभिन्न रोगों में अर्जुन छाल के उपयोग बताएं है।

पितशमन एवं रक्तपित में अर्जुन छाल का उपयोग.

अर्जुन कफ एवं पितशामक होता है एवं अम्लपित में भी लाभप्रद होता है।

रक्तपित की समस्या में अर्जुन की छाल का काढ़ा बना कर सुबह के कप पिने से रक्तपित की समस्या में फायदा मिलता है।

अम्लपित एवं पितशमन के लिए 1 ग्राम अर्जुन छाल चूर्ण में समान मात्रा में लाल चन्दन का चूर्ण मिलाकर इसमें शहद मिला लें।इस मिश्रण को चावल के मांड के साथ प्रयोग करने से जल्द ही बढे हुए पित का शमन हो जाता है एवं अम्लपित की समस्या भी जाती रहती है।

हृदय रोगों में अर्जुन छाल का प्रयोग.

हृदय विकारों में 30 ग्राम अर्जुन चूर्ण ले एवं इसके साथ 3 ग्राम जहरमोहरा और 30 ग्राम मिश्री मिलाकर इमामदस्ते में अच्छे से खरल करले।

इस तैयार चूर्ण में से 1 ग्राम सुबह एवं शाम गुनगुने दूध के साथ सेवन करें।

जल्द ही हृदय से सम्बंधित सभी विकार दूर हो जायेंगे ।

नित्य एक ग्राम की मात्रा में अर्जुन चूर्ण का इस्तेमाल दूध के साथ सुबह एवं शाम करने से हृदय विकार ठीक होने लगते है।

अगर हृदय की धड़कन तेज हो और साथ में पीड़ा या घबराहट हो तो.....

अर्जुन छाल की खीर बना कर सेवन करें। इसकी खीर बनाने के लिए एक भाग अर्जुन छाल (10 ग्राम) , 8 गुना दूध (80 ग्राम) एवं 32 गुना जल (320 ग्राम) लेकर इनको मिलाकर उबालें।जब सारा पानी उड़ जाये एवं सिर्फ दूध बचे तब इसे छान कर रोगी को दिन में दो बार सेवन करवाएं ।

ये सभी विकार जल्द ही दूर हो जायेंगे।

हृदय की कमजोरी में अर्जुन छाल के चूर्ण के साथ गाय का घी एवं मिश्री मिलाकर सेवन करवाएं। हृदय को बल मिलेगा।

अन्य रोगों में अर्जुन छाल के स्वास्थ्य उपयोग या फायदे.

थूक के साथ अगर खून आता हो तो अर्जुन चूर्ण को अडूसे के पतों के रस में सात बार अच्छे से घोट कर, इस चूर्ण के साथ शहद मिलाकर सेवन करने से लाभ मिलता है।

दस्त के साथ खून आता हो तो छाल को बकरी के दूध में पीसकर थोडा शहद मिलाकर सेवन करने से लाभ मिलता है।

रक्त अशुद्धि के कारण त्वचा विकारों में मंजिष्ठ के चूर्ण के साथ अर्जुन का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से रक्त की अशुद्धि मिटती है एवं त्वचा कांतिमय बनती है।

पेट के विकारों में अर्जुन छाल के चूर्ण के साथ बंगेरनमूल की छाल का चूर्ण मिलाकर सेवन करवाने से उदर विकार में लाभ मिलता है।

श्वेत प्रदर एवं रक्त प्रदर की समस्याओं में नित्य 2 ग्राम चूर्ण का गरम पानी के साथ सेवन करने से लाभ मिलता है।

मुंह में छाले हो गए हो तो 5 ग्राम चूर्ण को तिल के तेल में मिलाकर मुख में रखने से मुंह के छालों में आराम मिलता है।

अर्जुन के पतों का रस निकाल कर कान में डालने से कर्णशूल (कान दर्द) में आराम मिलता है।

अर्जुन की छाल कोलेस्ट्रोल में उपयोगी.....

बढे हुए कोलेस्ट्रोल एवं हाई ब्लड प्रेशर में अर्जुन के पेड़ की छाल बेहद फायदेमंद होती है। बढे हुए कोलेस्ट्रोल को कम करने के लिए नियमित इसकी छाल का काढ़ा बनाकर प्रयोग में लाने से जल्द ही कोलेस्ट्रोल कम होने लगता है। काढ़ा बनाने के लिए 5 ग्राम अर्जुन छाल को 1 गिलास पानी में उबालें एवं जब आधा पानी बचे तब इसे आंच से उतर कर ठंडा करले। इस काढ़े में मिश्री मिलाकर सेवन किया जा सकता है।

अर्जुन की चाय एवं काढ़ा कैसे बनाये ?.....

इसकी छाल की चाय बनाने के लिए अधिक जुगत की आवश्यकता नहीं होती है। चाय बनाने के लिए घर में बनती हुई चाय में 5 ग्राम की मात्रा में इसका चूर्ण डाल दें और अच्छे से उबाल लें ।बस अर्जुन छाल की चाय तैयार है। इस चाय के सेवन से भी हृदय की रूकावट खुलने लगती है।

फ्लैट के पूरे पैसे चुकाने के बाद भी न रजिस्ट्री, न कब्ज़ा — बिल्डर पर धोखाधड़ी का मुकदमा

संवाददाता

ग्रेटर नोएडा, सितम्बर : रियल एस्टेट घोटाले का नया मामला सामने आया है। मेरठ निवासी मनोज कुमार गुप्ता और उनकी पत्नी रूपशिखा गुप्ता ने ग्रेटर नोएडा के सेक्टर जेटा-1 स्थित ए.बी.जे. हाईट्स सोसाइटी में फ्लैट खरीदा था। पीड़ित का आरोप है कि पूरी कीमत चुकाने के बावजूद न तो उन्हें रजिस्ट्री कराई गई और न ही फ्लैट का कब्ज़ा दिया गया।

34 लाख से अधिक का भुगतान

दस्तावेज़ों के अनुसार 2010 से 2015 के बीच गुप्ता दंपती ने फ्लैट संख्या D-101 के लिए लगभग 34.69 लाख रुपये जमा किए। बावजूद इसके बिल्डर ए.बी.जे. डेवलपर्स (इंडिया) प्रा. लि. और निदेशक विनय जैन ने वादा पूरा नहीं किया।

कब्ज़ा किसी और को!

2019 में यह खुलासा हुआ कि उक्त फ्लैट पर किसी विश्वजीत सिंह ने कब्ज़ा कर लिया है। जब खरीदार बिल्डर से मिलने पहुंचे तो दफ़्तर बंद मिला और निदेशक से संपर्क भी नहीं हो सका।

सूरजपुर थाने में एफआईआर

इस धोखाधड़ी के खिलाफ पीड़ित ने थाना सूरजपुर (गौतमबुद्ध नगर) में शिकायत दर्ज कराई। 16 अक्टूबर 2019 को एफआईआर संख्या 1584/2019 आईपीसी की धारा 420 और 406 में दर्ज हुई, जिसमें निदेशक विनय जैन को नामजद किया गया है।

जाँच में ढिलाई का आरोप

पीड़ित का कहना है कि विवेचना में पुलिस ने निष्पक्षता नहीं बरती और कई बार दबाव में अधिकारी बदले गए। अब तक बिल्डर के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है। मनोज गुप्ता का कहना है— "जीवनभर की कमाई इस फ्लैट में लगा दी। न कब्ज़ा मिला, न रजिस्ट्री। उल्टा फ्लैट किसी और को दे दिया गया। न्याय की उम्मीद में आज तक भटक रहा हूँ।"

अवैध प्रवासन @ ग्लोबल एजेंडा : घुसपैठियों के विरुद्ध भारत अमेरिका से लेकर यूरोप तक एलान-ए-जंग

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर 21वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय राजनीति, सामाजिक स्थिरता और जनसांख्यिकी (डेमोग्राफी) पर सबसे बड़ा असर डालने वाला मुद्दा अवैध प्रवासन बन चुका है। एक ओर जहां मानवाधिकार संगठनों का मानना है कि हर व्यक्ति को बेहतर जीवन जीने का अवसर मिलना चाहिए, वहीं दूसरी ओर विभिन्न देशों की सरकारें और नागरिक यह तर्क दे रहे हैं कि अनियंत्रित प्रवास उनके संसाधनों, रोजगार, संस्कृति और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन गया है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यहमानता हूं कि यही कारण है कि अमेरिका से लेकर यूरोप और भारत तक,हर जगह यह बहस तेज है कि अवैधप्रवासियों को रोका जाए, उन्हें निर्वासित किया जाए या फिर किसी सीमा तक उन्हें बसने की अनुमति दी जाए।यूरोप और अमेरिका दोनों में एक धारणा तेजी से फैल रही है- "ग्रेट रिप्लेसमेंट थ्योरी।"इस थ्योरी के मुताबिक, बड़ी संख्या में आने वाले प्रवासी धीरे-धीरे वहां की मूल आबादी को संख्या, संस्कृति और राजनीतिक शक्ति में पीछे छोड़ देंगे।फ्रांस में यह चिंता खास है कि मुस्लिम प्रवासी भविष्य में ईसाई आबादी से अधिक हो सकते हैं।जर्मनी और स्वीडन में विदेशी मूल के बच्चे स्थानीय बच्चों से अधिक जन्म ले रहे हैं।ब्रिटेन में लंदन और बर्मिंघम जैसे शहरों में मुस्लिम और एशियाई आबादी का प्रतिशत लगातार बढ़ रहा है।यह बदलाव न केवल सांस्कृतिक टकराव बल्कि राजनीतिक अस्थिरता भी ला सकता है। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि दिनांक 13 सितंबर 2025 को,लंदन 1 लाख से अधिक लोगों के विशाल प्रदर्शन का गवाह बना। इसे ब्रिटेन के इतिहास की सबसे बड़ी दक्षिणपंथी रैली कहा जा रहा हैप्रदर्शनकारियों का तर्क है कि ब्रिटेन की पारंपरिक संस्कृति और रोजगार के अवसर प्रवासियों के कारण खतरे में हैं। इस आंदोलन को और भी बड़ा तब मिला जब टेस्ला और एक्स (पूर्व ट्विटर) के मालिक एलन मस्क ने ऑनलाइन आकर इस रैली को समर्थन दिया और दक्षिणपंथी नेता टॉमी रॉबिन्सन का पक्ष लिया।मस्क का यह कदम इंग्लैंड ही नहीं बल्कि पूरे यूरोप में इस मुद्दे को वैश्विक स्तरकी वैधता देता है। इससे साफ हो गया है कि अवैध प्रवासन अब केवल स्थानीय समस्या नहीं, बल्कि टेक्नोलॉजी, व्यापार और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति से जुड़ चुका है। भारतीय पीएम ने भी 14 सितंबर 2025 को असम में एक सभा मेँ संबोधन के दौरान कहा,सरकार, घुसपैठियों को देश के साधनों- संसाधनों पर कब्जा नहीं करने देगी।भारत के किसानों, नौजवानों ,हमारे आदिवासियों का हक हम किसी को नहीं छीनने देंगे। ये घुसपैठिए हमारी माताओं- बहनों- बेटियों के साथअत्याचार करते हैं, ये नहीं होने दिया जाएगा, घुसपैठियों के माध्यम से बॉर्डर के इलाकों में डेमोग्राफी बदलने की साजिशें चल रही हैं, ये राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा है, इसलिए,अब देश में एक डेमोग्राफी मिशन शुरु किया जा रहा है।सरकार का लक्ष्य है,घुसपैठियों से देश को बचाएंगे घुसपैठियों से देश को मुक्ति दिलाएंगे।और मैं उन राजनेताओं को भी कहना चाहता हूं, आप जो चुनौती लेकर के मैदान में आए तो,मैं सीना तान करके उसचुनौती को स्वीकार करता हूं।और लिख लो मैं देखता हूं, घुसपैठियों को बचाने में तुम कितनी ताकत लगाते हो और घुसपैठियों को हटाने में हम कैसे अपना जीवन लगा देते हैं, हो जाए मुकाबला। घुसपैठियों को बचाने के लिए निकले हुए लोगों को भुगतना पड़ेगा। मेरे शब्द सुन के रखो, यह देश उनको माफ नहीं करेगा चूँकि घुसपैठियों के विरुद्ध भारत अमेरिका से लेकर यूरोप तक एलान-ए- जंग अवैध प्रवासनः अमेरिका से यूरोप और भारत तक एक अंतरराष्ट्रीय संकट इसीलिएआज हम मीडिया मेँ उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, घुसपैठिया @ ग्लोबल एजेंडा।

साथियों बात अगर हम अवैध प्रवासन को निर्वासन करने की शुरुआत डोनाल्ड ट्रंप द्वारा करने की करें तो, अमेरिका में राष्ट्रपति ट्रंप और मौजूदा रिपब्लिकन नेताओं ने अवैध प्रवासियों के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया "मेक अमेरिका ग्रेट अगेन (एमएजीए) न केवल एक राजनीतिक नारा है,बल्कि एक ऐसी विचारधारा बन गई है जिसमें यह मान्यता है कि अमेरिकी पहचान, संस्कृति और अर्थव्यवस्था पर अवैध प्रवासी बोझ डाल रहे हैं।लाखोंमैक्सिकन और लैटिन अमेरिकी प्रवासी अमेरिका में बिना दस्तावेज़ रह रहे हैं।ट्रंप की दीवार बनाने की नीति और निर्वासन (डिपोर्टेशन) की रणनीति आज यूरोप के कई देशों के लिए भी प्रेरणा बन चुकी है।ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और स्पेन जैसे देश अब अमेरिकी मॉडल की तरह कड़े बॉर्डर कंट्रोल औरपहचान-आधारित" नीतियां लागू करने पर विचार कर रहे हैं।

साथियों बात अगर हम भारतीय प्रवासी और "एशियाई क्लबिंग" की समस्या की करें तो, यूरोप और ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय प्रवासी अक्सर शिकायत करते हैं कि उन्हें "एशियाई क्लबिंग" में डाल दिया जाता है।यानेंभारतीयों को पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए प्रवासियों के साथ एक ही श्रेणी में रख दिया जाता है।भारतीयों का कहना है कि वे वहां शिक्षा, मेहनत और प्रोफेशनल स्किल्स के दम पर बसे हैं, जबकि अधिकतर अवैध प्रवासी दूसरे देशों से हैं। इस क्लबिंग के कारण भारतीयों की अच्छी छवि धूमिल होती है और उन्हें भी स्थानीय विरोध का शिकार होना पड़ता है।जबकि संभावतः हकीकत यह है कि, पूरे यूरोप में सबसे अधिक अवैध प्रवासी अफ्रीकी संघ (अफ्रीकन यूनियन) और मुस्लिम देशों से आ रहे हैं। नाइजीरिया, सोमालिया, लीबिया, सीरिया, अफगानिस्तान और पाकिस्तान से आने वाले प्रवासियों ने यूरोपीय देशों की नीतियों को चुनौती दी है।इसका सीधा असर यह है कि यूरोप की संसाधन खपत (रिसोर्सस कोन्सुम्पशन) बढ़ रही है।स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, पब्लिक

हाउसिंग और रोजगार पर दबाव बढ़ रहा है।साथ ही अपराध और आतंकवाद को लेकर भी चिंता बढ़ी है।

साथियों बात अगर हम नागरिकों के भड़काने क़े यूरोप में बढ़ते दायरे फ्रांस से स्पेन तक विरोध करने की करें तो यूरोप में पिछले एक दशक से प्रवासन की समस्या गंभीर रूप से बढ़ी है।(1) फ्रांसःपेरिस और मार्सिले जैसे शहरों में अफ्रीकी और अरब देशों से आए प्रवासियों की बड़ीसंख्या बस चुकी है। फ्रांस में बेरोजगारी और आतंकी घटनाओं के बाद से इन प्रवासियों पर सवाल उठने लगे हैं।(2) बेल्जियम और जर्मनीःइन देशों ने सीरिया और अफगानिस्तान के शरणार्थियों को जगह दी, लेकिन अब राजनीतिक दबाव बढ़ रहा है कि "बहुत हो गया।"(3)स्पेन और इटलीः समुद्री मार्ग से आने वाले प्रवासी यहां सबसे ज्यादादाखिल हो रहे हैं।स्पेन के समुद्रतट पर रोज़ हजारों लोग नावों में उतर रहे हैं।(4)ब्रिटेनः ब्रेक्जिट का एक बड़ा कारण ही था, "इमीग्रेशन कंट्रोल।"इन सभी देशों में विरोध प्रदर्शन और "डिपोर्टेशन डिमांड" बढ़ता जा रहा है।

साथियों बात अगर हम यूरोप के समुद्र तटों के माध्यम से संभवतःअवैध प्रवासन होने के माध्यम व आंकड़ों को समझने की करें तो,पिछले कुछ वर्षों में 28 लाख से अधिक प्रवासी समुद्र पार करके यूरोप पहुंचे। इनमें से अधिकांश अफ्रीका, सीरिया, अफगानिस्तान और यमन से आए थे। समस्या यह है कि यूरोप पहुंचने के बाद बड़ी संख्या में ये प्रवासी गुम हो गए,यानें न तो उनके पास वैध पहचान है, न ठिकाना, न ही रोजगार। इससे यूरोप की जनसांख्यिकीय (डेमोग्राफ़िक) संरचना पर बड़ा असर पड़ा है। ग्रीस, इटली और स्पेन के समुद्री तटों पर अब स्थायी बाड़ (फेन्सेस) और सुरक्षा दीवारें बनाई जा रही हैं। हंगरी और पोलैंड ने तो पहले ही "आयरन वाल" जैसी सीमा सुरक्षा लागू कर दी है।

साथियों बात अगर हम भारत और दक्षिण एशिया में अवैध प्रवासियों क़े संकट की करें तो,भारत भी इस समस्या से अछूता नहीं है।(1)असम और बंगालः यहां बांग्लादेशी घुसपैठ सबसे बड़ी समस्या है।(2)बिहार और झारखंडः बड़ी संख्या में बांग्लादेशी प्रवासी मजदूरी कर रहे हैं।(3)रोहिंग्या मुसलमानः म्यांमार से आए हजारों रोहिंग्या दिल्ली, जम्मू और हैदराबाद में बस चुके हैं।(4) श्रीलंका के तमिल शरणार्थीः दक्षिण भारत में दशकों से मौजूद हैं।प्रधानमंत्री और कई राज्य सरकारें लगातार चेतावनी देती रही हैं कि ये प्रवासी राष्ट्रीय सुरक्षा और जनसांख्यिकी संतुलन को बिगाड़ सकते हैं।

साथियों बात अगर हम अवैध प्रवासन के कारणों की करें तो,प्रवासी केवल शौक से अपना देश नहीं छोड़ते। इसके पीछे कई ठोस कारण हैं:(1)गरीबी और बेरोजगारी -अफ्रीकी और एशियाई देशों में रोजगार का अभाव।(2)सामाजिक सुरक्षा की कमी- स्वास्थ्य, शिक्षा और पेंशन जैसी सुविधाओं का अभाव।(3)राजनीतिक अस्थिरता और युद्ध- सीरिया, अफगानिस्तान और यमन जैसे देशों की स्थिति।(4)जलवायु परिवर्तन-सूखा, बाढ़ और अकाल के कारण लोग अपने घर छोड़ने को मजबूर हैं।(5)बेहतर भविष्य का सपना- यूरोप और अमेरिका की चकाचौंध भरी जीवनशैली।

साथियों बात अगर हम यूरोप की "नस्लीय दृष्टि" और बाहरी खतरे की भावना कुछ समझने की करें तो,यूरोप के कई देश अवैध प्रवासियों को सिर्फ आर्थिक बोझ नहीं मानते, बल्कि उन्हें "बाहरी" (आउटसाइडर्स) और "संस्कृति के दुश्मन" की तरह देखते हैं।(1)जर्मनी और फ्रांस में राइट-विंग पार्टियां तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं।(2)ब्रिटेन में "इंग्लिश आइडेंटिटी" का नारा बुलंद हो रहा है।(3)पोलैंड और हंगरी ने साफ कहा है कि वे मुस्लिम प्रवासियों को जगह नहीं देंगे।यह दृष्टिकोण यूरोप की ऐतिहासिक नस्लीय सोच से भी जुड़ा है। उपनिवेशवाद (कॉलोनीलिस्म) के समय की मानसिकता अब "रिवर्स फियर" (उल्टा डर) के रूप में सामने आ रही है,कि कहीं प्रवासी ही मूल आबादी पर हावी न हो जाएं।

अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अवैध प्रवासन आज केवल एक स्थानीय संकट नहीं, बल्कि एक वैश्विक चुनौती बन गया है। अमेरिका की नीतियां, यूरोप के विरोध प्रदर्शन, भारत की सीमा सुरक्षा और एशिया-अफ्रीका की गरीबी,सब एक ही सूत्र में बंधे हैं। यदि दुनिया को स्थिर और सुरक्षित रखना है तो संतुलित नीति अपनानी होगी।न तो यह संभव है कि सभी प्रवासियों को हमेशा के लिए रोक दिया जाए, और न ही यह कि बिना जांच- परख हर किसी को बसने दिया जाए।आवश्यक है किअंतरराष्ट्रीय स्तरपर एक साझा प्रवासन नीति बने, जिसमें मानवीय संवेदना भी हो और राष्ट्रीय सुरक्षा का संतुलन भी।

दक्षिणपंथी-दक्षिणपंथी भाई-भाई : जावेद अख्तर से कौन डरता है?

(आलेख : सुभाष गाताड़े, अनुवाद : संजय पराते)

हिंदू और मुस्लिम वर्चस्ववादियों के बीच 'उद्देश्य की एकता' देखी गई है, जो खुद को 'अपने समुदाय' का एकमात्र प्रवक्ता मानते हैं।

"धर्मनिष्ठ व्यक्ति मुझे काफ़िर समझता है, और काफ़िर सोचता है, (मैं) मुसलमान हूँ/ काफ़िर सोचता है कि मैं संत हूँ, और संत मुझे काफ़िर समझते हैं/ दोनों पक्षों की बात सुनकर, मैं चकित हूँ/ मैं वह विषय हूँ, जिसे समझना कठिन है/ अगर कोई समझने को इच्छुक हो, तो मैं आसान हूँ।"

ऐसे बहुत कम मौके आते हैं, जब सरकारों से जुड़ी साहित्यिक अकादमियाँ भीड़ के दबाव में झुक जाती हैं। ऐसे मौके और भी कम आते हैं, जब वे उस कार्यक्रम को भी रद्द कर देते हैं, जिसका आयोजन उन्होंने बड़े धूमधाम से किया था।

पश्चिम बंगाल में ऐसा नजारा देखने को मिला, जब पश्चिम बंगाल उर्दू अकादमी ने एक कार्यक्रम को अचानक स्थगित कर दिया, जिसमें 'भारतीय सिनेमा में उर्दू' विषय पर चर्चा होनी थी और जो लगातार चार दिनों तक चलता रहता। इस कार्यक्रम में प्रमुख जीवित उर्दू कवियों में से एक जावेद अख्तर को भी मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस घटना को घटे दस दिन से भी अधिक समय हो गया है।

कोलकाता के दो प्रमुख इस्लामिक संगठनों, जमीयत उलेमा-ए-हिंद और वाहियान फ़ाउंडेशन ने इस आमंत्रण का विरोध किया था, क्योंकि वे अख्तर के धर्म संबंधी विचारों को समस्याग्रस्त मानते थे और वे उन्हें ₹धर्म और ईश्वर के विरुद्ध बोलने वाला₹ मानते हैं।

अख्तर घोषित रूप से नास्तिक हैं और सार्वजनिक मंचों पर इसके बारे में खुलकर बोलते हैं, जिससे ये लोग नाराज़ हो गए हैं।

इन संगठनों ने यहां तक धमकी दी थी कि अगर सरकार उनकी माँग नहीं मानती है, तो वे वैसा ही राज्यव्यापी आंदोलन शुरू कर देंगे – जैसा बांग्लादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन के खिलाफ किया गया था और जैसा कि सभी जानते हैं, इस आंदोलन के कारण उन्हें वर्ष 2007 में राज्य छोड़ना पड़ा था।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती थीं, क्योंकि राज्य विधानसभा के चुनाव अब ज़्यादा दूर नहीं हैं।

असीमित आक्रोश?

कार्यक्रम के अचानक स्थगित/रद्द होने से लेखकों, कार्यकर्ताओं और सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़ी हस्तियों में आक्रोश की भावना पैदा हुई है। चिंतित नागरिकों ने इस 'शर्मनाक' कृत्य की निंदा की है और उर्दू अकादमी चलाने वाले 'मूर्खों' पर सवाल उठाए हैं, ₹जो इस भाषा की उत्पत्ति तक नहीं जानते या जो उर्दू को मुस्लिम पहचान से जोड़ने पर तुले हुए हैं।₹ राजनीतिक विकल्प को गढ़ने के लिए 'आहत भावनाओं' का यह हथियारीकरण भी विश्लेषकों की नज़रों में आया है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि इस पूरे तमाशे का स्पष्ट परिणाम यह है कि इसने धर्म और नैतिकता के इन स्वयंभू संरक्षकों की आवाज को केंद्र में ला दिया है, उनके संकीर्ण विश्व दृष्टिकोण को उजागर कर दिया है और यह प्रदर्शित कर दिया है कि वे उस दूसरे पक्ष के संरक्षकों का प्रतिरूप प्रतीत होते हैं, जो हास्य कलाकार कुणाल कामरा या मुनव्वर फारुकी से लेकर लोक गायिका नेहा राठौड़ या अकादमिक 'मेडुसा' आदि को निशाना बनाते हैं, क्योंकि वे उनके विचारों और उनके साहस और असम्मान को, जिसके वे वाहक हैं, समान रूप से आपत्तिजनक मानते हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि अख्तर के कोलकाता कार्यक्रम के स्थगित/प्रभावी रूप से रद्द होने से चरम हिंदुत्ववादियों को बेहद खुशी हुई होगी।

इन लोगों के लिए भी अख्तर हिंदुत्व के मित्र नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने बार-बार इस धर्मनिरपेक्ष गणराज्य के गौरवशाली इतिहास को त्यागकर भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के उनके प्रयासों की आलोचना और निंदा की है।

एक ही पंख के पक्षी?

जैसा कि पुरानी कहावत है, 'एक ही पंख के पक्षी एक साथ रहते हैं', धार्मिक वर्चस्ववादियों के बीच भी इसी प्रकार की तनातनी देखने को मिलती है - भले ही वे एक-दूसरे के प्रति स्पष्ट विरोध रखते हों - विभिन्न अवसरों पर।

जैसा कि पुरानी कहावत है, 'एक ही पंख के पक्षी एक साथ रहते हैं', धार्मिक वर्चस्ववादियों के

बीच भी कई मौकों पर एक-दूसरे के स्पष्ट विरोध के बावजूद, इसी तरह की एक अजीबोगरीब तनातनी देखने को मिलती है।

ऐसी 'उद्देश्य की एकता' विशेष रूप से तब देखने को मिलती है, जब राज्य ऐसे कानूनों का मसौदा तैयार करता है, जो किसी की आस्था को प्राथमिकता देने से इनकार करते हैं। ऐसे सभी कदम जो मूलतः धर्म को राजनीति से अलग करने को बढ़ावा देते हैं, उनके लिए अभिशाप हैं। चूँकि वे स्वयं को 'अपने समुदाय' का एकमात्र प्रवक्ता मानते हैं, इसलिए वे हमेशा आपत्तियाँ उठाने में सबसे आगे रहते हैं।

पंजाब सरकार जिस 'ईशनिंदा विरोधी कानून' को लागू करना चाहती है, उस पर चल रही बहस पर गौर कीजिए। जैसा कि हम जानते हैं, प्रस्तावित पंजाब पवित्र धर्मग्रंथों के विरुद्ध अपराधों की रोकथाम विधेयक, 2025 (पीपीओएचएस अधिनियम) को हाल ही में राज्य विधानमंडल ने आगे की चर्चा के लिए एक समिति को भेज दिया है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वर्ष 2015 में अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार का बोलबाला था, जिनकी विश्वदृष्टि एक खास धर्म से जुड़ी थी। उन्होंने ईशनिंदा के खिलाफ 'सख्त कानून' बनाने की पहल की थी।

हमारे संविधान के विशेषज्ञों या हमारे संविधान की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति को कायम रखने के इच्छुक लोगों/संस्थाओं ने ऐसे कदमों का - 'ईशनिंदा कानून की तरह' के क़दम का - कड़ा विरोध किया है, लेकिन न तो हिंदुत्व दक्षिणपंथियों ने और न ही मुस्लिम दक्षिणपंथियों ने इस कदम का विरोध करना आवश्यक समझा है।

इस कानून की सभी धर्मनिरपेक्ष आलोचनाएं उनके कानों को संगीत की तरह लगती है : जैसे कि इस कानून की यह आलोचना कि यह कानून राज्य को धर्म से और अधिक दूर करने के बजाय, यह कानून ₹सांप्रदायिकता की पकड़ को और मजबूत करेगा, तथा सभी पक्षों पर धार्मिक चरमपंथियों के हाथ मजबूत करेगा।₹

इसी तरह, ₹अल्पसंख्यकों और कमज़ोर वर्गों के ख़िलाफ़, उन्हें परेशान करने, बदला लेने और व्यक्तिगत व व्यावसायिक झगड़ों को निपटाने के लिए -- ये सभी मामले, जो ईशनिंदा से पूरी तरह असंबद्ध हैं₹, जैसे शब्दों का दुरुपयोग उन्हें अटपटा नहीं लगता।

शायद, हम सर्वोच्च न्यायालय के 2013 के उस फ़ैसले को भी याद कर सकते हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय ने न्यायमूर्ति ए.पी. शाह की अगुआई में एक बेहद प्रगतिशील फ़ैसला दिया था और जिसने समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था। सर्वोच्च न्यायालय ने इस फैसले को मूलतः पलट दिया था। याद करें कि इस दौरान कैसे दक्षिणपंथी लोगों ने और भगवा से लेकर हरे तक की विभिन्न विचारधाराओं के रूढ़िवादी तत्वों ने इस प्रगतिशील फ़ैसले का विरोध करने के लिए हाथ मिलाया था।

बाद में, जब सर्वोच्च न्यायालय ने समलैंगिकता को पुनः अपराध घोषित कर दिया, तो अनेक स्वयंभू धर्मगुरुओं और नैतिकता के पैरोकारों ने स्वयं को निर्दोष महसूस किया और यहां तक कि एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर भारतीय दंड संहिता की धारा 377 पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया, क्योंकि उनके अनुसार यह 'न केवल इस देश की पूर्वी परंपराओं, नैतिक मूल्यों और धार्मिक शिक्षाओं के अनुरूप था, बल्कि यह पश्चिमी संस्कृति के आक्रमण और पारिवारिक व्यवस्था तथा सामाजिक जीवन के ताने-बाने के विघटन की आशंकाओं को भी दूर करता है। ये आशंकाएं 2009 के दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश, जिसमें समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया था, का अपरिहार्य परिणाम है।' इस प्रकार, विभिन्न धर्मों के संतों द्वारा प्रदर्शित सौहार्द्र हम सबके लिए देखने लायक था।

किसी को आश्चर्य हो सकता है कि क्या उन्होंने कभी अपने अनुयायियों के लिए वास्तविक भौतिक सरोकार के किसी मुद्दे पर एक साथ आने की ऐसी ही उत्सुकता दिखाई हो, या जब सड़कों पर लोगों को 'हम' बनाम 'वे' के खेमों में बांटने वाली नफ़रत का प्रदर्शन हो रहा था।

यादों की राह पर सफ़र

यह प्रसंग 80 साल पहले के उस दौर की याद दिलाता है, जब भारत अभी भी ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के अधीन था और शारदा अधिनियम लागू करने की बात चल रही थी, जिसके तहत 14 साल से कम उम्र की लड़कियों की शादी पर रोक लगा दी गई थी। आज बहुत कम लोग ही जानते होंगे कि इस अधिनियम को लागू करने की शुरुआती प्रेरणा फुलमोनी नामक एक बाल-वधू की मृत्यु पर मुखर तबकों द्वारा महसूस की गई घृणा से आई थी, जिसकी शादी अपने से कहीं ज़्यादा उम्र के व्यक्ति के साथ कर दी गई थी। तब 'पवित्र' और 'दोनों धर्मों के पवित्र', यानी हिंदू और मुसलमान, एकजुट होकर यह घोषणा करने आए थे कि वे 'अपनी गहरी आस्थाओं और अपने सबसे प्रिय अधिकारों पर इस तरह का आघात' नहीं होने देंगे।

यहाँ जवाहरलाल नेहरू द्वारा इस विषय पर लिखे गए लेख को याद करना समीचीन होगा, जो मॉडर्न रिव्यू (दिसंबर 1935) में प्रकाशित हुआ था।

'कुछ साल पहले मैं बनारस में था... हमने ब्राह्मणों को दाढ़ी वाले मौलवियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर मार्च करते देखा... और विजय पताकाओं में से एक दैदीप्यमान झंडे पर लिखा हुआ00000था, 'हिंदू-मुस्लिम एकता की जय'। यह शारदा अधिनियम के विरुद्ध दोनों धर्मों के कट्टरपंथियों का संयुक्त विरोध था।

वह आगे कहते हैं:

'हम पर आपत्तिजनक नारे लगाए गए और कुछ धक्का-मुक्की भी हुई। तभी जुलूस टाउन हॉल पहुँचा और इस या उस कारण से पत्थरबाज़ी शुरू हो गई। तभी एक होशियार युवक ने कुछ पटाखे फोड़े और इसका रूढ़िवादी लोगों की कतारों पर असाधारण प्रभाव पड़ा। ज़ाहिर है, यह सोचकर कि पुलिस या सेना ने गोलियाँ चलाई हैं, वे तितर-बितर हो गए और असाधारण तेज़ी से वे भाग गए। कुछ पटाखे जुलूस को भगाने के लिए काफ़ी थे...'। [सामाजिक एवं धार्मिक सुधार, अमिय पी. सेन, ओयूपी, पृष्ठ 118 में उद्धृत]

नेहरू पश्चिम में शिक्षित उदारवादियों द्वारा इस उद्यम का समर्थन करने की अनिच्छा और सामाजिक सुधार के मुद्दे पर उनके दृष्टिकोण पर भी ध्यान देते हैं। इस संदर्भ में, वे इस्लाम की एकजुटता के नेता सर मुहम्मद इकबाल को उद्धृत करते हैं, जो रूढ़िवादी हिंदुओं से पूरी तरह सहमत थे: 'मैं नए संविधान में समाज सुधारकों से सुरक्षा की रूढ़िवादी हिंदुओं की माँग की बहुत सराहना करता हूँ। वास्तव में, यह माँग सबसे पहले मुसलमानों द्वारा की जानी चाहिए थी।' (वही).

संदर्भ-स्रोत:

1. [https://www.newsclick.in/rightwing-rightwing-bhai-bhai-who-fears-javed-akhtar]

2. [https:// www. editorji. com/ entertainment-news/javed-akhtars-couplet-cause]

(सुभाष गाताडे दलित आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ता और स्वतंत्र लेखक हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा हिंदी दिवस पर "अनुगूँज-हिंदी की" प्रतियोगिता का सफल आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। हिंदी दिवस (14 सितंबर) के अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार ने 7 से 14 सितंबर तक ऑनलाइन प्रतियोगिता ₹अनुगूँज-हिंदी की₹ का सफल आयोजन किया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच हिंदी भाषा के प्रति गौरवबोध जागृत करना तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना था।

प्रतियोगिता में दो प्रमुख श्रेणियां रखी गई—

1. साहित्यिक लेखन प्रतियोगिता (स्वरचित कविता लेखन)

विषयः हमारी अस्मिता की पहचान (शब्द सीमाः 100—200 शब्द)

2. पत्र लेखन प्रतियोगिता

विषयः हिंदी के महत्व को समझाते हुए माता का पुत्र/पुत्री के नाम पत्र (शब्द सीमाः 12—20 पंक्तियाँ)

यह आयोजन दो वर्गों—कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी तथा सरकारी विद्यालयों के शिक्षक—के लिए किया गया। सभी प्रविष्टियां टीचर्स ऑफ बिहार के आधिकारिक स्वप्रकाशन मंच (वेबसाइट) के माध्यम से ही आमंत्रित की गईं।

विजेताओं का चयन 15 से 18 सितंबर के बीच जनमत (ऑनलाइन वोटिंग/लाइक) एवं निर्णायक मंडल द्वारा मूल्यांकन, दोनों आधारों पर किया जाएगा।

इस अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार ने कहा कि "हिंदी हमारी अस्मिता और संस्कृति की आत्मा है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से नई पीढ़ी में भाषा के प्रति आत्मगौरव और सृजनशीलता की भावना प्रबल होगी।"

टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने कहा कि "डिजिटल युग में हिंदी का प्रचार-प्रसार तकनीक के माध्यम से

और भी सशक्त हो सकता है। टीचर्स ऑफ बिहार मंच का यह उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।"

इवेंट लीडर केशव कुमार एवं अनुपमा प्रियदर्शिनी ने बताया कि "प्रतियोगिता में विद्यार्थियों और शिक्षकों की उत्साहजनक भागीदारी रही, जिसने इसे बेहद सफल बना दिया।"

प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से जानकारी दी कि "प्रतियोगिता के परिणाम शीघ्र ही घोषित किए जाएंगे तथा विजेताओं को विशेष सम्मान प्रदान किया जाएगा।"

श्राद्ध, पिंडदान और तर्पण के लिए प्रसिद्ध कुछ महान तीर्थ और प्रसिद्ध स्थान, जहां तर्पण और पिंडदान से पितरों को मिलती है, शांति, मुक्ति और मोक्ष

पितृ पक्ष में पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध और पिंडदान किया जाता है, जिससे पूर्वजों के आशीर्वाद से आपका वंश आपका फूले-फले और उन्नति करे। श्राद्ध का सही अर्थ है, श्रद्धा ; अपने सामर्थ्य के अनुसार, जो व्यावहारिक हो, संभव हो, श्रद्धा से किया जाए, वही उत्तम फलदायक होता है।

वैसे तो पिंडदान देश की कई जगहों में किया जाता है, लेकिन अधिकतर परिजन अपने पूर्वजों का तर्पण और पिंडदान करने गया जी, बोधगया, प्रयागराज, अयोध्या, पुष्कर व हरिद्वार आदि स्थानों पर जाते हैं। हमारे शास्त्रों में करीब 42 ऐसे तीर्थ स्थानों का उल्लेख है, जिनके बारे में अधिकतर लोगों को पता ही नहीं है। यह कुछ विशेष स्थान हैं, जहां पर श्राद्ध करने से बड़ा पुण्य मिलता है और पितरों की आत्मा को भी शांति मिलती है।

आप भी जानिए, इनमें से कुछ प्रमुख तीर्थ :

1. बदरीनाथ धाम (ब्रह्मकपाल, उत्तराखंड) : पितरो को मोक्ष के चलते बदरीनाथ धाम को मोक्ष धाम भी कहते है. इस तीर्थ के समीप ही अलकनंदा नदी बहती है। किवदंती है, कि पांडवों ने भी यहां अपने परिजनों की आत्मा की शांति के लिए पिंडदान किया था। यहां पर पिंडदान करने के पश्चात पितरों को मोक्ष मिलने के कारण अन्य जगह पिंडदान और तर्पण करने की आवश्यकता नहीं होती। इसे कपाल मोचन तीर्थ के नाम से भी जाना जाता है।

2. गया (बिहार) : फल्गु नदी के तट पर स्थित, इस स्थान पर, पितृ पक्ष के दौरान यहां रोज हजारों श्रद्धालु अपने पितरों के पिंडदान के लिये आते हैं। गया को श्राद्ध, पिंडदान व तर्पण के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना गया है। मान्यता है, यहाँ पिंडदान करने से मृतात्मा को बैकुंठ की प्राप्ति होती है। इस तीर्थ का वर्णन रामायण में भी मिलता है। गया में पहले विविध नामों से 360 वेदियां थी, लेकिन उनमें से अब कुछ ही शेष बची हैं।

3. नारायणी शिला, हरिद्वार : मान्यता है, कि हरिद्वार के नारायणी शिला पर तर्पण करने से पितरों को मोक्ष प्राप्ति होती है, पुराणों में भी इसका है। यदि यहां पिंडदान किया जाता है, तो दिवंगत की आत्मा को स्थायी शांति मिलती है और परिवार के को भी समृद्धि मिलती है।

4. लोहागर (राजस्थान) : ऐसी मान्यता है, कि लोहागर की रक्षा स्वयं ब्रह्माजी करते हैं। यह राजस्थान का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है, जो पिंडदान और अस्थि विसर्जन के लिए भी जाना जाता है। मान्यता के अनुसार, जिस व्यक्ति का श्राद्ध यहां किया जाता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहां का मुख्य तीर्थ पर्वत से निकलने वाली सात धाराएं हैं। लोहागर की परिक्रमा भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की नवमीं तिथि से पूर्णिमा तक होती है।

5. प्रयाग (उत्तर प्रदेश) : तीर्थों में प्रयाग प्रमुख है। यहां मुंडन और श्राद्ध कर्म कराने की बड़ी मान्यता है। त्रिवेणी संगम के पास निश्चित स्थान पर मुंडन होता है। यहां विधवा स्त्रियां भी मुंडन कराती हैं। प्रयाग में श्राद्धकर्म प्रमुख रूप से संपन्न कराए जाते हैं। मान्यता है, कि जिस किसी भी पुण्यात्मा का तर्पण एवं अन्य श्राद्ध कर्म यहां विधि-विधान से संपन्न हो जाते हैं, वह जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है।

6. पिण्डारक (गुजरात) : द्वारिका से लगभग 30 किलोमीटर दूर स्थित इस क्षेत्र का प्राचीन नाम पिण्डतारक है। यहां एक सरोवर है, जिसके तट पर यात्री श्राद्ध करके दिए हुए पिंड सरोवर में डाल देते हैं। यहां कपालमोचन महादेव, मोटेश्वर महादेव और ब्रह्माजी के मंदिर हैं। साथ ही श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु की बैठक भी है। प्राचीन मान्यता है, कि यहां महर्षि दुर्वासा का आश्रम था, जिनके वरदान के कारण ही इस स्थान पर पिंडदान करने से पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है।

7. मथुरा यमुना नदी के तट पर : मथुरा यमुना नदी के तट पर स्थित बोधिनी तीर्थ, विश्रंती तीर्थ और वायु तीर्थ पर आयोजित किए जाते हैं। सात पिंड या चावल में मिले गेहूं के आटे से बने गोले, शहद और दूध के साथ मृतक और पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए प्रसाद के रूप में तैयार किए जाते हैं और इन्हें मंत्रों के जाप के दौरान चढ़ाया जाता है।

8. उज्जैन, शिप्रा नदी के तट पर : उज्जैन पिंड दान के लिए एक आदर्श स्थान है। पिंडदान शिप्रा नदी के तट पर किया जाता है।

9. अयोध्या, सरयू नदी पर : सप्त पुरियों में अयोध्या को प्रथम पुरी माना गया है। यहां सरयू नदी पर पितृ तर्पण एवं श्राद्ध करने से पितृ तृप्त होकर आशीर्वाद देते हैं। पवित्र सरयू नदी के तट पर भात कुंड है, जहां लोग अनुष्ठान करके अपने दायित्व को पूरा करते हैं। लोग अपने पूर्वजों के लिए यहां हवन भी करवाते हैं।

10. महानदी और भार्गवी नदी के तट पर स्थित पुरी, चार धामों में से एक, जगन्नाथ मंदिर और वार्षिक रथ यात्रा के लिए प्रसिद्ध है। संगम को पवित्र और पिंड दान समारोह का आदर्श स्थान माना जाता है। यहाँ किया गया पिंडदान परिवार के सदस्यों को पुण्य और आत्मा को शांति प्रदान करता है।

11. कुरुक्षेत्र (पेहेवा) : हरयाणा के कुरुक्षेत्र जिले में सरस्वती के दाहिने तट पर स्थित इस तीर्थ को बहुत ही पुण्यमय माना जाता है। कहते हैं, कि महाभारत युद्ध में मारे गए, कौरवों और पांडवों का पिण्डदान भी यहीं हुआ था।

12. नैमिषारण्य (उत्तर प्रदेश) : बालामऊ जंक्शन के पास नैमिषारण्य में तपस्या, श्राद्ध, यज्ञ, दान इत्यादि की पूजा एंव क्रिया सात जन्मों के पापों को दूर करती है।

13. धौतपाप (हत्याहरण तीर्थ) : निमिषारण्य से लगभग 13 किमी दूर गोमती नदी के किनारे स्थित इस तीर्थ पर स्नान एवं श्राद्ध तर्पण करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

14. बिठूर (ब्रह्मावर्त) : कानपुर के निकट बिठूर नामक स्थान है, यहां गंगा जी के कई घाटों में प्रमुख ब्रह्मा घाट है।

15. परशुराम कुण्ड, लोहित, अरुणाचल प्रदेश : इसको प्रभु कुठार के नाम से भी जाना जाता है। पूर्वकाल में इसे श्राद्धकर्म के लिए बहुत पवित्र माना जाता था।

16. याजपुर, ओडिशा : यहां श्राद्ध एवं तर्पण आदि का बहुत महत्व है। ऐसा माना जाता है, कि यहां ब्रह्मा जी ने यज्ञ किया था।

17. भुवनेश्वर, ओडिशा : यहां काशी के समान अत्यधिक शिव मंदिर हैं। इसे उत्कल-वाराणसी और गुप्त काशी भी कहा जाता है। श्राद्ध एवं पितृ तर्पण के लिए यह पवित्र स्थान है।

18. पिण्डास्क (हरियाणा) : इसे पिण्ड तारक तीर्थ भी कहते हैं। यहां स्नान करके पितृ तर्पण किया जाता है।

19. लक्ष्मण बाण (कर्नाटक) : पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, सीताहरण के बाद श्रीराम व लक्ष्मण माल्यवान पर्वत पर रुके थे। यहां के मंदिर में राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियां हैं। मंदिर के पिछले भाग में ही लक्ष्मण कुंड है, जो यहां का मुख्य स्थान है। इसे लक्ष्मणजी ने बाण मारकर प्रकट किया था। ऐसा भी माना जाता है, कि यहां श्रीराम ने अपने पिता का श्राद्ध किया था।

20. मेघंकर (महाराष्ट्र) : मेघंकर तीर्थ को साक्षात भगवान जर्नादन का स्वरूप माना गया है। मान्यता है, कि जब सृष्टि के आरंभ में ब्रह्माजी ने यज्ञ किया था तो उस यज्ञ के दौरान उपयोग में आने वाले बर्तन में से इस नदी का उद्भव हुआ था। जिस व्यक्ति का यहां श्राद्ध किया जाता है उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

21. पुष्कर, अजमेर, राजस्थान : यहां अधिकतर लोग हरिद्वार आदि तीर्थ में अस्थि विसर्जन के बाद पुष्कर में आकर पिण्डदान करते हैं।

22. तिरुपति : यह श्राद्ध के लिए अत्यन्त पवित्र माना जाता है। यहां कपिल तीर्थ में स्नान, बैंकटाचल पर बालाजी दर्शन के बाद ऊपर के अन्य तीर्थ दर्शन के बाद तिरुपति में गोविन्दराज आदि के दर्शन किये जाते हैं।

23. शिवकांची, सर्वतीर्थ सरोवर, तमिलनाडू : मोक्षदायिनी सप्त पुरियों में शामिल कांची हरिहरात्मकपुरी है। इसके शिवकांची और विष्णुकांची दो भाग हैं। भगवान शिव और विष्णु का क्षेत्र एंव शक्ति सति स्थान होने के कारण इसे अत्यन्त पावन पितृ तीर्थ माना गया है।

24. कुम्भ कोणम, केरल : कावेरी नदी के तट पर स्थित यहां मुख्य तीर्थ महामघम सरोवर है।

25. रामेश्वरम, लक्ष्मणतीर्थ : यहां पर पिण्डदान करने से पितृगण पूर्ण रूप से संतुष्ट होते हैं।

26. दर्भशयनम्, तमिलनाडू : यहां भगवान राम ने दर्भशय्या पर शयन किया था। इसे भी श्राद्ध आदि के लिए मुख्य तीर्थ माना जाता है।

27. सिद्धपुर, गुजरात : यहां श्राद्ध करने से पितृों को पूर्ण तृप्ति प्राप्त होती है।

28. द्वारकापुरी, गुजरात : श्रीकृष्ण का धाम होने के कारण यहां श्राद्ध करने से पितृों को पूर्ण तृप्ति प्राप्त होती है।

29. नारायणसर, गुजरात : यहां आदि नारायण, लक्ष्मी नारायण, गोबर्धनन्नाथ आदि के मंदिर हैं। अतः नारायण सरोवर के पास पितृों की तृप्ति का तीर्थ स्थान है।

30. प्रभास-पाटण, वेरावल : यहां अग्निकुण्ड, ज्योर्तिलिंग सोमनाथ, अहिल्याबाई इत्यादि कई प्रसिद्ध मंदिर हैं। इस क्षेत्र से प्राची त्रिवेणी संगम पर भालक तीर्थ भी है। जहां श्री कृष्ण को पैर में बाण लगा था।

31. शूलपाणी, गुजरात : नर्मदाजी तट के मुख्य तीर्थों में शामिल शूलपाणी तीर्थ पर शूलपाणी शुल्पाणेश्वर महादेव का मंदिर है।

32. नासिक, महाराष्ट्र : यहां बहने वाली गोदावरी नदी भारत की प्रसिद्ध सात नदियों में से एक है। यहां पितृों की संतुष्टि हेतु स्नान तर्पण आदि कर्म किये जाते हैं।

33. त्र्यम्बकेश्वर, महाराष्ट्र : यहां महर्षि गौतम ने तपस्या कर शिव जी को प्रसन्न किया था। पितृ दोष शान्ति का यह प्रमुख स्थान है।

34. पंढरपुर महाराष्ट्र : यहां भीमा नदी है, जिसे चन्द्रभागा भी कहा जाता है। यहां भगवान श्री बिठ्ठल का प्रसिद्ध मंदिर भी है, जोकि पितृकर्म के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है।

35. त्रियूगीनारायण या सरस्वती कुंड, उत्तराखंड : रूद्र प्रयाग के समीप इस तीर्थ पर भगवान नारायण, भू-देवी एवं लक्ष्मी देवी विराजमान हैं। यहां सरस्वती नदी पर स्थित रूद्र कुण्ड स्नान, विष्णु कुण्ड मार्जन, ब्रह्मकुण्ड आश्वन और सरस्वती कुण्ड तर्पण के लिए हैं।

36. मदमहेश्वर या मध्यमेश्वर, उत्तराखंड : केदारधाम पर स्थित इस तीर्थ पर भगवान शंकर की नाभि प्रतिष्ठित है। यह तीर्थ पंच केदार में शामिल द्वितीय केदार है।

37. रूद्रनाथ : यह तीर्थ पंच केदार में से एक तुंगनाथ के समीप स्थित है।

38. नासिक, महाराष्ट्र : यहां बहने वाली गोदावरी नदी भारत की प्रसिद्ध सात नदियों में से एक है। यहां पितृों की संतुष्टि हेतु स्नान तर्पण आदि कर्म किये जाते हैं।

सियासत और वंशवाद: लोकतंत्र की चुनौती

भारतीय राजनीति में वंशवाद इतना गहरा रच-बस गया है कि यह अब लोकतंत्र के मूल स्वरूप को चुनौती देता है। यह न केवल सत्ता हस्तांतरण की कहानी है, बल्कि उस सामाजिक-सांस्कृतिक मानसिकता को उजागर करता है जो इसे पोषित करती है। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में, जहां हर नागरिक को समान अवसर का संवैधानिक हक है, वंशवाद का प्रभुत्व लोकतंत्र की आत्मा पर गहरा घाव छोड़ता है। यह नेतृत्व की गुणवत्ता को कमजोर करता है और गैर-राजनीतिक पृष्ठभूमि से आने वाले सक्षम व्यक्तियों को हाशिए पर धकेल देता है। सवाल उठता है: क्या वंशवाद महज एक सामाजिक कुरीति है, या यह उस जटिल सामाजिक ताने-बाने का हिस्सा है जिसे हमने सहेजा है?

भारतीय सियासत में वंशवाद का प्रभाव इतना व्यापक है कि इसे सामान्य मान लिया गया है। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों में नेतृत्व का बड़ा हिस्सा उन परिवारों के पास है जिनका सियासत में दशकों का वर्चस्व रहा है। यह संयोग नहीं कि एक ही परिवार की कई पीढ़ियां सत्ता के शीर्ष पर काबिज हैं। इसकी जड़ें भारत की सामंती और परंपरागत संरचना में हैं, जहां वंश और खानदान को सर्वोपरि माना जाता है। जनता परिचित चेहरों को सत्ता में देखना चाहती है, यह मानते हुए कि अगर एक व्यक्ति ने सियासत में नाम कमाया, तो उसका वारिस भी वही रास्ता अपनाएगा। लेकिन क्या यह विश्वास तर्कसंगत है, या यह सामाजिक भ्रम है जो नई संभावनाओं को रोकता है?

वंशवाद का सबसे घातक पहलू यह है कि यह योग्यता और क्षमता को कुचल देता है। जब सत्ता किसी परिवार के भीतर कैद रहती है, नए विचार, ऊर्जा और दृष्टि दम तोड़ देते हैं। गैर-राजनीतिक पृष्ठभूमि से आने वाला मेहनती और सक्षम व्यक्ति सियासत के अभेद्य किले को भेदने में असफल रहता है। यह व्यक्तिगत अन्याय के साथ-साथ राष्ट्र के लिए क्षति है, जो भविष्य की संभावनाओं को जकड़ लेती है। लोकतंत्र, जो हर नागरिक को अपनी प्रतिभा साबित करने का हक देता है, वहां वंशवाद योग्यता और महत्वाकांक्षा के बीच खाई खोद देता है।

हालांकि, वंशवाद को केवल अभिशाप कहना सत्य का सरलीकरण होगा। राजनीतिक परिवारों से उभरने वाले व्यक्ति अपनी सियासी विरासत और अनुभव का लाभ उठाकर प्रभावी नेतृत्व दे सकते हैं। उनके पास मजबूत नेटवर्क, जनता के बीच पहचान और सियासत का गहरा ज्ञान होता है। यह ₹जन्मजात लाभ₹ उन्हें तेजी से सत्ता के शिखर तक पहुंचाता है। लेकिन क्या यह लाभ लोकतंत्र के अनुरूप है? क्या केवल खास परिवार में जन्म लेने से किसी को सियासत का अवसर मिलना चाहिए, जबकि अधिक योग्य व्यक्ति पीछे रह जाएं? यह प्रश्न समाज की उस मानसिकता को चुनौती देता है जो वंश को योग्यता से ऊपर रखती है।

वंशवाद की जड़ें भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में गहरी हैं। यहां परिवार और वंश को सम्मान की नजर से देखा जाता है। चाहे व्यापार, कला या सियासत, लोग उसी पर भरोसा करते हैं जिसका खानदान उस क्षेत्र में रुतबा रखता हो। यह विश्वास सदियों पुरानी परंपराओं की देन है, जो समाज की रगों में समाई है। मगर यह विश्वास कई बार अंधविश्वास बन जाता है, जो तर्क को धुंधला देता है। लोग भूल जाते हैं कि हर पीढ़ी की अपनी क्षमता होती है, और एक सफल नेता का वारिस जरूरी नहीं कि उतना ही काबिल हो। फिर भी, जनता और दल इस भ्रामक विश्वास में वंशवादी नेताओं को सत्ता सौंपते हैं, जैसे योग्यता से ज्यादा वंश का नाम मायने रखता हो।

वंशवाद का विनाशकारी प्रभाव राजनीतिक दलों की आंतरिक लोकतांत्रिक आत्मा पर पड़ता है। कई दलों में नेतृत्व का चयन पारदर्शी या लोकतांत्रिक नहीं रह गया; यह परिवार के इर्द-गिर्द सिमटकर बंद कमरे की सौदेबाजी बन गया है। इससे कार्यकर्ताओं का जोश ठंडा पड़ता है और सत्ता मुट्ठीभर लोगों के हाथों में सिमट जाती है। संगठन परिवार की कठपुतली बन जाता है, और नई प्रतिभाएं उभरने से पहले दम तोड़ देती हैं। यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब कार्यकर्ता इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं। यह दलों की गतिशीलता को ठप करता है और लोकतंत्र की समानता की नींव को कमजोर करता है।

वंशवाद जनमानस की सोच को जकड़ लेता है। जब लोग बार-बार उसी परिवार के नेताओं को चुनते हैं, वे नए चेहरों, ताजा विचारों और क्रांतिकारी दृष्टिकोण से कतराने लगते हैं। यह सामाजिक ठहराव परिवर्तन की धारा को रोक देता है। भारत जैसे युवा देश में, जहां आबादी का बड़ा हिस्सा ऊर्जावान है, नेतृत्व में नई पीढ़ी की आवाज जरूरी है। मगर वंशवाद इस संभावना को कुचल देता है, क्योंकि सत्ता का मार्ग कुछ परिवारों के लिए पहले से तय होता है। यह लोकतंत्र की गतिशीलता को बाधित करता है और समाज को नवीनता से वंचित करता है।

वंशवाद का यह जहर केवल आलोचना से नहीं मिटेगा। इसके लिए सामाजिक जागरूकता, राजनीतिक सुधार और संस्थागत परिवर्तन चाहिए। दलों को अपनी प्रक्रियाओं को लोकतांत्रिक बनाना होगा ताकि योग्यता और मेहनत सर्वोपरि हों। जनता को यह समझाना होगा कि नेतृत्व का चयन वंश के आधार पर नहीं, बल्कि क्षमता, दृष्टि और समर्पण पर होना चाहिए। शिक्षा और जागरूकता ही वह रोशनी है जो वंश को प्रतिभा से ऊपर रखने वाली मानसिकता को तोड़ेगी। यह रास्ता एक समावेशी और जीवंत लोकतंत्र की ओर ले जाएगा, जहां हर सपने को उड़ान और हर योग्यता को मंच मिले।

वंशवाद भारतीय सियासत का जटिल यथार्थ है। यह न तो पूरी तरह अंधकारमय है, न ही स्वर्णिम; यह सामाजिक-सांस्कृतिक जड़ों से पोषित एक चुनौती है। इसे समझने के लिए हमें इसकी कमियों पर उंगली उठाने से आगे बढ़ना होगा। यदि भारत को सच्चा लोकतंत्र बनाना है, तो वंशवाद के चक्रव्यूह को भेदना होगा। यह तभी संभव है जब हम वंश की चकाचौंध छोड़कर योग्यता को गले लगाएं और हर व्यक्ति को अपनी प्रतिभा साबित करने का समान मंच दें। यह यात्रा कठिन है, पर दृढ़ संकल्प के साथ हम एक ऐसा लोकतंत्र रच सकते हैं जो हर नागरिक की आकांक्षाओं को साकार करे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

श्राद्ध में कौओं का महत्व - पितरों तक भोजन पहुँचाना

चंद्र मोहन

एक प्राचीन मान्यता यह भी है कि मृत आत्माएँ कौए के रूप में प्रवेश कर सकती हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकती हैं। कौआ और कौवा (रेवेन) के बीच मुख्य अंतर आकार, चोंच, पंखों का आकार, पूंछ का आकार, आवाज़ और सामाजिक व्यवहार में होता है. कौवा आकार में बड़ा, चोंच मोटी और घुमावदार, पूंछ हीरे के आकार की और आवाज़ कर्कश होती है जबकि कौवा छोटा, चोंच पतली, पूंछ पंखे के आकार की और आवाज़ काँव-काँव वाली होती है.

प्यासा कौआ की कहानी हम बचपन से सुनते आ रहे हैं. कई कहावतें भी कौओं से सम्बंधित काफी प्रसिद्ध और प्रचलित है.

जैसे जैसे समय बीतता गया, कौआ भी सयाना और अकलमंद होने लगा. अब तो कौआ पानी की टोंटी पर बैठ, चोंच से टोंटी भी खोल कर पानी पीने लगा. सयाना कौआ 'गू' पर बैठता है, चाहे एक कहावत है लेकिन सन्दर्भ बिलकुल अलग है. कौआ इतना शातिर और होशियार होता है कि इसके कई उदाहरण मिल सकते हैं. भगवान श्री राम से वरदान भी मिला, जिस कारण वह पूजनीय हो गया और धार्मिक रीति रिवाजों में भी उसके माध्यम से पितरों तक पहुँच उसकी विशिष्टता बन गयी.

मेरे मित्र श्री नवीन खन्ना की कौओं से दोस्ती की चर्चा भी किसी रहस्यमयी किस्से से कम नहीं.

चलिए जानते हैं कि कौआ श्राद्ध के दिनों में ही क्यों महत्वपूर्ण है.

श्राद्ध में कौए की आवश्यकता धार्मिक मान्यताओं के अनुसार है क्योंकि कौआ पितरों का दूत माना जाता है और यमराज से जुड़ा होता है। यह मान्यता है कि कौए को भोजन कराने से पितरों तक वह भोजन सीधे पहुँचता है और वे प्रसन्न होकर वंशजों को आशीर्वाद देते हैं। इस परंपरा का पालन करने से पितृ दोष दूर होता है और पितृ पक्ष का श्राद्ध कर्म पूर्ण माना जाता है।

श्राद्ध में कौए की भूमिका और महत्वः

पितरों का दूतः

सनातन परंपरा में कौए को पितरों का दूत या प्रतिनिधि माना जाता है।

अन्न और जल का संचारः

यह मान्यता है कि श्राद्ध के दिन कौए को अर्पित किया गया अन्न और जल सीधे पितरों तक पहुँचता है और उन्हें तृप्त करता है।

यमराज से संबंधः

पौराणिक मान्यता के अनुसार, कौए को यमराज का प्रतीक और संदेशवाहक भी कहा जाता है।

श्राद्ध की पूर्णताः

जब कौआ श्राद्ध का भोजन ग्रहण कर लेता है, तो माना जाता है कि पितर संतुष्ट और प्रसन्न हो गए हैं। इसलिए कौवे को भोजन कराए बिना श्राद्ध अधूरा माना जाता है।

पितृ दोष से मुक्तिः

गरुड़ पुराण में वर्णन है कि कौवे को अर्पित किया गया अन्न और जल पितरों को मोक्ष प्रदान करता है और पितृ दोष को दूर करता है।

आत्माओं का निवासः

एक प्राचीन मान्यता यह भी है कि मृत आत्माएँ कौए के रूप में प्रवेश कर सकती हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकती हैं।

कौआ और कौवा (रेवेन) के बीच मुख्य अंतर आकार, चोंच, पंखों का आकार, पूंछ का आकार, आवाज़ और सामाजिक व्यवहार में होता है. कौवा आकार में बड़ा, चोंच मोटी और घुमावदार, पूंछ हीरे के आकार की और आवाज़ कर्कश होती है जबकि कौवा छोटा, चोंच पतली, पूंछ पंखे के आकार की और आवाज़ काँव-काँव वाली होती है.

शारीरिक अंतर

आकार और चोंचः कौवा (रेवेन) कौवे (क्रो) से काफ़ी बड़ा होता है. कौवे की चोंच घुमावदार और भारी होती है जबकि कौवे की चोंच पतली और सीधी होती है.

पंख और पूंछः कौवे के पंखों के सिरे ज़्यादा नुकीले होते हैं जबकि कौवे के पंख कुंद और फैले हुए होते हैं. कौवे की पूँछ पंखे के आकार की होती है, वहीं कौवे की पूँछ हीरे के आकार की होती है.

गले के पंखः कौवे के गले के पंख ज़्यादा घने होते हैं, जो उन्हें कुछ घुंघराले दिखाते हैं, जबकि कौवों के गले के पंख ज़्यादा घने नहीं होते हैं.

व्यवहार और आवाज़ -

आवाज़ः कौवे की आवाज़ काँव-काँव की तरह होती है, जबकि कौवों की आवाज़ ज़्यादातर कर्कश, खड़खड़ाने वाली और धीमी होती है.

सामाजिक व्यवहारः कौवे आमतौर पर समूहों में रहते हैं और अक्सर झुंडों में दिखाई देते हैं. इसके विपरीत, कौवे ज़्यादातर अकेले या जोड़े में रहना पसंद करते हैं.

उड़ने का तरीकाः कौवे उड़ते समय ज़्यादा तेज़ी से पंख फड़फड़ाते हैं, जबकि कौवे ज़्यादा शान से, सीधे और लंबे समय तक उड़ते हैं.

पौराणिक कथा के अनुसार, इंद्र के पुत्र जयंत ने कौए का रूप धारण कर माता सीता के पैर में चोंच मारी थी जिसके बाद भगवान राम ने उसे तिनके का बाण मारा. तब जयंत ने माफी मांगी और भगवान राम ने वरदान दिया कि उसके द्वारा खिलाया गया भोजन पितरों को प्राप्त होगा, इसी से श्राद्ध में कौवों को भोजन कराने की परंपरा शुरू हुई.

पर्यावरणीय महत्व

सफाई में योगदानः

कौवे सर्वाहारी होते हैं और मृत कीटों, सड़े हुए मांस और अन्य चीज़ों को खाकर वातावरण को स्वच्छ रखने में मदद करते हैं.

कीट नियंत्रणः

वे कृषि कीटों और अन्य हानिकारक कीटों का शिकार करते हैं, जिससे उनकी संख्या नियंत्रित रहती है.

ज्योतिषीय महत्व

शनि दोष मुक्तिः

नियमित रूप से कौओं को रोटी या अन्न खिलाने से शनि दोष दूर होता है.

आर्थिक लाभः

कौओं को भोजन कराने से आर्थिक संकट दूर होता है और कर्ज से राहत मिलती है, साथ ही सुख-शांति में वृद्धि होती है.

अगर कौवे नहीं होते तो पर्यावरण सफाई में बाधा आती, मृत जानवरों के शव पर्यावरण को दूषित करते और फलों के बीजों के फैलाव में भी कमी आती जिससे वनों का नवीनीकरण प्रभावित होता. इसके अलावा, धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं में कौवे की महत्वपूर्ण भूमिका है, विशेष रूप से पितृपक्ष के दौरान, और उनकी कमी से इन अनुष्ठानों पर भी असर पड़ता.

सफाईकर्मी की भूमिकाः

कौवे मृत जानवरों के मांस खाकर पर्यावरण को साफ रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं. उनके न होने से वातावरण में सड़े-गले शवों के कारण दुर्गंध फैलती और बीमारियाँ फैलने का खतरा बढ़ता.

बीजों का प्रसारः

कौवे फल और बीज खाते हैं और इन बीजों को फैलाते हैं, जिससे वनों के नवीनीकरण में मदद मिलती है. कौवे न होने पर बीजों के फैलाव में कमी आती, जिससे वनस्पति का विकास रुक जाता.

कीटों का नियंत्रणः

कौवे बड़ी संख्या में कीड़े, कैटरपिलर और अन्य कीट खाते हैं, जो किसानों और बागवानों के लिए हानिकारक हो सकते हैं. उनकी अनुपस्थिति में इन कीटों की संख्या बढ़ सकती थी, जिससे फसलों को नुकसान पहुँचता.

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव

श्राद्ध कर्मः

हिंदू धर्म में कौवों को पितरों का दूत माना जाता है. पितृ पक्ष के दौरान कौवों को भोजन कराने की परंपरा है जिससे यह माना जाता है कि भोजन सीधे पितरों तक पहुँचता है.

पितरों से जुड़ावः

कौवों का न होना पितृपक्ष को अधूरा माना जाने का कारण है. उनकी कमी से धार्मिक अनुष्ठानों की पवित्रता और महत्व कम हो जाता है.

संक्षेप में, कौवे पर्यावरण की सफाई से लेकर बीजों के प्रसार और धार्मिक प्रथाओं तक कई महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते हैं और उनके बिना पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा.

जनरेशन-जी से लेकर जनरेशन अल्फा तक : बदलती दुनिया, बदलते बच्चे

"समय के साथ बदलती पीढ़ियाँ और उनका समाज पर असर"

समय और समाज के बदलते माहौल के साथ हर पीढ़ी की सोच, जीवनशैली और चुनौतियाँ बदलती हैं। ग्रेटेस्ट जनरेशन और साइलेंट जनरेशन ने युद्ध और कठिनाई का सामना किया। बेबी बूमर्स ने औद्योगिकीकरण देखा, जेन-एक्स ने तकनीकी शुरुआत अनुभव की, और मिलेनियल्स ने इंटरनेट और वैश्वीकरण के साथ युवा जीवन जिया। जेन-ज़ी डिजिटल नेटिव हैं, आत्मनिर्भर और तेज़ सोच वाले, जबकि जेन अल्फा पूरी तरह डिजिटल माहौल में पले-बढ़ रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक जुड़ाव और रोजगार की अनिश्चितता इनकी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। संतुलन, रचनात्मकता और अनुभव-साझा करके भविष्य संवेदनशील और प्रगतिशील बनाया जा सकता है।

-डॉ प्रियंका सौरभ

समाज में समय-समय पर होने वाले परिवर्तन केवल राजनीति या तकनीकी तक सीमित नहीं रहते, बल्कि इंसान की सोच, जीवनशैली और संस्कृति पर गहरा असर डालते हैं। यही कारण है कि अलग-अलग वर्षों में जन्म लेने वाले लोगों को अलग-अलग ₹जनरेशन₹ के रूप में पहचाना जाता है। आजकल स्कूलों, कॉलेजों और यहाँ तक कि कॉरपोरेट दुनिया में भी ₹जेन-ज़ी₹ और ₹जेन अल्फा₹ जैसे शब्द आम हो गए हैं। लेकिन सवाल यह है कि ये पीढ़ियाँ हैं क्या, इनकी सोच और चुनौतियाँ किन मायनों में अलग हैं और क्या यह फर्क समाज को मज़बूत बना रहा है या विभाजन पैदा कर रहा है?

जनरेशन दरअसल वह समूह है जो लगभग समान समयावधि में जन्म लेता है और अपने बचपन व युवावस्था में समान सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों का अनुभव करता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौर में जन्मे बच्चे और आज के डिजिटल युग में जन्मे बच्चों की सोच और जीवनशैली में ज़मीन-आसमान का फर्क है। यही फर्क हर पीढ़ी की पहचान बन जाता है। अमेरिका और यूरोप में बीसवीं सदी की शुरुआत में पीढ़ियों को वर्गीकृत करने का चलन शुरू हुआ और अब भारत सहित पूरी दुनिया में इसे अपनाया जा रहा है।

बीसवीं सदी की शुरुआत से लेकर अब तक कई पीढ़ियाँ सामने आई हैं। 1901 से 1927 के बीच जन्म लेने वाली ₹ग्रेटेस्ट जनरेशन₹ ने प्रथम विश्व युद्ध और महामंदी की कठिन परिस्थितियों का सामना किया। इनकी ज़िंदगी अनुशासन और त्याग से भरी रही। इसके बाद 1928 से 1945 तक जन्मे लोग ₹साइलेंट जनरेशन₹ कहलाए। यह वह पीढ़ी थी जिसने द्वितीय विश्व युद्ध, गरीबी और विस्थापन के बीच अपना बचपन गुज़ारा। भारत में यही पीढ़ी स्वतंत्रता और विभाजन दोनों की गवाह बनी। 1946 से 1964 के बीच जन्म लेने वाली पीढ़ी ₹बेबी बूमर्स₹ के नाम से जानी गई। युद्ध के बाद जन्म दर में तेज़ी से वृद्धि हुई और दुनिया पुनर्निर्माण की ओर बढ़ी। भारत में यह वही लोग थे जिन्होंने पहली बार स्वतंत्र नागरिक का दर्जा पाया और औद्योगिकीकरण तथा हरित क्रांति के दौर को देखा।

1965 से 1980 के बीच जन्म लेने वाली ₹जेनरेशन एक्स₹ तकनीकी क्रांति की आहट के साथ बड़ी हुई। टीवी और रेडियो इनके जीवन का हिस्सा बने। भारत में इस पीढ़ी ने आपातकाल और आर्थिक संकट का समय देखा, इसलिए यह व्यावहारिक और आत्मनिर्भर मानी जाती है। इसके बाद 1981 से 1996 तक जन्म लेने वाली पीढ़ी ₹मिलेनियल्स₹ या ₹जेन-वाई₹ कहलायी। इसने इंटरनेट और वैश्वीकरण का दौर देखा। नई महत्वाकांक्षाओं और सपनों से भरे इन युवाओं ने आईटी क्रांति और मोबाइल तकनीक का लाभ उठाया।

1997 से 2012 तक जन्म लेने वाली ₹जेनरेशन-ज़ी₹ डिजिटल नेटिव कहलाती है। इन बच्चों ने बचपन से ही इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया। इनकी पहचान आत्मविश्वास, रचनात्मकता और तेज़ सोच है, लेकिन अधीरता और प्रतिस्पर्धा भी इनमें साफ़ दिखाई देती है। इसके बाद 2013 से 2025 के बीच जन्म लेने वाले बच्चे ₹जेनरेशन अल्फा₹ के नाम से पहचाने जाते हैं। ये बच्चे ऐसे माहौल में पले-बढ़ रहे हैं जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और रोबोटिक्स रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन चुके हैं। इनके खिलौने भी स्मार्ट डिवाइस हैं और शिक्षा पूरी तरह ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर आधारित होती जा रही है।

जेनरेशन-ज़ी की कुछ खास विशेषताएँ इन्हें औरों से अलग करती हैं। यह पहली पीढ़ी है जिसने बचपन से ही डिजिटल आईडी बनाई। किताबों और अख़बारों की जगह यूट्यूब, इंस्टाग्राम और नेटफ्लिक्स इनकी पसंद बन गए। ये मल्टीटास्किंग में माहिर हैं, आत्मनिर्भर और स्वतंत्र सोच रखते हैं, लेकिन इनकी सबसे बड़ी चुनौती ध्यान केंद्रित करने की क्षमता का कम होना है। सोशल मीडिया से होने वाली तुलना इनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है और कई बार चिंता व अवसाद जैसी समस्याएँ भी पैदा करती है।

जेनरेशन अल्फा का भविष्य और भी अनोखा होगा। यह मानव इतिहास की पहली पूरी तरह डिजिटल नेटिव पीढ़ी है। इनके खिलौने रोबोट हैं, शिक्षा वर्चुअल क्लासरूम में हो रही है और इनके खेल का मैदान मेटावर्स तथा ऑगमेंटेड रियलिटी है। ये वैश्विक स्तर पर सोचेंगे क्योंकि इन्हें बचपन से ही दुनिया से जुड़े प्लेटफ़ॉर्म मिल रहे हैं, लेकिन साथ ही यह खतरा भी रहेगा कि इनका वास्तविक दुनिया से जुड़ाव कमजोर हो जाए।

हर पीढ़ी पिछली से अलग रही है। बेबी बूमर्स नौकरी और स्थिरता को महत्व देते थे, जेन-एक्स ने संतुलन साधा, मिलेनियल्स ने उद्यमिता और सपनों पर ध्यान दिया, जबकि जेन-जी और अल्फा तेज़ी, सुविधा और त्वरित संतुष्टि को महत्व देते हैं। यही अंतर कभी-कभी संवाद की खाई भी पैदा कर देता है।

भारतीय संदर्भ में पीढ़ियों का असर और भी विविध है। गाँव और शहर में अनुभव अलग हैं। गाँव के बच्चे आज भी पारंपरिक खेलों और सामाजिक आयोजनों से जुड़े रहते हैं, जबकि शहरों के बच्चे मोबाइल और लैपटॉप की दुनिया में खोए रहते हैं। जेन अल्फा में यह अंतर और भी गहरा होगा। आर्थिक असमानता और शिक्षा का स्तर भी इस खाई को बढ़ाता है।

जेन-जी और अल्फा बच्चों के सामने कई चुनौतियाँ खड़ी होंगी। सबसे पहली चुनौती मानसिक स्वास्थ्य है। लगातार स्क्रीन टाइम और सोशल मीडिया के दबाव ने चिंता और अवसाद जैसी समस्याओं को जन्म दिया है। दूसरी चुनौती सामाजिक जुड़ाव की है। वर्चुअल दुनिया में रिश्ते तो बनते हैं, लेकिन असली संबंध कमजोर पड़ जाते हैं। तीसरी चुनौती रोज़गार की अनिश्चितता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑटोमेशन पारंपरिक नौकरियों को खत्म कर रहे हैं। ऐसे में नई स्किल्स सीखना बच्चों के लिए अनिवार्य होगा।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए समाधान भी संभव हैं। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को डिजिटल और वास्तविक जीवन का संतुलन सिखाएँ। शिक्षा प्रणाली को केवल अंकों तक सीमित न रखकर रचनात्मकता, सहयोग और भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर जोर देना होगा। सबसे ज़रूरी यह है कि बच्चों को प्रकृति और समाज से जोड़ा जाए। अगर पुरानी पीढ़ियों का अनुभव और नई पीढ़ियों की ऊर्जा आपस में मिल जाए, तो यह पीढ़ियाँ न केवल तकनीकी रूप से सक्षम होंगी बल्कि मानवीय दृष्टि से भी संवेदनशील बनेंगी।

अंत में कहा जा सकता है कि जेनरेशन-जी और अल्फा केवल नाम नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र का भविष्य हैं। पीढ़ियाँ बदलना स्वाभाविक है, लेकिन हर पीढ़ी की ताक़त और सीख को समझना ज़रूरी है। अगर हम अनुभव और ऊर्जा का मेल कर पाए, तो समाज संतुलित और प्रगतिशील बनेगा। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम आने वाली पीढ़ियों को तकनीकी रूप से दक्ष और मानवीय दृष्टि से संवेदनशील बनाकर सही दिशा दें।

भारत के नवनिर्माण का अध्याय: नरेंद्र मोदी @75

[संघर्ष की तपिश से गढ़ा लौहपुरुषः कर्मयोगी नरेंद्र मोदी]

[राष्ट्र-पुरुष नरेंद्र मोदीः समय के पार गूंजता एक युगनाम]

प्रभात की पहली किरण जब धरती को स्पर्श करती है, तो वह न केवल उजाला बिखेरती है, बल्कि एक नवीन चेतना, अटल संकल्प और असीम ऊर्जा का संदेश भी लाती है। नरेंद्र दामोदरदास मोदी का व्यक्तित्व ऐसी ही प्रभात का प्रतीक है, साधारण मिट्टी से उभरकर असाधारणता की आकाशीय ऊँचाइयों को छूने वाला। उनका जीवन केवल एक व्यक्ति की गाथा नहीं, अपितु एक राष्ट्र की पुनर्जागृति का जीवंत दस्तावेज है, जो अपने गौरव को नवनिर्माण की शक्ति से पुनः स्थापित कर रहा है। 17 सितंबर 1950 को गुजरात के वडनगर जैसे छोटे से कस्बे में जन्मे इस बालक ने बचपन से ही जीवन की कठिनाइयों का डटकर सामना किया। पिता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना, परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों को निभाना, और फिर भी ज्ञान की ज्योति को प्रज्वलित रखना—ये वे चिंगारियाँ थीं, जो आगे चलकर भारत के इतिहास को आलोकित करने वाली प्रचंड ज्वाला बनीं। नरेंद्र मोदी का जीवन साहस, समर्पण और संकल्प की त्रिवेणी से सजा एक प्रेरणादायी महाकाव्य है, जिसका प्रत्येक अध्याय भारत के नवनिर्माण की अमर कहानी कहता है।

नरेंद्र मोदी का प्रारंभिक जीवन अनुशासन, सेवा और राष्ट्रप्रेम की ठोस नींव पर खड़ा था। कम उम्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़कर उन्होंने सामाजिक कर्तव्य और राष्ट्रभक्ति की गहन शिक्षा प्राप्त की। लक्ष्मणराव इनामदार जैसे गुरु ने उन्हें संगठन की शक्ति और नेतृत्व की सूक्ष्म कला सिखाई। यह वह दौर था जब उन्होंने न केवल स्वयं को निखारा, बल्कि यह भी आत्मसात किया कि सच्चा नेतृत्व सत्ता के शिखर पर विराजमान होने में नहीं, बल्कि जनता के सुख-दुख को हृदय में समेटने में निहित है। यही दर्शन उनकी प्रत्येक नीति और निर्णय में आज भी प्रतिबिंबित होता है। चाहे गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में हो या भारत के प्रधानमंत्री के रूप में, उन्होंने सत्ता को सेवा का साधन बनाया, न कि व्यक्तिगत उपलब्धि का लक्ष्य। उनकी यह यात्रा एक ऐसी प्रेरणा है, जो हर भारतीय को अपने भीतर की असीम संभावनाओं को पहचानने और राष्ट्र के उत्थान के लिए समर्पित होने का आह्वान करती है।

नरेंद्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में 2001 से 2014 तक एक ऐसी विकास यात्रा की शुरुआत की, जिसने भारत और विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। उनके नेतृत्व में गुजरात ने प्रगति की नई ऊँचाइयाँ छुईं, जहाँ औसतन 10% से अधिक की जीडीपी वृद्धि दर ने राष्ट्रीय औसत को पीछे छोड़ दिया। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में गुजरात अग्रणी बना, और चारणका सोलर पार्क (गुजरात सोलर पार्क-1) जैसे नवाचारों ने नवीकरणीय ऊर्जा की दिशा में क्रांति ला दी। सरदार सरोवर परियोजना को गति प्रदान कर और सौराष्ट्र-कच्छ में नहरों का विशाल जाल बिछाकर जल संरक्षण में अभूतपूर्व कदम उठाए गए। 'स्वामी विवेकानंद युवा रोजगार सप्ताह' ने लाखों युवाओं के लिए रोजगार के सुनहरे द्वार खोले, जबकि 2003 में शुरू 'कन्या केलवणी' अभियान ने बालिका शिक्षा को सशक्त बनाया, जिससे स्कूल ड्रॉपआउट रेट 40% से घटकर 2% से भी कम हो गया। ये उपलब्धियाँ महज आँकड़े नहीं, बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति और दूरदर्शी नेतृत्व की जीवंत गाथा हैं, जिन्होंने गुजरात को विकास का एक प्रेरक प्रतीक बनाया।

2014 में भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी ने वैश्विक मंच पर भारत की गूंज को अभूतपूर्व बुलंदी दी। धारा 370 और 35ए को हटाने का उनका ऐतिहासिक निर्णय केवल कानूनी सुधार नहीं, बल्कि भारत की एकता और अखंडता को सशक्त करने का एक युगांतरकारी कदम था, जिसने जम्मू-कश्मीर को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा और वहाँ के नागरिकों को समान अधिकारों का उपहार दिया। जीएसटी के माध्यम से उन्होंने भारत की आर्थिक व्यवस्था को एकसूत्र में बाँधा, जिसने व्यापार और उद्योगों को नई गति प्रदान की। डिजिटल इंडिया पहल ने भारत को तकनीकी क्रांति का अग्रदूत बनाया, और आज यूपीआई के 100 बिलियन से अधिक लेनदेन के साथ भारत डिजिटल भुगतान में विश्व का सिरमौर है। स्वच्छ भारत मिशन ने 60 करोड़ से अधिक लोगों को शौचालय की सुविधा दी, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि माना। कोविड-19 महामारी के दौरान 'आत्मनिर्भर भारत' का उनका आह्वान केवल नीति नहीं, बल्कि भारतीयों के आत्मसम्मान और स्वावलंबन को प्रज्वलित करने वाला एक प्रेरक मंत्र था। इस दौरान भारत ने स्वदेशी वैक्सीन विकसित की और 200 करोड़ से अधिक टीकाकरण खुराकें प्रदान कर विश्व में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। नरेंद्र मोदी का नेतृत्व एक ऐसी प्रेरणा है, जो भारत को नवनिर्माण और वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर कर रही है।

नरेंद्र मोदी का व्यक्तित्व सादगी, अध्यात्म और दृढ़ संकल्प का अनुपम संगम है। उनकी दिनचर्या—प्रभात में प्रारंभ, योग और ध्यान की साधना, सात्विक भोजन और सादगीपूर्ण जीवन—यह दर्शाती है कि सत्ता के शिखर पर विराजमान होने के बावजूद वे एक सामान्य भारतीय के हृदय को जीते हैं। यह सादगी उनकी वैश्विक छवि को और अधिक प्रामाणिकता प्रदान करती है। जब वे संयुक्त राष्ट्र या जी20 जैसे मंचों पर बोलते हैं, तो उनकी वाणी में भारत की सांस्कृतिक गहराई और आधुनिक महत्वाकांक्षा का अद्भुत समन्वय गूंजता है। 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम, जो 100 से अधिक एपिसोड्स के साथ लाखों भारतीयों के दिलों से सीधा संवाद करता है, उनकी जनसंपर्क की अप्रतिम क्षमता का प्रतीक है। यह पहल न केवल संवाद का सेतु है, बल्कि एक ऐसी प्रेरणा है, जो भारत के कोने-कोने को एक सूत्र में पिरोती है। उनके जीवन में आलोचनाएँ और विवाद भी आए, विशेष रूप से 2002 के गुजरात दंगों को लेकर। किंतु, उन्होंने प्रत्येक आलोचना को अवसर में बदला। उनकी पारदर्शी शैली और जनता से प्रत्यक्ष संवाद ने उन्हें न केवल भारत, बल्कि विश्व में एक विशिष्ट पहचान दी। नोटबंदी हो या सीएए, उनके निर्णय दीर्घकालिक दृष्टिकोण से प्रेरित रहे। आलोचकों ने इन्हें विवादास्पद करार दिया, पर समय ने सिद्ध किया कि ये कदम भारत को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए युगांतरकारी मील के पत्थर थे। उनकी दृढ़ता और दूरदर्शिता ने असंभव को संभव करने का साहस जगाया।

17 सितंबर 2025 को नरेंद्र मोदी की 75वीं जयंती एक प्लैटिनम जुबिली के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे दृष्टिकोण के उत्सव के रूप में मनाई जा रही है, जिसने भारत को विश्व गुरु बनाने का स्वप्न साकार किया। उनके नेतृत्व में भारत ने मंगलयान और चंद्रयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों से विश्व को चमत्कृत किया, और 2023 में चंद्रयान-3 की चंद्रमा पर ऐतिहासिक लैंडिंग ने भारत का गौरव सातवें आसमान पर पहुँचाया। 'मेक इन इंडिया' पहल ने भारत को वैश्विक विनिर्माण का केंद्र बनाया, और 2024 तक भारत का निर्यात 750 बिलियन डॉलर के आँकड़े को पार कर चुका है। यह जयंती केवल एक व्यक्ति का उत्सव नहीं, बल्कि उस अटल संकल्प का सम्मान है, जिसने भारत को नवनिर्माण और वैश्विक नेतृत्व की राह पर अग्रसर किया। नरेंद्र मोदी का जीवन एक तपस्वी की साधना है, जिसने राष्ट्र को अपना परिवार मानकर हर क्षण को इसके उत्थान के लिए समर्पित किया। उनकी नीतियाँ, जैसे आयुष्मान भारत, जिसने 50 करोड़ से अधिक लोगों को मुफ्त स्वास्थ्य बीमा का सुरक्षा कवच प्रदान किया, और उज्ज्वला योजना, जिसने 10 करोड़ से अधिक परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन देकर उनकी रसोई को सम्मान और सुविधा दी, यह दर्शाती हैं कि उनका प्रत्येक कदम समाज के सबसे वंचित वर्ग को सशक्त करने की दिशा में उठाया गया है। उनकी दूरदर्शिता ने भारत को न केवल आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित किया, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक गौरव का प्रतीक भी बनाया।

उनकी 75वीं जयंती केवल एक तारीख नहीं, बल्कि उस अटल संकल्प का उत्सव है, जिसने वडनगर की संकरी गलियों से निकलकर एक साधारण बालक को विश्व मंच पर भारत की प्रबल आवाज बनाया। नरेंद्र मोदी का जीवन हमें सिखाता है कि यदि इरादे पवित्र हों और संकल्प अडिग हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं। उनकी यह यात्रा, जो एक छोटे से कस्बे से शुरू होकर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के शीर्ष तक पहुँची, हर भारतीय के लिए एक प्रेरणादायी महाकाव्य है। इस प्लैटिनम जुबिली पर हम न केवल उनके जन्मदिन का उत्सव मनाते हैं, बल्कि उस अटूट विश्वास का सम्मान करते हैं, जो भारत को असीम संभावनाओं के उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा रहा है। माननीय नरेंद्र दामोदरदास मोदी जी को उनकी 75वीं जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएँ—एक कर्मयोगी, एक दृष्टा, और एक सच्चे राष्ट्रभक्त, जिन्होंने भारत को नवनिर्माण और वैश्विक नेतृत्व की राह पर अग्रसर किया।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

भारत की विदेश नीति से दुनिया हतप्रभ है

राजेश कुमार पासी

अंतरराष्ट्रीय संबंधों और कूटनीति के मामले में भारत ने जो किया है और कर रहा है वो अद्भुत है, इसलिए पूरी दुनिया इससे हतप्रभ है। विशेष तौर पर अमेरिका और यूरोपीय देश इससे अचंभित है कि भारत इतना ताकतवर कैसे हो सकता है जो एक साथ उन्हें चुनौती दे रहा है। ये तो नहीं कहा जा सकता कि भारतीय विदेश नीति का डंका बज रहा है लेकिन भारतीय विदेश नीति चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर रही है। इस समय भारतीय विदेश नीति के सामने बड़ी कठिन चुनौतियां खड़ी हुई है लेकिन धीरे-धीरे उनसे निपटा जा रहा है।

संतुलन और स्वायत्तता भारतीय विदेश नीति की विशेषता रही है लेकिन अब इसमें आक्रामकता भी जुड़ गई है। इसके अलावा भारतीय संस्कृति की छाप भी विदेश नीति पर रही है जिससे भारत ने किसी भी देश के साथ परस्पर हितों पर आधारित रिश्ते निभाये हैं. भारतीय विदेश नीति स्वार्थ से सदा दूर रही है। ग्लोबल रिश्ते हमेशा हितों पर आधारित होते हैं, इसलिए वैश्विक राजनीति में कहा जाता है कि कोई किसी का स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता, स्थायी सिर्फ हित होते हैं। न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर, ये भारतीय विदेश नीति का आधार स्तंभ रहा है जबकि 1962 में हमें इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। हमने दोनों गुटों से दूर रहने की नीति अपनाई थी, जिसके कारण चीनी आक्रमण के समय कोई हमारे साथ खड़ा नहीं हुआ। नेहरू जी को अमेरिका के सामने गिड़गिड़ाना पड़ा, तब जाकर अमेरिका हमारे लिए खड़ा हुआ। हमारा झुकाव सोवियत संघ की तरफ था लेकिन कम्युनिस्ट देश होने के कारण वो उस युद्ध में तटस्थ हो गया था। गुटनिरपेक्षता की नीति के बावजूद 1971 में इंदिरा जी ने सोवियत संघ के साथ सुरक्षा समझौता साइन कर लिया था अन्यथा 1971 के युद्ध में हमारे देश की बड़ी बर्बादी हो सकती थी। उस युद्ध में अमेरिका पाकिस्तान की तरफ से मैदान में आ गया था। नेहरू जी के समय की सबसे दूर रहने की नीति का इंदिरा जी ने त्याग कर दिया था, इसलिए सोवियत संघ ने हमारी मदद के लिए अपनी नौसेना भेज दी थी।

संतुलन की नीति

रूस के साथ विशेष संबंध होते हुए भी हमने अपने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक संतुलन कायम रखा है। भारत पर एक गुट में शामिल होने का हमेशा दबाव रहा है। सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिका भारत को अपने खेमे में लेने की कोशिश करता रहा हैं हालांकि अब सिर्फ एक गुट बचा है। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण अब अमेरिका चाहता है कि भारत संतुलन साधना छोड़कर पश्चिमी देशों के साथ रूस के खिलाफ खड़ा हो जाए। अमेरिका जानता है कि भारत और चीन के कारण रूस की अर्थव्यवस्था चल रही है इसलिए वो भारत को रूस से तेल खरीदने से रोक रहा है।

एक समय अमेरिका चाहता था कि भारत रूस से तेल खरीदता रहे ताकि तेल की कीमतें स्थिर रहें. अब अमेरिका ऐसा नहीं चाहता है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अमेरिका का रवैया बदल गया है जिसके कई कारण हैं। अमेरिका के दीर्घकालिक हित भारत के साथ जुड़े हुए हैं लेकिन वो पाकिस्तान के साथ गलबहियां कर रहा है। अमेरिका के साथ हमारे संबंध तनावपूर्ण हो गए हैं क्योंकि उसने भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है। पीएम मोदी ने अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ पर झुकने की बजाए तन कर खड़े होने का फैसला कर लिया है। जहां मेरी ग्लोबल राजनीति की समझ है, उसके अनुसार भारत और चीन का एक साथ आना संभव नहीं है क्योंकि दोनों देशों के हितों के बीच बहुत ज्यादा टकराव हैं। डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों के कारण भारत और चीन ने मिलकर चलने का फैसला किया है। इससे पूरी दुनिया हतप्रभ है कि यह कैसे हो सकता है। भारत-चीन ने अमेरिका के टैरिफ वॉर के जवाब में ऐसा किया है। ऐसा लगता है कि दोनों देश अपने विवादों को एक किनारे रखकर अमेरिका के ट्रेड वॉर से निपटने की रणनीति बना चुके हैं। टैरिफ के जवाब में भारत ने अपनी घरेलू मांग बढ़ाने के लिए जीएसटी की दरों में बड़ा बदलाव किया है, इसके अलावा लगभग 50 देशों में अमेरिकी निर्यात का विकल्प ढूंढना शुरू कर दिया है। अमेरिका के लिए अब समस्या यह है कि अगर भारत और अमेरिका के बीच सब कुछ सामान्य होने के बाद भी भारत जिस ओर चल पड़ा है, वो वापिस आने वाला नहीं है। ये एक ऐसा तीर है जो अब कमान में वापिस आने वाला नहीं है। एक तरह से अमेरिका ने एक सोते हुए शेर को जगा दिया है और अब उसे इसके नतीजे भुगतने पड़ेंगे।

स्वायत्तता की नीति

अमेरिका और यूरोपीय देशों ने रूस से तेल खरीदने से रोकने के लिए भारत पर जबरदस्त दबाव बनाया हुआ है लेकिन भारत ने इस दबाव में आने से स्पष्ट रूप से इंकार कर दिया है। भारत ने दिखा दिया है कि वो एक सार्वभौमिक राष्ट्र है और अपनी विदेश नीति किसी दूसरे देश के दबाव में नहीं बनाने वाला है। जब डोनाल्ड ट्रंप ने चीन पर टैरिफ लगाया तो उसने भी अमेरिका पर टैरिफ ठोक दिया। डोनाल्ड ट्रंप ने चीन को 90 दिनों की मोहलत दे दी लेकिन भारत को ऐसी कोई मोहलत नहीं दी गई। भारत-अमेरिकी व्यापार को देखते हुए अमेरिका को लगा कि भारत झुक जाएगा लेकिन भारत की प्रतिक्रिया उसकी उम्मीदों के विपरीत आई। चीन के इतिहास और वर्तमान को देखते हुए भारत कभी भी चीन पर भरोसा नहीं कर सकता, इसके बावजूद भारत ने चीन के साथ चलने का फैसला कर लिया है। एससीओ की बैठक के दौरान जिनपिंग, पुतिन और मोदी की एक जुटता देखकर पूरी दुनिया हतप्रभ है।

जिस तरह अमेरिका के लिए चीन बड़ा खतरा है, वैसे ही चीन के लिए भारत और भारत के लिए चीन बड़ा खतरा है। इसके बावजूद रूस पिछले कई सालों से इस कोशिश में लगा हुआ था कि दोनों देश अपने विवादों को अलग रखकर एक साथ आ जाएं। रूस की लाख कोशिशों के बावजूद उसे इस काम में रत्ती भर भी सफलता नहीं मिल रही थी। डोनाल्ड ट्रंप के कारण यह काम भी हो गया है। भारत ने रूस की बात नहीं मानी लेकिन जब उसे ऐसा करना सही लगा तो कर दिया। यूरोपीय देशों के साथ भारत ट्रेड पैक्ट साइन करने वाला है और जापान के साथ संबंध बढ़ा रहा है। इसके अलावा अफ्रीका और एशिया के देशों में अमेरिका का विकल्प तलाश रहा है। भारत ने अमेरिका को समझा दिया है कि तुम्हारे दोस्त और दुश्मन दोनों ही हमारे साथ हैं, अब तुम अपना सोचो। यही कारण है कि ट्रंप के सुर बदल रहे हैं और वो भारत के साथ बातचीत करने की मंशा जाहिर कर रहे हैं। वास्तव में अब ट्रंप भारत के ऊपर लगाए गए टैरिफ को हटाना चाहते हैं लेकिन वो चाहते हैं कि उनका और अमेरिका का सम्मान बचा रहे। वो चाहते हैं कि दुनिया को यह संदेश न जाए कि भारत ने अमेरिका को झुका दिया। दुनिया यह सब समझ रही है, इसलिए हतप्रभ है कि विश्व शक्ति कैसे घुटनों के बल बैठती नजर आ रही है।

आक्रामक नीति

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने बयान दिया है कि अमेरिका ने हम पर टैरिफ इसलिए लगाया है क्योंकि वो सोचते हैं कि हम लोग मजबूत हो गए तो उनका क्या होगा हालांकि उन्होंने अमेरिका का नाम नहीं लिया है। उनकी बात पूरी तरह सच है लेकिन दूसरा सच यह भी है कि अमेरिका अब टैरिफ हटाने के रास्ते निकाल रहा है क्योंकि उसे लगता है कि टैरिफ लगाने से भारत आत्मनिर्भरता के रास्ते पर चलकर और ज्यादा मजबूत हो सकता है। सच बात तो यही है कि अमेरिका भारत को दूसरा चीन बनते हुए नहीं देखना चाहता लेकिन उसके चाहने से कुछ होने वाला नहीं है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने बयान दिया है कि जो भारत के साथ नहीं रहेगा, वो नुकसान उठाएगा। इसके अलावा विदेश मंत्री एस जयशंकर कई बार अमेरिका को आईना दिखा चुके हैं। यूरोपीय देशों को भी रूसी तेल को लेकर वो कई बार सुना चुके हैं।

भारत की विदेश नीति में आक्रामकता बढ़ती जा रही है जिसे पूरी दुनिया देख रही है। जिस तरह से भारत अमेरिका के खिलाफ खड़ा हो गया है, उससे भी दुनिया हतप्रभ है क्योंकि अमेरिका भारत का सबसे बड़ा ट्रेड पार्टनर है। भारत को अमेरिका के साथ ट्रेड से बहुत ज्यादा फायदा है। डोनाल्ड ट्रंप ने यही सोचकर भारत पर टैरिफ लगाया था कि भारत अपने नुकसान को देखते हुए झुक जाएगा लेकिन भारत के बारे में उनका आंकलन गलत साबित हुआ। चीनी सेना के खिलाफ भारत की सेना चार साल तक सीमा पर खड़ी रही, आखिरकार चीन को समझौता करके अपनी सेना हटानी पड़ी। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ जैसी कार्यवाही की है, उससे भी दुनिया हतप्रभ है। इसके अलावा बांग्लादेश की नई सरकार के खिलाफ भी भारत ने आक्रामकता दिखाई है। पिछले कई सालों से चीन भारत की घेराबंदी कर रहा था लेकिन अब भारत भी दक्षिण एशियाई देशों के जरिये चीन की घेराबंदी कर रहा है। तुर्की, अजरबैजान के खिलाफ भी भारत की विदेश नीति में आक्रामकता देखी जा सकती है। दुनिया हतप्रभ है क्योंकि वो नए भारत को देख रही है।

बिजेड़ी ने किसानों के लिए सरकार को चुनौती दी; राजभवन के समक्ष बीजद का विचार

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: किसानों के लिए बीजद की लड़ाई। राज्य में जारी उर्वरक संकट के खिलाफ राजभवन के सामने बीजद का धरना। एक के बाद एक, बीजद के सभी नेता भाजपा सरकार पर जमकर बरसे। अभी तक सभी जिलों में ज़रूरी उर्वरक नहीं पहुँचा है। दहलविकल उर्वरक के लिए किसानों का घर है। मंत्रियों का कहना है कि राज्य में पर्याप्त उर्वरक उपलब्ध है।अगर खाद उपलब्ध है, तो किसानों को क्यों नहीं मिल रही? मंत्री झूठ बोल रहे हैं। राज्य सरकार खाद की आपूर्ति को नियंत्रित करने और कालाबाज़ारी रोकने में पूरी तरह विफल रही है। समस्या का समाधान करने के बजाय, सरकार राज्य के किसान समुदाय को गुमराह कर रही है।

गैंगस्टर एक्ट में वांछित 25,000 रुपये का इनामी अपराधी शिवकुमार उर्फ़ भाबरू पुलिस मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार

कासगंज:- थाना सुन्नगढ़ी और सहावर पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में गैंगस्टर एक्ट में वांछित 25,000 रुपये का इनामी अपराधी शिवकुमार उर्फ़ भाबरू पुलिस मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किया गया। पैर में गोली लगने से घायल हुए आरोपी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने मौके से अवैध तमंचा, कारतूस और बाइक बरामद की। मुठभेड़ थाना सुनगढ़ी क्षेत्र के नगला मोहन-गढ़का मार्ग पर हुई। मामले में विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

वरिष्ठ साहित्यकार लेखक बच्चुलाल दिक्षित गुरु जी जैसे व्यक्तित्व कलमकारो के मार्गदर्शक थे।

सब नतमस्तक है। शरीर के क्षणभंगुर होने पर गुरु जी दिक्षित जी ने जीवन दर्शन को शब्दों के मध्यम से कई बार सृजन किया। उनसे मेल-मुलाकात तो मेरी नहीं हुई पर मुझे मोबाइल के जरिए वार्तालाप पिछले कई सालों से ज़ारी थी। उनका मेरे प्रति बहुत ज्यादा स्नेह व वात्सल्य भाव था। दुख-सुख में वह मेरे मार्ग को प्रशस्त करतें रहते थे। मेरे युवा सुपुत्र की मृत्यु पर उन्होंने कई बार मुझसे फोन के मध्यम से बहुत समझाया दिलासा दिया। गुरु जी सही में मेरे लिए सारथी थे। मंथन साहित्यिक परिवार ग्रुप के मुखिया और शिक्षक दिक्षित गुरु जी ने इसे एक मोती में पिरोकर एकजुटता से चलाया। साहित्यकारों के लिए पीडीएफ व अन्य साहित्य गतिविधियों में वह सभी को जोड़कर रखते थे।उन्होंने बहुत पुनीत कार्य किया पटल पर कोई वाद-विवाद या कोई परेशानी अगर होती थी तो आप ग्रुप के संचालक के रुप में अपनी जिम्मेदारी निभाते थे। आप हमेशा बडे शांतभाव से समस्या को सुलझाने हेतु आगे रहते थे। आदरणीय दिक्षित गुरु जी और उनकी साहित्यिक टीम भावना से मदद करते हुआ आगे बढ़ते थे। आप ने काव्य पाठ व साहित्यक गतिविधियों में पूरे देश के कलमकारो को आप आनलाइन गोष्ठी काव्य रचना का पाठ विभिन्न विषयों पर साक्षात्कार कर साहित्य सुधा को तृप्त करते रहते थे। मुझे भी उनके साथ शिवाजी महाराज के हिंदवी पर आनलाइन कविता पाठ करने का मौका मिला था। आप ने मध्यप्रदेश में मालवा निमाड़ क्षेत्रों में शिक्षा की ज्योति को प्रज्वलित किया था जब आप शिक्षक थे तब धार, मनावर झाबुआ, बड़वानी, खण्डवा, आगर-मालवा नीमच आदि जिलों में आप शिक्षक बन बच्चों को पढ़ाया था। आप के परिवार के सदस्य इन्दौर में भी रहते हैं और वहां यहां आते जाते रहते थे। पर मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। आप की लेखनी के हर एक रंग हम हर रोज दैनिक इन्दौर समाचार अखबार में देखते थे। व्यंग्यात्मक शैली हो समसमाहिक विषय हो यह सृजनात्मकता रचानात्मकता अभिव्यक्ति के जरिए आप हर एक क्षेत्र में उत्कृष्ट व अव्वल थे क्योंकि आप गुरु थें।

देश विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अंतराराष्ट्रीय साप्ताहिक पत्रिका हम हिन्दुस्तानी यू एस ए अमेरिका से प्रकाशित अखबार में भी आप की रचनाएं प्रकाशित होती रहती थी। आप ग्वालियर भिण्ड मुरैना जिले के वरिष्ठ कलमकार थे।

6 जनवरी को डबल-डेकर सेवा का शुभारंभ किया था, अभी तक चलू नहीं हुआ

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: पर्यटक अब डबल डेकर बसों में श्रीक्षेत्र और धौली जैसे ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करेंगे। बस की छत पर सेंट्रल एसी का आनंद लेंगे और खिड़कियों से प्रकृति को निहारने का अनूठा अनुभव प्राप्त करेंगे। राज्य सरकार ने पर्यटकों को अनूठा अनुभव देने के उद्देश्य से डबल डेकर बस शुरू की है।कुछ दिनों से लोग इसका आनंद ले रहे हैं, सेल्फी ले रहे हैं और उन्हें अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर रहे हैं। हालाँकि, पुरी का किराया नियमित बस से 25 रुपये ज़्यादा और शहर के अंदर नियमित एसी बस (एसी) से 10 रुपये ज़्यादा होने के कारण लोगों ने इस डबल डेकर बस से मुँह मोड़ लिया है। नतीजतन, ऐसा लग रहा है कि यात्री इसमें यात्रा कर रहे हैं। इतना ही नहीं, इसके स्टॉपेज की संख्या भी कम हो रही है। इस बीच, खोरधा तक चलने वाली यह डबल डेकर बस बंद कर दी गई है।

मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने 6 जनवरी को इस सेवा का शुभारंभ किया था। उस समय पुरी, खोरधा, कटक रूट पर 5 डबल डेकर बसें चलाने की योजना थी। शुरुआती चरण में, यह बस पुरी और खोरधा रूट के साथ-साथ भुवनेश्वर से दो रूटों पर भी चल रही थी। पहले चरण में, डीडी-2 बस बनविहार से बरमूडा होते हुए खोरधा जाती थी। हालाँकि, चार्जिंग सेंटर की कमी के कारण इसे बंद कर दिया गया है। इसी तरह, हवाई अड्डे से श्रीमंदिर जाने वाली डीडी-1 बस में भी यात्रियों की संख्या अधिक किराए के कारण कम होने लगी है। इसी तरह, शहर के भीतर बीजू पटनायक हवाई अड्डे से गडकन डिपो तक जाने वाली डीडी-1एस में कोई यात्री नहीं हैं। इसी तरह, हाल ही में सीआरयूटी द्वारा एक नई डिजिटल कार्ड सेवा शुरू की गई है। पहले, यात्रियों को 1500 रुपये के मैजिक पास के साथ असीमित यात्रा की सुविधा मिलती थी। हालांकि, अब इसमें 90 ट्रिप की सुविधा है। साधारण पास में भी ट्रिप की संख्या कम है। नतीजतन, यात्री एक्स के प्रति असंतोष व्यक्त कर रहे हैं। इस संबंध में, सीआरयूटी के महाप्रबंधक (संचालन) के अनुसार, खोरधा चार्जिंग सेंटर के लिए जिला कलेक्टर के साथ चर्चा की गई है। बस स्टैंड में जल्द ही एक चार्जिंग सेंटर स्थापित किया जाएगा। इसी तरह, पास का उद्घाटन होने के बाद, हम यात्रियों की राय का अध्ययन कर रहे हैं, उन्होंने कहा।

झारखंड में एक करोड़ का इनामी नक्सली सहित तीन अन्य नक्सलियों का एनकाउंटर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड।

रांची, हजारीबाग जिला अंतर्गत बरकट्ठा के गोरहर पांतितरी गांव में सोमवार की सुबह पुलिस को बड़ी सफलता मिली है. हजारीबाग पुलिस और कोबरा बटालियन के संयुक्त अभियान में 1 करोड़ के इनामी सहित तीन नक्सली ढेर हो गये हैं. भाकपा माओवादी सेंट्रल कमेटी सदस्य 1 करोड़ का इनामी सहदेव उर्फ प्रवेश, सैक सदस्य 25 लाख का इनामी रघुनाथ हेंब्रम उर्फ चंचल और 10 लाख का इनामी जोनल कमांडर बिरसेन गंझू एनकाउंटर में मारे गये. पुलिस मुख्यालय सूत्रों के द्वारा तीनों नक्सलियों के मारे जाने की पुष्टि की गयी है.

इस अभियान में बरही कोबरा के तीन जवानों के घायल होने की खबर है. बरकट्ठा के गोरहर थाना क्षेत्र में यह मुठभेड़ हुई है. सर्च अभियान में तीनों नक्सलियों के शव बरामद कर लिए गये हैं. साथ ही मौके से तीन एके-47 भी बरामद किए गए हैं.शहदेव की पत्नी गांव में मजदुरी करती है .18 साल पहले शहदेव गांव छोड़ चुका है बड़ा बेटा रांची में 12 वीं छात्र है छोटा हजारीबाग में आठवीं कक्षा में पढता है .सहदेव उर्फ प्रवेश उर्फ अमलेश निवासी मंधेरी थाना वष्णुगढ़ जिला हजारीबागक रहने वाला था . रघुनाथ हेमरम उर्फ निर्भय उर्फ वीरसेन ग्राम जरीडीह, थाना डमरी जिला गिरीडीह . वीरेन उर्फ रमखेलावन गंझू, निवासी ग्राम बकचुवा , थाना करेडोरी ,जिला हजारीबाग का रहने वाला था .

उक्त कार्रवाई हजारीबाग एसपी अंजनी अंजन के नेतृत्व में हुई. हजारीबाग पुलिस और कोबरा बटालियन के जवान ने गोरहर थाना क्षेत्र में गुप्त सूचना के आधार पर जंगल में छापामारी की. इसकी भनक लगते ही नक्सलियों ने फायरिंग शुरू कर दी. पुलिस और कोबरा बटालियन के जवानों की जवाबी कार्रवाई में तीनों नक्सली

अलवर भिवाड़ी यूआईटी थाना क्षेत्र में पुलिस ने बैटरी चोरी के मामले में दो युवकों को गिरफ्तार किया है। 10 सितंबर को एक दुकान से बैटरी चोरी की घटना के बाद पुलिस ने कार्रवाई की। आरोपी तावडू निवासी यासिर (19) और राहुल (30) को हिरासत में लिया गया है। पूछताछ में पता चला कि दोनों आरोपी ड्रग्स के आदी थे। वे चोरी की बैटरी को 500-700 रुपए में कबाड़ियों को बेचते थे। इस पैसे से अपनी नशे की लत पूरी करते थे। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और मुखबिरों की सूचना के आधार पर दोनों को पकड़ा।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता

हमारे धर्मग्रंथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

शिवानन्द मिश्रा

हमारे सारे धर्मग्रंथ राक्षसों के वध से भरे पड़े हैं। राक्षस भी कठिन और जटिल वरदानों से सुरक्षित थे। किसी को वरदान प्राप्त था कि न दिन में मरेगा-न रात में, न आदमी से मरेगा-न जानवर से, न घर में मरेगा-न बाहर, न आकाश में मरेगा- न धरती पर। किसी को वरदान था कि वे भगवान भोलेनाथ और विष्णु के संयोग से उत्पन्न पुत्र से ही मरेगा तो किसी को वरदान था कि उसके खून की जितनी बूंदे जमीन पर गिरेगी, उसकी उतनी प्रतिलिपि पैदा हो जाएगी। कोई अपने नाभि में अमृत कलश छुपाए बैठा था लेकिन सभी राक्षसों का वध हुआ। सभी राक्षसों का वध अलग अलग देवताओं ने अलग अलग कालखंड एवं अलग अलग प्रदेशों में किया लेकिन सभी वध में एक चीज कॉमन रही कि किसी भी राक्षस का वध उसका स्पेशल स्टेटस हटाकर अर्थात उसके वरदान को रिजेक्ट कर के नहीं किया गया। तुम इतना उत्पात मचा रहे हो इसीलिए, हम तुम्हारा वरदान कैंसिल कर रहे हैं। देवताओं को उन राक्षसों को निपटाने के लिए उसी वरदान में से रास्ता निकालना पड़ा कि इस वरदान के मौजूद रहते हम इसे कैसे निपटा सकते हैं। अंततः कोशिश करने पर वो रास्ता निकला भी तथा सभी राक्षस निपटाए भी गए। अर्थात परिस्थिति कभी भी अनुकूल होती नहीं है बल्कि पुरुषार्थ से अनुकूल बनाई जाती है। किसी भी एक राक्षस के बारे में सिर्फ कल्पना कर के देखें कि अगर उसके संदर्भ में अनुकूल परिस्थिति का इंतजार किया जाता तो क्या वो अनुकूल परिस्थिति कभी आती ??

उदाहरण के लिए रावण को ही लीजिए. रावण के बारे में भी ये तर्क दिया जा सकता था कि कैसे मारेंगे भला ? उसे तो अनेकों तीर मारे और उसके सर को काट भी दिए लेकिन उसका सर फिर जुड़ जाता है तो इसमें हम क्या करें ? इसके बाद इस नाकामयाबी का सारा ठीकरा रावण को ऐसा वरदान देने वाले ब्रह्मा पर फोड़ दिया जाता कि उन्होंने ही रावण को ऐसा वरदान दे रखा है कि अब उसे मारना असंभव हो चुका है लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

भगवान राम ने उन वरदानों के मौजूद रहते ही रावण का वध किया। यही रेसिस्टमर है। पुरातन काल में हम जिसे वरदान कहते हैं ,आधुनिक काल में हम उसे संविधान द्वारा प्रदत्त स्पेशल स्टेटस कह सकते हैं। आज भी हमें राक्षसों को इन वरदानों (स्पेशल स्टेटस) के मौजूद रहते ही निपटाना होगा। इसके लिए हमें इन्हीं स्पेशल स्टेटस में से लूपहोल खोजकर रास्ता निकालना होगा। ये नहीं लगता कि इनके स्पेशल स्टेटस को हटाया जाएगा। हर युग में एक चीज अवश्य हुआ है राक्षसों का विनाश एवं धर्म की स्थापना। अभी उसी की तैयारी हो रही है। निषादराज, वानर राज सुग्रीव, वीर हनुमान , जामवंत आदि को गले लगाया जा रहा है, माता शबरी को उचित सम्मान दिया जा रहा है। सोचने वाली बात है कि जो रावण पंचवटी में लक्ष्मण के तीर से खींची हुई एक रेखा तक को पार नहीं कर पाया था, भला उसे पंचवटी से ही एक तीर मारकर निपटा देना क्या मुश्किल था। जिस महाभारत को श्रीकृष्ण सुदर्शन चक्र के प्रयोग से महज 5 मिनट में निपटा सकते थे, भला उसके लिए 18 दिन तक युद्ध लड़ने की क्या जरूरत थी लेकिन रणनीति में हर चीज का एक महत्व होता है और जिसके काफी दूरगामी परिणाम होते हैं। इसीलिए कभी भी उतावला नहीं होना चाहिए।

भ्रष्ट, विदेशों में धन अर्जित करने वाला, अनैतिक धन अर्जित करने वाला, विदेशी भूमि पर अपने राष्ट्र की बदनामी, देश में उपद्रव, , तुष्टिकरण करने वाला आदि का विनाश तो निश्चित है तथा यही उनकी नियति है!!

धर्मग्रंथ सिर्फ पुण्य कमाने के उद्देश्य से पढ़ने के लिए नहीं होते बल्कि, हमें ये बताने के लिए लिपिबद्ध है कि आगामी वंशज ये जान सकें कि अगर भविष्य में फिर कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी तो उससे कैसे निपटा जाएगा।

क्या आपकी याददाश्त हो रही है कमजोर? इस विटामिन की हो सकती है कमी, तुरंत जानें ब्रेन से जुड़े ये फैक्ट

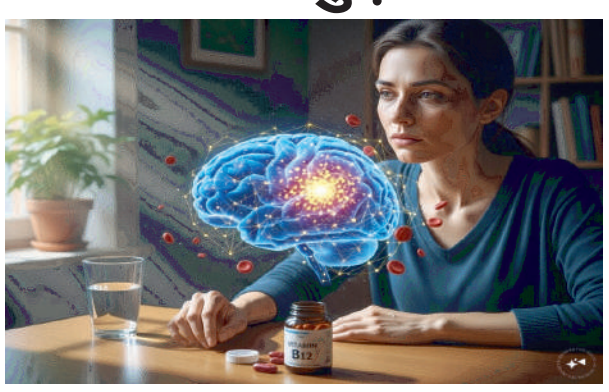

अगर आपकी याददाश्त कमजोर हो रही है, तो इसकी एक अहम वजह विटामिन B12 की कमी हो सकती है। विटामिन B12 दिमाग और नर्वस सिस्टम को मजबूत बनाता है, और इसकी कमी से याददाश्त, फोकस, सोचने-समझने की शक्ति और तंत्रिका तंत्र कमजोर होने लगता है। इसके अलावा, विटामिन D, विटामिन B6, B9, विटामिन C, विटामिन E, आयरन, जिंक, मैग्नीशियम और ओमेगा-3 फैटी एसिड भी याददाश्त व दिमागी ताकत के लिए बहुत जरूरी माने जाते हैं।

ब्रेन से जुड़े जरूरी फैक्ट:

दिमाग को हेल्दी रखने के लिए संतुलित डाइट में ये विटामिन्स और मिनरल्स शामिल होने चाहिए।

विटामिन B12 की कमी शाकाहारी लोगों में ज्यादा आम है, इसलिए दूध, दही, पनीर, अंडा, फोर्टिफाइड सीरियल या डॉक्टर की सलाह से सप्लीमेंट लें।

विटामिन D सूरज की रोशनी, अंडे, मछली और सप्लीमेंट से मिल सकता है।

अच्छी नींद, नियमित व्यायाम, तनाव नियंत्रित करना, पर्याप्त पानी और हेल्दी डाइट (नट्स, बीज, मछली, हरी पत्तेदार सब्जियां, फल) दिमाग के लिए फायदेमंद हैं।

याददाश्त के लिए Omega-3 फैटी एसिड (फिश, अलसी, अखरोट) और विटामिन E (बादाम, बीज, अंकुरित अनाज) भी बहुत अच्छा है।

विटामिन C और खट्टे फल दिमाग की कोशिकाओं को oxidative damage से बचाते हैं।

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (NSIC) का इतिहास और महत्व : डॉ. अंकुर शरण

भारत में लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) को बढ़ावा देने, उन्हें आर्थिक सहयोग प्रदान करने और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कई सरकारी संस्थाएं स्थापित की गईं। इनमें राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (NSIC – National Small Industries Corporation) का विशेष स्थान है। यह संस्था देश के छोटे उद्योगों को तकनीकी, वित्तीय, विपणन तथा प्रशिक्षण से संबंधित सहायता प्रदान करने वाली एक प्रमुख सरकारी उपक्रम है।

स्थापना

NSIC की स्थापना 1955 में भारत सरकार द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य लघु उद्यमों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना, उत्पादन बढ़ाना, विपणन में सहायता करना और तकनीकी सुधार के माध्यम से उन्हें मजबूत बनाना था। उस समय भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी और औद्योगिक क्षेत्र में छोटे उद्यमों की भूमिका को सशक्त बनाने की आवश्यकता महसूस की जा रही थी।

प्रारंभिक उद्देश्य

लघु उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति में सहायता देना

विपणन सहायता प्रदान करना, जिससे छोटे उद्यम अपने उत्पादों को बड़े बाजारों तक पहुंचा सकें

तकनीकी उन्नयन और प्रशिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध कराना

वित्तीय सहायता, ऋण सुविधा और उपकरण किराये पर उपलब्ध कराना

निर्यात को प्रोत्साहन देना

विकास की दिशा

समय के साथ NSIC ने अपने कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाया। 1970 और 1980 के दशक में इसने सरकारी और निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी कर उद्यमों को उत्पाद विकास और विपणन सहायता दी। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के बाद NSIC ने नई चुनौतियों को स्वीकार करते हुए निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं, तकनीकी परामर्श सेवाओं, गुणवत्ता सुधार और स्टार्टअप्स के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना शुरू किया।

महत्वपूर्ण योजनाएं और पहल

कच्चा माल आपूर्ति योजना – लघु उद्योगों को उचित मूल्य पर कच्चे माल की उपलब्धता।

विपणन सहायता योजना – प्रदर्शनियों, मेलों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से बाजार विस्तार।

प्रशिक्षण कार्यक्रम – तकनीकी प्रशिक्षण, प्रबंधकीय कौशल और व्यवसाय योजना बनाने की सहायता।

क्रेडिट समर्थन योजना – बैंकों से ऋण प्राप्त करने में सहायता और वित्तीय परामर्श।

निर्यात संवर्धन योजना – छोटे उद्योगों के उत्पादों को विदेशी बाजार तक पहुंचाने के लिए विशेष सहयोग।

डिजिटल युग में NSIC

आज NSIC ने डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग कर MSME को ई-मार्केटिंग, ऑनलाइन प्रशिक्षण, ई-लर्निंग और सरकारी पोर्टलों के माध्यम से विभिन्न सेवाएं उपलब्ध कराई हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों के साथ मिलकर NSIC छोटे उद्यमों को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान

लाखों छोटे उद्यमों को रोजगार उपलब्ध कराना

स्थानीय उद्योगों को वैश्विक बाजार से जोड़ना

नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना

महिला उद्यमियों, युवाओं और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करना

आत्मनिर्भर भारत अभियान में सहयोग देना

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (NSIC) ने पिछले छह दशकों में भारत के लघु उद्योगों को सशक्त बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। यह न केवल उद्योगों को आर्थिक सहायता देता है, बल्कि उन्हें तकनीकी, प्रबंधकीय और विपणन सहयोग प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य करता है। आज के प्रतिस्पर्धी वैश्विक परिदृश्य में NSIC का योगदान और भी महत्वपूर्ण हो गया है। देश की आर्थिक प्रगति में छोटे उद्यमों का योगदान जितना बढ़ेगा, उतना ही भारत एक मजबूत, स्वावलंबी और समृद्ध राष्ट्र के रूप में उभर सकेगा।

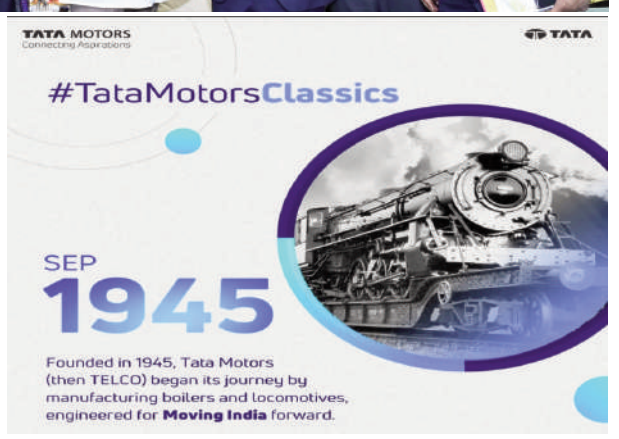

हाइड्रोजन इंजन एवं इलेक्ट्रानिक ट्रक निर्माण कार्य प्रगति की टाटा मोटर्स ने मुख्यमंत्री को दी जानकारी

टाटा ने भाप इंजन भी बनाये, आज विद्युतीकृत वाहन ईकाई के अघोतन स्थिति पर हुई चर्चा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, हेमन्त सोरेन से आज उनके आवासीय कार्यालय में टाटा मोटर्स लि० के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस अवसर पर हेमन्त सोरेन को प्रतिनिधिमंडल में शामिल अधिकारियों ने टाटा मोटर्स लि० द्वारा हाइड्रोजन इंजन एवं इलेक्ट्रिक ट्रक निर्माण के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों से संबंधित कार्य प्रगति की जानकारी दी तथा इलेक्ट्रिक व्हीकल सेगमेंट से संबंधित कार्य योजना एवं अद्यतन गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया। भारत में व्यावसायिक वाहन बनाने वाली सबसे बड़ी कपनी, जो कभी लोकोमोटिव इंजन भी बनती थी उसका पुराना नाम टेल्को यानी टाटा इंजिनियरिंग एडं लोकमेटिव रहा ।जिसकी जन्म 1945 में जमशेदपुर में हुआ था ।टाटा ने 60 के दशक में भाप एवं डीजल रेल इंजन भी बनाये, बाद में सड़क पर दौड़ने वाली वाहन पर केंद्रित हो गयी । अब दुनिया की नवनीत इंधन से उर्जा पैदा करने वाली तकनीक पर केनद्रित हो रही है । मौके पर मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, ग्लोबल हेड-गवर्नमेंट पब्लिक अफेयर्स टाटा मोटर्स लि० सुशांत चंद्रकांत नाईक, वाइस प्रेसिडेंट, ऑपरेशन, विशाल बादशाह, प्लांट हेड टाटा कमिंस अनितेश मोंगा, गवर्नमेंट अफेयर्स टीम के कनिष्क कुमार, सिद्धार्थ बक्शी, जोकिम सलताना, फाइनेंस टीम के पंकज पटवारी सहित अन्य उपस्थित रहे।

ऑल इंडिया थल सैनिक कैंप (AITSC) सीनियर डिवीजन चैम्पियनशिप लगातार दूसरे साल जीतकर रचा इतिहास

अमृतसर, 15 सितंबर (साहिल बेरी)

एन.सी.सी. के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और चंडीगढ़ निदेशालय ने दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित ऑल इंडिया थल सैनिक कैंप (AITSC) सीनियर डिवीजन चैम्पियनशिप को लगातार दूसरे वर्ष जीतकर इतिहास रच दिया है। 2024 की ऐतिहासिक जीत के बाद, निदेशालय ने 2025 में एक बार फिर अपना दबदबा साबित किया है और लगातार चैम्पियनशिप जीतकर एक नया रिकॉर्ड कायम किया है।

पीएचएचपी एंड सी निदेशालय के कैडेटों ने अनुशासन, नेतृत्व, फील्ड क्राफ्ट और बैटल क्राफ्ट के कठिन प्रदर्शन में देशभर के 16 मज़बूत एन.सी.सी. निदेशालयों को पछाड़ दिया।

अमृतसर ग्रुप एन.सी.सी. द्वारा प्रदान की गई निरंतर प्रशिक्षण और मार्गदर्शन का यह चमकदार प्रमाण है कि कैडेटों ने अभूतपूर्व 16 स्वर्ण पदक और 8 रजत पदक हासिल किए। एन.सी.सी. निदेशालय पीएचएचपी एंड सी के अतिरिक्त महानिदेशक मेजर जनरल जे.एस. चीमा ने विजेता कैडेटों को नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया और ब्रिगेडियर के.एस. बावा, कर्नल ए.के. शर्मा, अधिकारियों, प्रशिक्षकों और कैडेटों की प्रतिबद्धता की सराहना की, जिनकी सामंजस्य, कड़ी मेहनत और सेवा भावना ने निदेशालय को एक बार फिर राष्ट्रीय गौरव तक पहुँचाया।

मेजर जनरल जे.एस. चीमा ने कहा, "इस मील के पत्थर को हासिल करने में कैडेटों की क्षमताओं को आकार देने और निखारने में अमृतसर ग्रुप का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।"

इस लगातार ऐतिहासिक चैम्पियनशिप के साथ, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और चंडीगढ़ निदेशालय ने सैन्य अनुशासन, सेवा और नेतृत्व में राष्ट्रीय मानकों के मिसाल के तौर पर अपनी स्थिति को और मजबूत कर लिया है।

कल से पूरे पंजाब में धान की सरकारी खरीद शुरू होने जा रही है। इसको ध्यान में रखते हुए ज़िले में खरीद प्रबंधों की समीक्षा करने के लिए डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने ज़िला फ़ूड सप्लाई कंट्रोलर, ज़िला मंडी अधिकारी और धान की खरीद करने वाली विभिन्न एजेंसियों के अधिकारियों के साथ विस्तृत बैठक की।

अमृतसर 16 सितंबर (साहिल बेरी)

इस मौके पर उन्होंने बताया कि ज़िले में धान की खरीद के लिए 48 मंडियां नोटिफाई की गई हैं। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा धान का सरकारी रेट 2,389 रुपये प्रति क्विंटल तय किया गया है और इसके लिए धान में नमी की मात्रा 17 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे मंडी में केवल सूखा धान ही लेकर आएं, ताकि मंडी में खरीद के लिए इंतज़ार न करना पड़े। उन्होंने यह भी कहा कि पंजाब सरकार किसानों द्वारा पैदा किए गए हर एक दाने को खरीदेगी, इसलिए किसी तरह की जल्दबाज़ी की ज़रूरत नहीं है। किसान अपनी फसल को अच्छी तरह सुखाकर ही कटाई करें, ताकि सरकारी खरीद एजेंसियां बिना किसी रुकावट के खरीद जारी रख सकें।

इस अवसर पर अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता ने बताया कि ज़िले में खरीद के लिए बारदाना ज़रूरत अनुसार पहुँच चुका है, मज़दूरी और ट्रांसपोर्टेशन के टेंडर भी पूरे कर लिए गए हैं। इस तरह सभी प्रबंध पूरे कर लिए गए हैं और हम कल से धान की खरीद के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने ज़िला मंडी अधिकारी श्री अमनदीप सिंह को निर्देश दिए कि मंडी गेट पर ही धान की नमी की जांच की जाए, ताकि केवल सूखा धान ही मंडी के अंदर जा सके। उन्होंने कहा कि नमी को नियंत्रित करने के लिए रात के समय कम्बाइन हार्वेस्टर चलाने पर पूरी तरह पाबंदी लगाई गई है और इसे सख्ती से लागू किया जाएगा।

इस मौके पर ज़िला खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति कंट्रोलर श्री अमनजीत सिंह ने बताया कि मंडियों का आवंटन खरीद एजेंसियों को कर दिया गया है। उन्होंने डिप्टी कमिश्नर को भरोसा दिलाया कि धान की खरीद में किसानों, आढ़तियों या किसी अन्य वर्ग को किसी प्रकार की समस्या नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने बताया कि किसानों, आढ़तियों, कम्बाइन ऑपरेटरों और खरीद एजेंसियों के साथ बैठकें कर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

लौह नगरी दुर्गा पूजा को लेकर जिला दण्डाधिकारी सत्यार्थी ने की शान्ति समिति की बैठक

पूजा के दौरान पूर्वी सिंहभूम में महिलाओं की सुरक्षा मुकम्मल हो: एस एस पी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, जमशेदपुर के टाउन हॉल, सिदगोड़ा में जिला दण्डाधिकारी- सह- उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी एवं वरीय पुलिस अधीक्षक पीयूष पांडेय द्वारा शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में दुर्गापूजा के आयोजन को लेकर केन्द्रीय शांति समिति के साथ बैठक की गई। बैठक में विधि व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, भीड़ को व्यवस्थित करने, सुरक्षा संबंधी अन्य महत्वपूर्ण बिदुओं पर चर्चा की गई। बैठक में रूरल एसपी ऋषभ गर्ग, एडीएम लॉ एंड ऑर्डर भगीरथ प्रसाद समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी मौजूद रहे।

बैठक में केंद्रीय शांति समिति के सदस्यों ने विभिन्न पूजा समितियों से संबंधी अपनी बातें रखी जिसमें साफ-सफाई, पेयजल की व्यवस्था, निर्बाध बिजली आपूर्ति, महिला आरक्षियों की प्रतिनियुक्ति, ट्रैफिक की सुचारु व्यवस्था, सड़क मरम्मतीकरण, ड्रॉप गेट, विसर्जन घाट पर आवश्यक व्यवस्था आदि शामिल थे। जिला प्रशासन की ओर से आश्वस्त किया गया कि थानावार आयोजित शांति समिति की बैठक के फीडबैक पर कार्य किया जा रहा है, ससमय व्यवस्थाओं को दुरुस्त कर लिया जाएगा।

उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा त्योहार में सभी आवश्यक सुविधाएं सुचारू रूप से संचालित हो इसकी लगातार समीक्षा की जा रही है, सुरक्षा व्यवस्था, विधि व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के प्रति कार्य किए जा रहे हैं जिसमे आप सभी से सहयोग अपेक्षित है। उपायुक्त ने कहा कि श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो इसके लिए जिला प्रशासन सजगता से कार्य कर रही है। उन्होंने तय विसर्जन रूट का इस्तेमाल करने की बात कही ।स्थानीय थाना के साथ समन्वय बनाते हुए विसर्जन घाट जाएं। सभी पंडालों में जनरेटर की व्यवस्था और माइकिंग सिस्टम दुरुस्त रखें, पंडालों के बाहर पार्किंग स्थल पूर्व से ही चिन्हित हो। किसी के साथ भी किसी तरह का दुर्व्यवहार न हो। सीसीटीवी में रिकॉर्डिंग हो रहा है या नहीं इसे पहले से जांच लें ।

वरीय पुलिस अधीक्षक ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा प्राथमिकता है, पंडालों में महिला वॉलिंटियर्स भी रखा जाए। सभी पंडाल समिति विद्युत विभाग और अग्निशमन विभाग से एनओसी जरूर लें, यह आम जनों की सुरक्षा के लिए अति आवश्यक है। सोशल मीडिया को लेकर उन्होंने कहा कि असामाजिक तत्व सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने के उद्देश्य से गलत तथ्यों को फारवर्ड या शेयर करते हैं, सभी लोगों को इसको लेकर सतर्क रहने की आवश्यकता है। किसी भी तरह के फेक न्यूज़ को फॉरवर्ड नहीं करें तथा थाना, सीओ, बीडीओ या प्रशासन के वरीय पदाधिकारी से बात कर उसके सत्यता की जांच कराएं ।

बैठक में सभी पूजा समितियों से अपील किया गया कि विधि व्यवस्था संधारण के निमित्त पंडाल की क्षमता से अधिक लोग पंडाल के अंदर न हों, पंडालों में प्रवेश-निकास द्वारा अलग-अलग हो। सीसीटीवी पंडाल और मेला परिसर में लगाये जाएं तथा आयोजन समिति का एक सदस्य और एक कांस्टेबल द्वारा लगातार वीडियो की मॉनिटरिंग की जाए। समिति के द्वारा वॉलंटियर का लिस्ट थाना को उपलब्ध करवाया जाए और थाना प्रभारी द्वारा वॉलंटियर की ब्रीफिंग किया जाए। खोया पाया अनाउंस करने की व्यवस्था हो, पंडालों में फर्स्ट एड बॉक्स हमेशा उपलब्ध रखा जाए ।

इस मौके पर एसओआर राहुल आनंद, जिला आपूर्ति पदाधिकारी जुल्फीकार अंसारी, एनडीसी डेविड बलिहार, अपर नगर आयुक्त जेएनएसी कृष्ण कुमार, डीटीओ धनंजय, अनुमंडल पदाधिकारी धालभूम चंद्रजीत सिंह, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी पंचानन उरांव, सभी बीडीओ, सीओ, डीएसपी, थाना प्रभारी व अन्य संबंधित उपस्थित रहे।

हिन्दी दिवस पर सम्मानित हुए प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन। गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी, वृन्दावन के ऑडीटोरियम में पं. हरप्रसाद पाठक साहित्य समिति, मथुरा के द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित 27 वें अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह में नगर के प्रख्यात साहित्यकार, अध्यात्मविद् एवं पत्रकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी को उनके द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर की गई हिन्दी सेवा के लिए सम्मानित किया गया ।उन्हें यह सम्मान चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के पूर्व उप-कुलपति व प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री डॉ. रवीन्द्र कुमार, पं. हरप्रसाद पाठक साहित्य समिति, मथुरा के संस्थापक-सचिव डॉ. दिनेश पाठक ररशशिर एवं वृन्दावन शोध संस्थान के निदेशक डॉ. राजीव द्विवेदी आदि ने संयुक्त रूप से श्रीराधा-कृष्ण का चित्रपट, पटुका-प्रसादी-माला व सत्साहित्य आदि भेंट करके दिया।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुधा गोयल, ब्रज संस्कृति विशेषज्ञ डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा, गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी के निदेशक दिनेश खन्ना व समन्वयक चन्द्रप्रताप सिंह सिकरवार, प्रख्यात साहित्यकार व प्राचार्य डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय, वात्सल्य ग्राम के प्रवक्ता डॉ. उमाशंकर राही, डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी, भागवताचार्य मोहिनी कृष्ण दासी, सुनील शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अनीता चौधरी, श्रीमती अनुपमा पाठक, श्रीमती शशि पाठक, डॉ. नीतू गोस्वामी आदि के अलावा देश के विभिन्न प्रांतों के 50 से भी अधिक साहित्यकार व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।संचालन प्रमुख शिक्षाविद् व साहित्यकार जितेन्द्र विमल ने किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023